साधु आत्मा सिंह 'रेण' कृत

श्री हंस चमत्कार

हिन्दी अनुवाद

अनुवादक

प्रीति अमृत अनेजा

(७ जून २०१७) श्री हंस चमत्कार

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटी समप्रभः। निर्विघ्न कुरु मे देव शुभ कार्येषु सर्वदा॥

हे हाथी के जैसे विशालकाय जिसका तेज सूर्य की सहस्र किरणों के समान है, बिना विघ्न के मेरा कार्य पूर्ण हो और सदा ही मेरे लिए शुभ हो ऐसी कामना करती हूँ।

श्री हंस चमत्कार

हिन्दी अनुवाद

गुरु मूरति आगे खड़ी, दुतिया भेद कछू नाहिं। उन्ही कूं परनाम करि, सकल तिमिर मिटी जाहिं।

गुरु बिन ज्ञान न उपजै, गुरु बिन मिलै न मोष। गुरु बिन लखै न सत्य को, गुरु बिन मिटै न दोष।

प्रीति अमृत अनेजा

श्री ओम दरबार नन्दाचौर

जिला होशियारपुर, पंजाब

सर्वाधिकार सुरक्षित।

वैधानिक चेतावनी : इस ग्रंथ के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। इसके किसी भी अंश को, किसी भी रूप में प्रतिकृति करना, या किसी भी सापन फोटोकापी एवम रिकार्डिंग सहित इलैक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवम पुर्नप्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में, पुनकृत्पावित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता। किसी भी प्रकार के माध्यम द्वारा प्रयोग या किसी अन्य आपा में अनुवाद करना धर्म अर्थ वैरीटेबल ट्रस्ट, श्री ओम दरबार (रजि०), नन्दाचीर धाम, की लिखित अनुमति के बिना मना है।

श्री ओम दरबार नन्दाचौर द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित।

'श्री हंस चमत्कार' साधु आत्मा सिंह 'रेण' कृत पंजाबी ग्रंथ है, मैंने गुरुदेव आज्ञानुसार संगत कल्याण हेतु इसका केवल हिन्दी अनुवाद किया है।

मूल्य : १५००

प्रीति अमृत अनेजा

आशीर्वाद

उस ईश्वरीय शक्ति द्वारा रचित हर शै का, हर कार्य का समय निश्चित होता है और बात जब ईश्वर भक्ति, स्तुति व वन्दन करती किसी विशेष कृति की हो, तो आरम्भ से अन्त तक पहुंचाने की प्रक्रिया में पवित्र महान शक्तियाँ स्वयं ही जुर्रिया ढूँढ लेती हैं।

इक असें से साधु आत्मा सिंह 'रेण' कृत पंजाबी ग्रंथ "श्री हंस चमत्कार", जो कि जीर्णशीर्ण अवस्था में दरबार में विद्यमान था, मेरी हार्दिक अभिलाषा थी कि इस अति पौराणिक ग्रन्थ को नवीनतम स्वरूप प्रदान किया जा सके जिससे कि श्रद्धालु भक्तजन लाभ उठा सकें।

गुरुओं द्वारा किए आलौकिक कौतक, चमत्कारों से वर्णित इस इतिहास की धरोहर को आने वाली पीढ़ियों के लिए सम्भलना अति आवश्यक तो था ही, साथ ही एक अति महत्वपूर्ण पुनीत कार्य भी। निश्चित रूप से ऐसे महान कार्यों की पूर्ति निर्धारित व्यक्तियों द्वारा ही सम्पन्न होती है। ग्रंथ के नवीनीकरण की मेरी हार्दिक अभिलाषा को सम्पूर्णता प्रदान करने हेतु हमारी बेटी 'प्रीति अनेजा' को समस्त गुरुओं ने माध्यम रूप में समक्ष किया। गुरुदेवों की प्रेरणास्वरूप व आशीर्वाद कृपा स्वरूप ही बेटी प्रीति ने इस अति पौराणिक पंजाबी ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद किया है। आज आप सभी के समक्ष यह ग्रन्थ सदकल्याण हेतु अपने नव स्वरूप में प्रस्तुत है। दो वर्ष के निरन्तर, अथक प्रयास फलस्वरूप ही यह अनुवाद कार्य पूर्ण हो सका है।

इस पावन कार्य हेतु बेटी प्रीति के सम्पूर्ण परिवार को बधाई। प्रीति के साथ साथ उन सभी को आशीर्वाद जिनके सहयोग से यह कार्य सम्पूर्ण हो सका।

इस ग्रन्थ को पढ़ने वाले, सुनने वाले हर श्रद्धालु को बापू जी अपने आर्शीवाद से नवाजते रहें, हर प्रकार के सुख प्रदान करें, ऐसी मेरी अरदास है समस्त गुरुचरणों मे विनम्र प्रार्थना है।

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद्युः खभाग्भवेत्।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

शुभाशीष

(हर भगवान)

श्री ओम दरबार नन्दा चौर धाम

श्री हंस चमत्कार

हिन्दी अनुवाद

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्मा तस्मै श्रीगुरवे नमः।

मेरी हर कृति गुरुदेव श्रीचरणों में समर्पित ।

ब्रह्मविलीन, ब्रह्मऋषि

ओम बापू दयाकिशन जी(सहारनपुर वाले)

एवम्

परमआराध्य, प्रतिपल स्मरणीय

बापू हरभगवान जी

(वर्तमान गद्दीनशीन, नंदाचौर धाम) को सहृदय श्रद्धापूर्ण समर्पित ।

प्रीति अमृत अनेजा

मेरी प्रार्थना

तुलसीदास कृत रामायण के एक प्रसंग में हनुमान जी, श्रीराम के पूर्व आगमन की अनुभूति को जब अपने स्वप्न की पुनरावृत्ति में देखते हैं, तब जिज्ञासापूर्ण उस स्वप्न के रहस्य के विषय में, अपने गुरु सूर्यभगवान से पूछते हैं, तब सूर्य भगवान उन्हें उत्तर देते हैं कि "हर इंसान के जीवन का कोई ना कोई उद्देश्य निहित होता है, और जब उस उद्देश्य के पूर्ण होने का वक्त होता है, तब उसके समीप होने की अनुभूतियां स्वतः होने लगती हैं। किन्तु समय आने पर उसकी पहचान होनी आवश्यक है, जिससे कि हम उसकी पूर्ति हेतु अपना पूर्ण योगदान अर्पित कर सकें।"

वस्तुतः इस किंवदिति की मेरे मानस पटल पर गहरी छाप है। मैं इस तथ्य की गहराई से सहमत होते हुए इतना ज़रूर कहूँगी कि स्वप्न हों या जीवन के उद्देश्य, लक्ष्य कुछ भी हो उनका हमारे जीवन से गहरा सम्बंध होता है। कुछ पूर्व जन्म के संचित कर्मों के फलस्वरूप एवं वर्तमान जीवन में गुरुओं के आशीर्वाद के योग एवम् संयोग से हमें कुछ सत्कार्यों हेतु चुना जाता है, फिर मार्ग दर्शन मिलता है कि हम कुछ ऐसा करें कि जिससे न केवल स्वकल्याण हो अपितु जनकल्याण भी सम्भव हो सके।

अतः मैं खुद को सौभाग्यशाली मानते हुए, बापूजी का शुक्रिया अदा करते हुए आप सभी को एक अनूठे, सत्कार्य की अनुभूति से अवगत करवाना चाहती हूँ।

"श्री हंस चमत्कार" साधु आत्मा सिंह 'रेण' कृत पंजाबी ग्रन्थ है, जिसका हिन्दी भाषा में अनुवाबित रूप आप सभी के समक्ष रखने का परमसौभाग्य जो मुझे मिला है, उसका विवरण के रही हूँ। सितम्बर १९३७ ई० में रचित इस महाकृति में "श्री परमहंस बाबा ठाकुर जी महाराज जी" की स्तुति एवम् उनके शिष्यगण महापुरुषों के जीवन का वर्णन है। क्योंकि 'रेण' भाषा की अनगिनत विधाओं के पूर्ण रूप से सिद्धस्त थे, अतः उनकी इस कृति में पंजाबी सहित उर्दू, फारसी, अरबी, संस्कृत, बागड़ी, अग्रेज़ी आदि का समावेश है। छन्द, सवैये, दोहरे आदि का संतुलित प्रयोग इस महाकाव्य की एक और महत्वपूर्ण विशेषता है।

मैंने अपने इष्टगुरुदेव **बापू हरभगवान जी, वर्तमान गद्दीनशीन 'नन्दाचौर' धाम**, आज्ञानुसार स्न्स ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद किया है। इस अत्यन्त कठिन कार्य को करने का सामर्थ्य एवम ज्ञान नहीं है मुझमें, अतः निःसन्देह यह त्रुटिपूर्ण होगा, मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

बापूजी के आर्शीवाद से मैंने इस ग्रन्थ के अनुवाद कार्य हेतु सर्वप्रथम गुरुमुखी यानी पंजाबी पढ़नी लिखनी सीखी, तथा करीब दो वर्ष के अथक परिश्रम उपरान्त अनुवाद कार्य पूर्ण हो सका। मैंने अपनी ओर से पूर्ण प्रयत्न किया है कि 'रेण' कृत इस ग्रन्थ में उपयुक्त शब्दों की स्वभाविकता बनी रहे। उदाहरण सतिगुरु या सतगुरु, तरा अथवा त्र का फर्क, कहीं कवियोवाच, कहीं कविओवाच तो कहीं कवि उवाच लिखा गया है, अतः मैंने इन शब्दों के वास्तविक रूप का ही इस्तेमाल किया है।

जब इस कार्य को प्रारम्भ किया, तब इस ग्रन्थ के कुछ पृष्ठ जीर्ण-शीर्ण अवस्था में, यानी अधूरे थे, लेकिन जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि कुछ कार्यों की पूर्ति के लिए हमारे सत्कर्म कार्यपालन हेतु स्वयं अपना रास्ता खोज लेते हैं, ऐसे ही ग्रन्थ की पूर्ति हेतु मैंने स्वयं प्रयत्न कर शब्दों का पुनरावलोकन कर, पृष्ठों को फिर से जोड़ा एवम गुरुवेव आज्ञा से वाक्यपूर्ति की।

पिछले सौ साल से भी अधिक प्राचीन इस ग्रन्थ की महत्ता के सभी अनिवार्य अंगों को समेटे रखने के भाव से विशेष पन्नों का चयन कर प्रयोग में लाया गया है जिससे कि पाठक इसे पढ़ते हुए स्वयं को रूस ग्रन्थ की समय कंक्राओं में विचरता हुआ पाए। क्योंकि छायाचित्र भी पुरातनता की अपनी ही दास्तां कह रहे थे, अतः इन्हें भी पुनः चित्रांकित करने का प्रयत्न किया गया है।

अति प्राचीन इस ग्रन्थ से एक बार फिर से यह स्पष्ट हो जाता है कि ईश्वरीय प्रदत्त महान सिद्धियों द्वारा श्रद्धालुओं को चमत्कृत करना सन्तों-महात्माओं की विशिष्टता रही है और आज भी क्रमशः है। जहाँ सदियों पहले भावविभोर 'रेण' ने गुरु कृपा द्वारा लाभान्वित हो इस महान ग्रन्थ की रचना की, वहीं सदियों बाद गुरुसानिध्य में बैठ अविश्वसनिय अनुभवों की साक्षी 'प्रीति' द्वारा इसका अनुवाद हो रहा है। समय बदलता रहा, साथ ही गद्दीनशीन गुरुओं का स्वरूप भी। कभी ठाकुरजी, कभी ज्वालासिंह जी तो कभी ओम बापू

नारायणदत्त जी जैसे अन्य अनगिनत रूप धार कर गुरु आते रहे एवम जनकल्याण का सिलसिला निरन्तर चलता रहा और आज भी वर्तमान गद्दीनशीन 'बापू हरभगवान जी' द्वारा चल रहा है।

श्रद्धालु पाठकगणों को अपनी प्राचीन महत्ता के धरातल से जोड़कर रखने के उद्देश्य से ही गुरुदेव ने मुझे यह अनुवाद कार्य सौंपा। मेरा परमसौभाग्य कि गुरुमुख को गुरु द्वारा प्रदत्त इस ग्रन्थ से जोड़ने का मैं एकमात्र निमित्त बनी।

किन्तु इस ग्रन्थ के आगाज़ से अंजाम तक के सफर में मनुष्यमन के स्वाभाविक रूप से त्रुटियाँ होने की गुंजाइश बनी ही रहती है, अतः मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

सर्वप्रथम गुरुदेव आपजी से प्रार्थना है क्योंकि आप मेरी अज्ञानता एवम असामर्थ्य से भलिभांति परिचित हैं, अतः इस ग्रन्थ के अनुवाद कार्य में व्याप्त सभी खामियाँ हेतु मुझे क्षमादान दें।

पाठकजनों से भी अनुरोध है कि तर्क-वितर्क, उचित-अनुचित, सही-गुल्ल के कठिन मापदण्ड से आंकलन ना करें अपितु केवल भाव ग्रहण करने का प्रयत्न करें।

क्षमाप्रार्थी अनुवादक

प्रीति अमृत अनेजा

'गुरु नामावली'

वास्तव में 'सब्रग्रंथ' इष्टदेव गुरुदेव की स्तुति एवम वंदन करने का माध्यम ही होते हैं, जिस द्वारा हमें अपने हृदय में संचित श्रद्धाभाव, उनके श्री चरणकमलों में अर्पित करने का अवसर मिलता है। रेण कृत 'श्री हंस चमत्कार' एक अमूल्य निधि है, जिसकी रुहानी शक्ति के प्रभाव फलस्वरूप ही दासी द्वारा 'गुरु नामावली' का स्वतः सूजन हो पाया है, जिसमें गुरु आराधना हेतु १०८ आलौकिक नाम निहित है। मेरा विश्वास है कि सग्रंथ के आरम्भ में इस नामावली का उच्चारण पाठक के हृदय को निर्मलता एवम शीतलता प्रदान करेगा और ईश्वर के प्रति अगाध प्रेम एवम निष्ठा को भी उत्पन्न करेगा, जो कि हमारे जीवन का अभिष्ट लक्ष्य है। आरम्भ के साथ साथ 'श्री हंस चमत्कार' पाठ के अन्त में पुनः 'गुरु नामावली' सिमरण द्वारा सम्पूर्ण पाठ का फल प्राप्त किया जा सकता है।

श्री १०८ नाम माला

दिव्यस्वरूप शक्तिमान, ब्रह्मस्वरूप बलवान हैं, 'प्रीति' हृदय में बसते गुरुदेव के पूरे १०८ नाम हैं।

गुरुदेव के पावन श्री चरणों में करबद्ध शीश झुकाऊँ, कल्याण हेतू भक्तों को आज १०८ नाम माला में बतलाऊँ।

इस १०८ नाम माला को १०८ बार गुरु सन्मुख जो गाएगा, विश्वास 'प्रीति' का दृढ़ है भक्तों, जो माँगेगा सो पाएगा।

इस १०८ नाम महिमा की एक माला जो तू नित्य करे, गुरुदेव मेरे, सुख-सम्पत्ति से सदा तेरे भण्डारे भरे।

१०८ नाम माला प्रारम्भ

गुरुदेव मेरे तुम पालनहार तारणहारः सर्वलोक के मालिक हो। दयालु तुम, कृपालु तुम, सन्तसहाई व सदा कल्याणकारी हो ॥

दयासागर दीननहितकारी दीनदयाल कृपासिन्धु सुखकर्ता हो । नवनाथ १३ नारायण प्रतिपालक १५ सृष्टिकर्ता १६ दुःखहर्ता १७ हो ॥

सर्वहितैषी १८ समदर्शी १९ मायातीत २० त्रिगुणातीत २१ मानुष जन्म संवारक २२ हो । रोगनिवारक २३ चिन्ता निवारक २४ अहंकार निवारक २५ व भक्तन कष्ट निवारक २६ हो ॥

दिव्यस्वरूप २७ देवस्वरूप २८ प्रकाशस्वरूप २९ तुम ज्योति स्वरूप ३० हो। ब्रह्मस्वरूप ३१ ओमकार स्वरूप ३२ गुरुदेव तुम शिव सत्य सुन्दर ३३ रूप हो ॥

महिमामयी ३४ ईष्टदेव ३५ मेरे त्रिलोकीनाथ ३६ त्रिकालज्ञ ३७ हो । भक्तवत्सल ३८ पथप्रदर्शक ३९ शहनशाह ४० सर्वज्ञ ४१ हो ॥

महायोगी ४२ गुरुदेव मेरे तुम निरंजन ४३ निराकार४४, तेजस्वी४५ हो । आत्मज्ञाती ४६
अखण्ड४७ आलौकिक ७८ अकालपुरुष ४९ ओजस्वी ५० हो ॥

गुनाह मेरे बक्शते रहना, कि तुम गुरुदेव बक्शन हार५१ हो । जगत्रस्वामी जन्मदाता जगत् साक्षी
तुम जगत्आधार हो ॥

दुःख दूर करो गुरुदेव मेरे, कि तुम पाप-विमोचन हार५६ हो। संकटहरण५७ मंगलकरण ५८ एवम
सृष्टि के सिरजनहार ५९ हो ॥

शरण में "प्रीति" आ गिरी, दया करो तुम करुणानिधान ६० हो । सुख-समृद्धि देने वाले अब तो
मुझ पर तुम मेहरबान हो ॥

झोली मेरी भरदो गुरुदेव, जानती हूँ वरदान दाता ६२ हो। रिद्धि-सिद्धि सुख-समृद्धि देने वाले तुम ही
मेहरदाता हो ॥

बल दो बलवान हो, शक्ति दो शक्तिमान ६६ हो । दया करो दयावान ६७ हो, यश व कीर्ति दो
कीर्तिकवान ६८ हो ॥

तेरे दर से हर खुशी है मिलती, तुम कर्ता धर्ता हर्ता ६९ हो । सुख-समृद्धि-यश-सम्मान बख्शो, सदा
कल्याणकर्ता ७० हो ॥

मातातुल्य ७१ पितातुल्य ७२ सखा तुल्य ७३ मेरे तुम रक्षक हो। ज्ञानेश्वर ७५ परमपिता ७६
परमेश्वर ७० तुम्हीं संरक्षक हो ।

करबद्ध शीश झुका कर प्रणाम करूँ मैं परमानन्द अवतार हो । कृपासिन्धु ८० दीनबन्धु ८१ प्रेमबन्धु
८२ ईश्वरावतार ८३ हो ।

मेरे गुरुदेव, शरण में "प्रीति" आई हूँ, मेरे जीवन के तुम सरताज हो । कृपा करो, दया करो, मेहर
करो, मनोकामना पूरी मेरी आज हो ॥

प्रकाशमय ८५ ज्योतिर्मय गुरुदेव, श्रद्धालु भक्तों के दूर सब अंधकार हो। पावन, पवित्र, उज्ज्वल हो जीवन सबका, निवेदन 'प्रीति' का ये स्वीकार हो ॥

विघ्नहर्ता गुरुदेव साथ रहते तुम, और सदा सहायक ८८ हो। भव सागर से पार कराते तुम, और मुक्तिदायक ८९ हो ॥

महन्त १० सन्त ११ सदा सहाई सन्त सुजान २३ हो । अन्तर्यामी २४ आत्मज्ञानी सभी भक्तों का मान हो ॥

ईश्वर ९६ तुम्हीं, भगवान ९७ तुम्ही, परमात्मा ९८ प्रभु ९९ व ईश १०० हो । ब्रह्मा १०१ तुम्हीं, विष्णु १०२ तुम्ही, महेश १०३ तुम्ही, तुम्ही जगदीश १०४ हो ॥

तेरे नाम अनेक हैं गुरुदेव, कौन पार पा सकता है। बिगड़े भाग बनाने को भक्त 'नंदाचौर धाम' आ सकता है ॥

इच्छापूरक १०५ कामनापूरक १०६ सर्वव्यापक १०७ करुणानिधान १०८ हम फूलों के तुम माली हो । खाली दामन जो एक बार तेरे दर पर लाया, जाने देते उसे न कभी खाली हो ॥

दासी 'प्रीति' हृदय में 'गुरु नामावली' रुपी चेतना विकसित करने हेतु गुरुदेव श्री चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम ।

॥ श्री ओम मंगलम ॥

अनुक्रम

समरपण, कवि बिनय (क-ख)

भूमिका (ग-ज)

बेनतीआं (ट)

श्री हंस चमत्कार हिन्दी अनुवाद

पहला खंड प्रारम्भ

विषय सूची।   पृष्ठ संख्या

* ॥ मंगलम ॥   ०१

*संखेप जीवन   ०३

*श्री बाबा ठाकुर जी ने प्रगट होके दर्शन देणे ०४

*बाबा वसावा सिंघ की याचना ते श्री बाबा ठाकुरजी ने नाम दान बखशणा ०५

*बाबा वसावा सिंघ जी की दशा ०५

*श्रीबाबा ठाकुर जी महाराज दा बाबा वसावा सिंघ जी नूं निहाल करके विदा होणां ते दी जोड़ी बखशानी ०६

* कुछकु पऊर्डिआं दा प्रसंग ०६

* पऊऐ ने असंतबोल विच छप्पर पहुंचावनां ०६

* उत्तर बाबा राम पयारा जी ०७

* श्री महाराज बाबा ठाकुर जी दा निवास असथान ०७

* बाबा सरूप सिंघ जी दा उद्धार ०८

*श्री महाराज बाबा ठाकुर जी वा आपणे

आसन तूं मुड़ना, ते बाबा सरूप सिंघजी ने मगर

लग के तुरना अते बाबा जी ने सरूप सिंघ नूं निहाल करना ०९

* बाबा सरूपसिंघ नूं भुख ने तंग करना ते बाबाजी ने उसनूं घर जाण लई प्रेरणा १०

* बाबा सरूप सिंघ जी दा कथन १०

* उत्तर श्री बाबा ठाकुर जी महाराज ११

* दूसरे दिन बाबा सरूपसिंघ जी ने श्री बाबा ठाकुरजी महाराज दे दरशन नूं आवना ते आपने मित्तर चरनदास खत्री नूं नाल आवण लई प्रेरणा ते उसदा भी श्री बाबाजी दे चरणां विच्च पुजना ११

* बाबा सरूप सिंघ जी ने चरनदास दे पास बाबा जी दा सरूप कथन करना १२

* श्री बाबा ठाकुरजी महाराज ने बाबा सरूप सिंघ ते प्रेमी चरनदास नूं असचरज कौतक दिखावनां १३

* श्री बाबा ठाकुर जी महाराज ने रास वेख प्रसन्न हो के पंज रूपए बखराणे १५

* होर कौतक १६

* बाबाजी दा बचन १६

* बाबा जी ने सनेहां देके दोहां प्रेमिआ नूं दुबारा भेजणां १६

* दोहां ने जाके बाबेजी दा संदेसा देके पेड़े ते दुध छकणा १७

* कई दिनां दे मोए होए मोची नूं श्री बाबाजी ने धरती विच्चों जीऊदां कढ़णा १७

- * प्रेमीआ ने उस थाउं दा हाल दसना १७
- * बाबाजी दा बचन १८
- * पिनशनी सिख फौजीआ ने बाबाजी नूं माइआ भेंटा करनी अते असथान बनाण दा प्रसंग १९
- * श्री बाबा जी दा बचन १९
- * सिख्वा दी बिनय १९
- * बाबा धरमदास जी दा श्री बाबा जी दे पास नीहं रखन लई बेनती करना १९
- * श्री बाबाजी दा फैसला करना २०
- * श्री बाबाजी दा बचन २०
- * प्रिथवी विचो की - की चिन्ह निकले २०
- * मंदर दी नीहं ते सेवा २०
- * देवतिआ ने आके मंदर दी सेवा करनी २१
- * सवेरे राजा ने आके कम्म वेखके हैराण होणां २२
- * निरंकारो वाच इस असथान नूं वर २२
- * श्री बाबाजी दे बचन असथान संबंधी २३

- * श्री बाबा जी दा उत्तर २३
- * बाबा सरूप सिंघ जी दा अन्त समां २४
- * बाबा सरूप सिंघ जी दा माई नूं दिलासा देणा २४
- * माई ने मुरदे पुत्तर नूं चुक्क के लिआके बाबाजी दे चरनां विच्च रख के बेनती करनी २४
- * श्री बाबा जी दा उत्तर २४
- * बाबा सरूप सिंघ जी दी दुबारा बेनती २५
- * बचन बाबा जी दा २५
- * श्री महाराज बाबा ठाकुरजी पास लोकां ने बाणी उच्चारण लई बिनय करनी ते श्री बाबाजी दा उत्तर २५
- * श्री बाबा जी दा उत्तर २६
- * श्री बाबा ठाकुर जी ने बन विच्च जाके, अगनि विच लोप होके चौथे दिन फेर प्रगट होणां २६
- * फुल्ल चुग्गण आए नखड़ीओ दी बेनती २६
- * श्री बाबा जी ने उहनां नूं बीर रस विच आके उत्तर देणा २७
- * श्री बाबा जी दा जल दे उते खड़ावां नाल तुरनां २७

- * तिन्ने महादेव दरशन नूं आए २७
- * भाई मानसिंघ जी ने वेखके असचरज होके सारी संगत नूं दसणां २८
- * श्री बाबाजी ने गुफा तो बाहिर आके संगत नूं दरशन देणे ते संगत दे प्रशन-उत्तर २८
- * श्री बाबे जी दा उत्तर २८
- * महाराजा रणजीत सिंघ दा दरशन वासते आवणा २९
- * सनिआसी महातमां ने रसते विच विचार करनी २९
- * महाराज तों पिछों साधु ने आउणा ३०
- * साधू ने प्रशन करना ३०
- * श्री बाबा जी दा उत्तर – ॥ श्री मुखवाक ॥, कवियो वाच, साखी पौराणक, नीति कथन ३०
- * सनयासी ने खुन्नस खाके पना प्रशन करना
३४
- * प्रेम दी खिच्च ३९
- * नरवड़ नगर विच बीबीआं दा संबाद ते बाबाजी नूं प्रेम नाल याद करना ते बाबाजी दा पुज्जना ४०
- * राग भैरवी, ताल तलवाड़ा ४१
- * राग पहाड़ी, ताल ठेका ४२

* बाबा कुम्मा सिंघ जी गुरुसर सतलाई वाले नूं बखशब्स ४५

* उत्तर बाबा जी ४६

* बाबा कुम्मा सिंघ जी दी बेनती ४७

* लंगर संबधी बाबा जी ने वर देणा ४८

* बोधी तों बोधी शाह ४८

* बोधी ने बकरीआं चोवणीआं ५०

* बोधी ने बिनय पूरबक उसतती करनी

५०

* बोधी तो उसतती सुनके महाराज जी ने किरपाल होके लाचीआं की बखशश करनी

५०

* श्री बाबा जी दा बचन ५०

* आपे पुट्टों ५१

* बाबा जमीत सिंघ जी दा उत्तर। ५१

* श्री बाबाजी दा हुकम ५२

* अनोखी सवारी ५२

* तोप दा गोला। ५२

* बचन बाबा वीर सिंघ जी ५३

* श्री बाबा ठाकुर जी ने चोर किवें तारे

५३

* रूड़ा उवाच ५३

* बूड़ा उवाच ५३

* रूड़ा उवाच ५४

* कविओ वाच ५५

* अरूड़ा ऊवाच ५६

* रूड़े बूड़े दोहां दा बाबे जी वल्ल आवनां, कवि उवाच ५६

* श्री कलगीधर जी दे दरशन ५७

* श्री बाबा जी ने बूड़े नूं अपना रूप पुछना

५७

* बूड़े दा उत्तर ५७

* रूड़े दा विचों खिझके बोलणा ५८

* श्री बाबा जी दा बचन ५८

* श्री बाबा जी दे हुकमानुसार बूड़े ने रूड़े दे पिछों होके देखनां ५८

* श्री बाबा दा जी कथन ५९

* कवि उवाच ५९

* श्री बाबा ठाकुर जी महाराज ने चब्बे नगर विच जाके मोतीराम ब्राहमन दा दरिदर फूकनां

६०

* पंडित मोती राम जी दा अपनी पत्नी प्रती कथन ६०

* पत्नी दा पति प्रती बचन ६०

* पंडित मोती राम दा कहिणा, पंडितोवाच

६१

* कविओ वाच ६२

* टेके मेहतर दा प्रसंग ६५

* "जनके चरन तीरथ कोटि गंगा" ६६

* पंडित गोंबिद राम दा उत्तर ६६

* श्री बाबा जी दा बचन ६७

* पंडितो वाच ६७

* श्री बाबाजीओ वाच ६७

* पंडतो वाच ६७

* श्री बाबा जी दा बचन, पंडति उवाच ६८

* श्री बाबा जी दा बचन ६८

* पूरबले जन्म दे समाचार ६९

* श्री बाबा जी ऊवाच ६९

* भाग सिंघ ने गोर्डिद वाल पुज्ज के सारा पता करना ७०

* भाग सिंघ ने मुड़के साधांवाली आवनां ७१

* श्री बाबा जी ने उपदेश करनां ७२

* भाग सिंह दी बेनती ७३

* श्री बाबा जी दा ग्रिहसथ निबाहुण दा हुकम

७३

* भाग सिंघ दी बेनती ७४

* श्री बाबाजी ने चरन पादकां की बखशश करनी ते भागसिंघ दी प्रसन्नता दा वरनन

७४

- * कुछकुं दिनां पिछों भाग सिंघ ने आपणी म्रितयू निकट जानके चरन पादुका नूं पावन असथान श्री साधांवाली पहुंचावना - चरण पादकां संबधी नोट ७६
- * नातूशाह नूं मक्के दी जिआरत ७७
- * दूसरे दिन नातूशाह ने मामूशाह आद नाल बाबाजी दे चरनां विच पुज्जनां ७९
- * श्री बाबा जी दा बचन ७९
- * इक पलक विच मक्के दी जिआरत, ते इक पलक विच सांघावाली मुड़ना ८०
- * नातूशाह दी पुना बेनती ८०
- * नातूशाह दा प्रशन ८१
- * श्री बाबा जी दा उत्तर ८१
- * श्री बाबे जी दे कलंदर दे रूप विच दरशन ८३
- * श्री बाबा जी दा उत्तर ८३
- * मोती राम ने श्री बाबा जी नूं उलांभा देणां ८५
- * श्री बाबा जी दा उत्तर ८६
- * श्री बाबाजी ने उहो सुक्की सड़ी रोटी कढ़के दिखाउणी ८६
- * असथान दी सेवा ८७
- * श्री बाबाजी दा हुकम ८७
- * धरमी राज होवेगा ८८
- * श्री बाबा वसावा सिंघ जी ने अपनां फुरना प्रगट करना ८९
- * श्री बाबा जी दा बचन ९४
- * महाराजा रणजीत सिंघ नूं अलोप होके दसनां ९६
- * श्री बाबा जी ने इक विद्वान पंडित नूं निहाल करनां ९७
- * श्री बाबा जी दा उत्तर ९७
- * किसमत दे कड़छे अते कुसंगत चा फल ९७
- * महाराजा रणजीत सिंघ जी दा उत्तर ९८
- * राजा ने जाके कम्म समेट के आवन लगणा, ते डोगरे वज़ीर ने रोक पावनी ९८

- * वज़ीर दा राजे प्रति समझाणा १८
- * राजे दा रुक जाणा १८
- * श्री बाबाठाकुर जी महाराज नाल महाराजा रणजीतसिंघ दा आदि विच मेल किवें होईआ सी १९
- * महाराजे दा श्री बाबा ठाकुर जी महाराज दे चरनां विच पुजना १००

पहला खंड समाप्त ॥

श्री हंस चमत्कार हिन्दी अनुवाद

दूजा खंड प्रारम्भ

- * श्रीबाबा जी ने नरवड़ नगर दा तयाग करके दड़प देस नूं निहाल करना १०३
- * श्री बाबा ठाकुर जी ने रोसे नगर दे बेले विच प्रगट होणां १०४
- * सरोवर सांधावाली दा प्रसंग ११६
- * प्रशन स्रोता कि जल फिर कदों ठहिरिआ या नहीं ठहिरिआ, इस दा उत्तर कवि वल्लों दित्ता जांदा है ११७
- * बूड़सिंघ जट्ट झंडेरा वाले नूं लगातार तिन्न राती सुपने आंवने, उसनें सथ्थ विच दस्सनां ११७
- * सरोवर विच जल दा टिकनां ११८
- * तसदीक प्रसंग उपरोक्त ११८
- * रावी इशानान ११९
- * नगर निवासीआँ दी दशा ११९
- * श्री बाबाजी दा प्रगट होना १२०
- * बड़े बड़े अहंकारीआं नानक गरबि गले (सुखमनी), हंकार फल - कवयोवाच।। १२०
- * सरदार शाम सिंघ ने उपरोक्त कुटीआ नूं मंदर दे रूप विच करन दा श्री बाबाजी दे अगगे संकलप प्रगट करनां, श्री बाबा जी दा उत्तर १२३

- * श्री बाबा जीउ वाच संगत प्रती १२६
- * पिछलें चोले दा इकरार पूरा कीता, श्री बाबा जी दा उत्तर १३०, १३१
- * साधू दा दुबारा ओही प्रश्न करना, श्री बाबा जी दा उत्तर १३२
- * राम बांग प्रसंग १३३
- * सिध दवाई, श्री बाबाजी दा उत्तर १३६
- * महाराजा रणजीतसिंघ जी दा काबल दी फतह दी कामना करके श्रीबाबाजी दे चरनां विच पुज्जणा १३७
- * राम बाग दा तिआग करके श्री बाबाजी ने दुरांगले नगर निवास करना १३८
- * माई सुख्वां दा प्रसंग १३९
- * माई सुख्वां दा हरीद्वार विच श्री बाबाजी नूं उडीकना ते प्रेम करके बहिबल होणा, अते श्री बाबाजी दे दरशन देणे १३९
- * माई सुख्वां ने मुड़के नगर दुरागले विच श्री बाबाजी नूं अपने असथान ते बैठे वेखके हैरान होके सहेलीआं तों पुच्छ गिछ करनी १४१
- * माई सुख्वां जी दा श्री बाबाजी पासों पुछणां १४१
- * श्री बाबाजी दा उत्तर १४२
- * माई परयोजनी दा प्रसंग १४३
- * माई परयोजनी जी दा (अमर कथा वांगू) चोरी चोरी पुसतक सुणके ओस तों कमाई करके सिद्धि प्राप्त करनी १४४
- * श्री बाबाजी दा देह तयाग सम्बंधि ऐलान १४५
- * श्री बाबाजी दा देह तयाग समां १४६
- * दूसरे दिन इक छींबे सिंघ नूं श्री बाबाजी दे दरशन होणे १४६
- * प्रसंग पैहला १४८
- * प्रसंग दूसरा १५०

* असथान के सेवादार ने संधिआ करन आए भगतजी नूं मरयाचा दस्सके असथान विचों चले जाण
वासते बेनती करनी ते भगत जी ने हठ करके बैठा रैहणा १५०

* उत्तर भगतजी दा १५१

* श्री बाबा जी दे दरशन सरप रुप विच १५१

* श्री बाबाजी ने आपणे असली रुप विच होणा १५१

* श्री बाबाजी दे दरशन ते बचन नाल भगतजी दे बजर कपाट खुल्लणे अते श्री बाबाजी दा लोप हो
जाणा १५१

* श्री बाबाजी के दरशन दा फल १५२

* कुछ कूं भगत जी सम्बंधित होर १५२

* प्रसंग तीसरा १५३

* आकास बाणी १५४

* प्रसंग चौथा कबित्त १५५

* प्रसंग पंजवां १५६

* प्रसंग छेवां १५७

* प्रसंग सतवां (हड्डु बीती) १५८

* प्रसंग महातम १६१

* वाकतक प्रसंग -

श्री बाबा दलीपसिंघ जी अपने पिता बाबा बसंतसिंघ जी तों स्रवन कीता प्रसंग इस प्रकार कथन करदे
हन । कथन बाबा बसंत सिंघ जी।

१६२

* प्रसंग अठवां वारतक, पंज पुत्तरा दी बखशश

१६३

* श्री बाबा ठाकुरजी दे आसन जो प्रगट हन

१६४

* पैहला आसन १६४

- * दूजा आसन १६४
- * तीजा आसन १६७
- * चौथा पंजवा आसन १६८
- * छेवां आसन १६८
- * सतवां आसन १६८
- * अठवां आसन १७०
- * नावां आसन १७०
- * दसवां आसन १७०
- * यारहवां आसन १७०
- * बारहवां आसन १७१
- * तेहरवां आसन १७२
- * श्री बाबा ठाकुरजी दे सतसंगीओं दे नामादिक
१७२

दूजा खंड समाप्त

श्री हंस चमत्कार हिन्दी अनुवाद

तीजा खंड प्रारम्भ

इस विच श्री बाबा ठाकुरजी महाराज तों वरसाए होए सतसंगी गुरमुखां दा लड़ीवार संखेप जीवन वर्णन है

- * लड़ी १ बाबा वसावा सिंघ जी १७५
- * श्री महाराज बाबा अमर सिंघ जी महाराज

- * रेण कवि दे आपणे जीवन सम्बधि, "पर मेरा भरोसा" १८१,१८२
- * लाला सोभा राम जी सपुत्र भगत दया राम जी (मंडी तांदलिआ वासी) १८१
- * श्री बाबा मान सिंघ जी महाराज १८४
- * लड़ी दूजी दा मणका २ बापू श्री बाबा जवाला सिंघ जी महाराज -
- * श्री बाबा जी दी बंसावली १९२
- * आप जी दी रेखा १९४
- * आपजी ने अभिआस करनां १९५
- * आपजी दा बालक अवस्था दा इक प्रसंग
१९५
- * ग्राम तयाग १९८
- * पंजाब मल दी सरधा पूरबक बिनय २००
- * श्री बाबा जी दा उत्तर २००
- * आप जी दा श्री अमृतसर जी पुज्जनां २०१
- * नूरशाह दा हाल २०२
- * पंजाब मल्ल दी ढूंड भाल २०३
- * मिलाप २०४
- * कौतक अवस्था (अंग अंग जुदा) २०४
- * आप जी दी अवस्था दा वरनण २०५
- * यस रूपक २०५
- * नाम छेत्तर दा अरंभ २०६
- * श्री बाबा भाग सिंघ जी दी बोहणी २०६
- * श्री पंडित नाराइण दास जी ते आप दी किरपा ते आपदी प्रसिधी २०६
- * श्री बापू जी ने आपने पासों माया ते वर देणे
२०९
- * मिंट गुमरी विच दुकान २११

- * भगत जी दा आपना समां २११
- * पंडित कलियान दास दा आउणा २१५
- * अपणी रसद मंगवाऊणी २१७
- * प्रसंग बाणी बाबा पानप दास जी २१८
- * पंज पुत्तर २१९
- * श्री बाबा जी दा गंगा इशानान २२२
- * दो कोह दे दो मुरब्बे २२३
- * बाबा बंदी छोड़ २२४
- * पुत्तरा दीआं जोड़ीआं बखशश २२८
- * बचन नां मन्नन दा फल २३०
- * घोड़े दा की होइआ, इके खेत विच बरखा २३६
- * नज़र कीमीआं २३८
- * मरी नूं मरी २४१

कवि दी अपणी डाइरी पिता भाई बहादरसिंघ जी, सचखंड वासी जी तों बारक अवस्था विच जुबानी प्रापत

- : डेमूंआ दी खख्वर २४२
- : मांस संबधी प्रशनोत्तरी २४३
- : दसां कोहा तों घड़िआल दी अवाज़ सुनावणी
२४३
- : अपने पिआरिआं नाल प्रेम तो पेशगी प्रशादे
२४४
- * माता लछमीजी (पतनी भा: ठाकुरदास जी खुराणां मिंटगुमरी निवासी) नूं वर द्वारा दो पुत्तरां दी
बखशश २४४

- * मोकलां वाले सरदार मुसलमान हो गए २५६
- * अपने सेवक की आपै राखै ॥ २४७
- * पतासिआं दा चोर २५०
- * इक समे विच दो सरूप, धानक रूप धार प्रेमीआं दी प्रीखया करनी २५३
- * वादी दी शंका ते ऊसदा उत्तर २५५
- * सुरत दी सवारी ते जाके बेहबल होए प्रेमी दा अंत समे उद्धार करनां २५६
- * बहादरसिंघ ने नूरशाह विच पुजके बापू महाराज बाबा जवालासिंघ जी दे चरनां विच बेनती करनी २५८
- * वादी दी शंका ते उसदा उत्तर, उत्तर कवि २५९
- * कुकरी दा उद्धार २६०
- * "साधु कै संगि अगोचर मिलै ॥" २६२
- * "साधु कै संगि सो धन पावै । जिस धन ते सभ को वरसावै।"
- करम अरांई नूं वर २६२
- * प्रेम प्रशादे ते वर २६४
- * मांई बत्तरी सु माता किवें बणी? २६५
- * "जन का जैकार कराई " २६६
- * बचन रूप दारु २६८
- * अनोखे दर्शन २६८
- * अनोखी प्रश्नोत्तरी २६९
- * हड़ तो पिंड बू बचाइआ २७०
- * खाता पूरा २७०
- * आप जी का तेज २७१
- * इक पलक विच चार कोह पैडा २७४
- * घोड़ीआं लभ पैण - वारतक प्रसंग २७५
- * "चदंन कै निकटे बसै बांसु सुगंधु न होई।", तोप दा गोला २७५

- * वारतक प्रसंग २७६
- * प्रसंग ज़बानी सः बिशन सिंघ जी २७७
- * कवि याचनां २७९
- * सांधावाली सेवा प्रारंभ
चार दीवारी ते डेरे दा बणना ताल विच जल
दा ठहिरणा आदि २८१
- * स्त्री बाबा भागसिंघ जी ते पंडित कलयान दास जी ने मुड़के नूरशाह जाके दसना ते स्त्री बाबा जवाला
सिंघ जी दा कुछ संगत नू नाल लिआके साधांवाली पुज्ज के सेवा आरंभ करनी । २८२
- * सांधावाली विच पुज्ज के सेवा दा आरंभ
२८३
- * बालण दी तोट ते फकीर क्रोध निव्रिती
२८५
- * जट दा वट लाइआ, "मूरख गंढ पवै मुहि मार" २८६
- * हनुमान दी सेवा २८७
- * मिट्टी की सेवा भी लऊ २८७
- * नागनी दी तोट - कुबेर की भेटा २८७
- * स्त्री बाबा ठाकुर जी के भविखत वाक २८८
- * कुछक स्त्रीरक बल बरनन २८९
- * बचन मोड़न का फल २८९
- * आपजी दा साधांवाली सेवा वरनन २९०
- * भगत धन्नया सिंघ जी का सांधावाली विच आके सेवा (महंती) संभालनी २९०
- * स्त्री महाराज बाबा जवाला सिंघ जी ने भगत जी नूं सेवा दा महातम समझाके सेवा ते डटाके अते होर
अपने सरीर तयागन दीआं बुझारतां पाके आप जी ने नूरशाह आ जाणा २९१
- * भगत जी नूं सेवा का महातम दस्सना २९१
- * पुन उपदेश २९२

* इक होर उपदेश २९३

* श्री महाराज बाबा जवाला सिंघ जी दा अंत समां (जुबानी किशनराम जी वधवानूर शाही)

२७९

* श्री बाबा जवाला सिंघ महाराज जी के अंत समें दे दो प्रसंग २९६

* आप जी का अंत समां हंस सखर मतानुसार

२९६

* "नहिं मिरत ना जनम जरा " २९८

> जट्ट नूं फंड चाहड़ी २९८

> नूरशाह मंदर की चोरी २९९

> स्वपन द्वारा बखाशश ३००

> स्वपन द्वारा प्रतख उपकार ३०१

> स्वपन द्वारा सपुत्तरां के नाम रखे, पेशाग्री

वधाईआं ३०१

> पुत्तर बखशश बीबी आतमां देवी कथन ३०३

> लाला बखशीराम जी रीडर मोंटगुमरी दे घर भुजंगी उत्पत्ती प्रसंग बीबी आतमा बेवी कथन

३०४

> बाबा जी पिंड के राखे ३०५

> सच खंड का संवेब्सा ३०७

> "अनिक बिघन ते साधू राखे" ३०७

* आप जी दीआं यादगारां ३०९

* नूरशाह विच आप जी दा यादगारी असथान बणन वेले दा इक आलौकिक प्रसंग ३०९

* आव्हे विच कीड़ा ३१०

* सवा महीने पिछों ताज़ा कड़ाह (किशन राम कथन) ३११

* आपजी दा सतकार आपजी दे वड्डे भरा दे दिल विच ३११

* बालक लीला ३१२

* आप जी दे कर कमल दा कड़ा कशट निवारक (स्री बाबा दलीप सिंघ जी दा कथन)

३१३

* कवि दी बिनय बाबा जी दे चरनां विच

३१३

* स्री बाबा जवाला सिंघ जी खुवाजा खिजर (वरण) दा अवतार हन (कथन माछी थोरीआ नूरशाह निवासी) ३१३

* लड़ी दूजी दा मणका २

अजर - जरन बाबा भाग सिंघ जी ३१६

* लाला गंडा राम दी प्रतगया ३१९

* साडा सीस कट दिओ ३२१

* सप्प लड़े ते जैहर ना चढ़े ३२२

* छेती चलीए ३२३

* मेरा ताप लहिआ ३२४

* भगत सेवा राम दा अंत ३२५

* "गिआन अंजन जाकी नेत्री पड़िआ ताको सरब प्रगास"

पन्नां कढ़िआ ३२५

* पुत्तर दी बखशश वारतक प्रसंग ३२६

* डुब्बदा बचाइआ ३२६

* आप जी दा सरीरांत

श्री महाराज बाबा जवाला सिंघ जी दा श्री बाबा भाग सिंघ जी नूं सचखंड तों संदेसा ३२७

* वारतक समाचार हंस सरवर कथन ३३०

* लड़ी दूजी दा मणका ४

बाबा अरूड़ सिंह जी महाराज ३३२

* स्री कलगी धर मंगल ॥ स्री ठाकुर जी मंगल ॥ स्री बाबा अरूड़ सिंघ जी मंगल ॥ ३३३, ३३४

* आप जी दा जनम ३३५

* पहिली उमर, आपदा नौकरी करनां, वैराग उत्तपत्ती ३३६

* कवि कथन ३३७

* गुरमुख दी ढूंड, गुरमुख कैसा होवे ? ३३७

* गुरमुख दी टोल किथे किथे कीती ?

३३८

* हीरा सिंघ जी दा प्रश्न ते बाबा जी दा उत्तर

३३९

* संत जो मिले हन सो कैसे मिले हन ? बाबाजी कथन ३३९

* महाराज बाबाजी थों निज विथिआ सुणके हीरासिंघ ने महाराज बाबा भाग सिंघजी दा पता देणा,
बाबा जी कथन ३४०

* हीरा सिंघ उवाच ३४१

* हीरासिंघ जी तों पता मिलन ते बाबा अरूड़ सिंघ जी ने अपने नगर फतहपुर विच आके बाबा भाग
सिंघ जी दे चरनां विच पुज्ज के बेनती करनी ३४१

* स्त्री महाराज बाबा भाग सिंघ ली ने किरपा करनी ३४१

* स्त्री बाबा अरूड़ सिंघ जी दी दशा ३४१

* कवि उवाच ३४२

* स्त्री बाबा अरूड़ सिंघ जी ने डेरे सांधा वाली दी सेवा किस तरहां ते कितनी कू कीती ३४२

स्त्री महाराज बाबा अरूड़ सिंघ जी दे कौतक प्रारभ

* पैहला कौतक चरागे दी म्रितू ३४७

* दूसरा चरित्तर मेरे भाई वीर सिंघ दी म्रितू (मृत्यु) अठ दिन पैहले दस्सनी। ३४८

* धुर तों चिट्ठीआं ३४९

* चरित्तर चौथा - काल (समें) ते वसीकार, तसदीक प्रसंग ३५१

* चरित्तर पंजवा ३५३

- * चरित्तर छेवां - पंज पुत्तरा दी बखशश ३५४
- * चरित्तर सतवां - बचन शत ३५५
- * चरित्तर अठवां - बाबा बंदी छोड़ ३५६
- * चरित्तर नौवा - "भगतां दा बोलिआ प्रवाण है" ३५७
- * चरित्तर दसवां - "भगत मुखे ते बोल दो से बचन होवंदे" ३५८
- * चरित्तर यारवां - दैव रूप दरशन ३५९
- * चरित्तर बारवां- प्रेम दी खिच्च ३६०
- * चरित्तर तेरवां - "अपने सेवक की आपे राखे" ३६३
- * चरित्तर चौदवां - "ताप पाप संताप बिनासे" ३६४
- * चरित्तर पंद्रवां - "ताप संताप सगले गए बिनसे ते रोग" ३६५
- * चरित्तर सोलवां "अनिक बिघन ते साधू राखे" ३६६
- * चरित्तर सतारवां - " संत सरन जो जन परे सो जन उधरनहार" ३६७
- * चरित्तर अठारखां-"अपने जनका परदा ढाकैं ।। अपने सेवक दी सरपर राखै "।। ३६१
- * चरित्तर उन्नीवां - स्वपन द्वारा रिहाई
"साधा सरनी जो पवै सु छुटे बधा" ३७२
- * चरित्तर वीहवां - इंदर ते हुकम ३७४
- * चरित्तर इकीसवां- आगिआ (आज्ञा) भंग दा फल ते माफी ३७५
- * चरित्तर बाइसवां - अपने सेवक नूं सुपने द्वारा सदना ३७६
- * चरित्तर तेइसवां - कवी दी हड्डु बीती जदों पौणे दो साल साधांवाली रिहा सावण १९८९ तों माघ १९९० तक ३७७
- * चरित्तर चौबीसवां - कवी दी अपनी हड्डु बीती न : २ शक्कर प्रसंग ३७८
- * चरित्तर पचीशवां - (प्रसंग ज़बानी सः केहरसिंघ जी) ३८३
- * चरित्तर छब्बीसवां ३८६
- * चरित्तर सताईसवां - मेरे इमतिहान विच आप जी ने किवें सहाईता कीती ? ३८८
- * चरित्तर अठाईसवां - बीबी राज राणी दा इमतिहान विच पास होणा ३९१

- * चरित्तर उनतीसवां - कुल रीत बदली ३९२
- * चरित्तर तीसवां ३९३
- * चरित्तर इकतीसवां - "मुर्दा जिवाइआरु ३९६
- * चरित्तर बतीसवां - "सेवक दी जितरु ३९८
- * चरित्तर तेतीसवां - "साध संगि बसतु अगोचर लहैरु ४०२
- * चरित्तर चौतीसवां ४०७
- * चरित्तर पैतीसवां ४०८
- * चरित्तर छत्तीसवां - "साधु कै संग मिटै सभ रोगरु" सेवक करतार सिंघ दी सज्जरी हड्डु बीती ४११
- * चरित्तर सैंतीसवां - "रेण कवि दी ताज़ी हड्डु बीतीरु ४१२
- * चरित्तर अठत्तीसवां - "गिआन अंजन जाकी नेत्री पड़िआ ताकउ सरब प्रगासा" ४१२
- * चरित्तर उनतालीसवां ४१३
- * चरित्तर चालीसवां ४१४
- * चरित्तर इकतालीसवां ४१४
- * चरित्तर बैतालीसवां ४१६
- * चरित्तर तिरतालिसवां ४१८
- * चरित्तर चौतालीसवां ४१९
- * चरित्तर पंतालीसवां ४२०
- * चरित्तर छैतालिसवां- सरकार गंगा सिंघ दा सुपना प्रीखिआ आदि ४२१

* लड़ी दो (२) मणका पांज (५)

स्त्री बाबा अरुड़ सिंघ जी दे सतसंगी-

- * मणका पांज (५) भाई हीरा सिंघ जी ४२४
- * मणका छे (६) संत राम सिंघ जी ४२५

* मणका सात (७) संत सेवा दास जी ४२५

* मणका आठ (८) महन्त जै राम जी दास दा संखेप जीवन ४२५

* लड़ी दूजी दा मणका नवां (९)

स्री महाराज बाबा जवाला सिंघ जी दे दूसरे सतसंगी सेवा दी सीमां

स्री भगत घनया सिंघ जी महाराज पहिले महन्त (डेरा साधां वाली) ४२९

॥ भगत जी मंगलम ॥

* स्री भगज जी दी कथा प्रारंभ ४३१

* स्री महाराज बाबा जवाला सिंघ जी दा उत्तर आप जी प्रति ४३२

* भगत घनया सिंघ जी दी बेनती ४३२

* स्री महाराज बाबा जवालासिंघ जी ने भगत घनयासिंघ जी नूं विधि पूरबक जपन दा वल दसणां।
४३४

* भिन्न भिन्न तिनां दे फल ४३७

* गुरु प्रमाण ४४०

* स्री बापू जी वलों तरक ते भगत जी दा कारे जुट्टना ४४२

* प्रीखिआ विच पास ४४३

* साधावाली विच सेवा ४४४

* वारतक हंस सरवर कथन पन्ना २९५ ४४४

* कवि कथन वारतक आप जी दीआं प्रगट शकतीआं ४४५

* स्री महाराज बाबा जवाला सिंघ महाराज जी दे बचन किवें फली भूत होए ? ४४५

* आप जी दे समें विच डेरे नाल कितनी कु ज़मीन लग्गी ? ४४६

* आपजी दे सतसंगी ४४७

* मणका दस (१०) महंत बिशन सिंघ जी

४४८- ४५०

(१) बिआन भाई सावन सिंघ हिस्सेदार दुकान भाई नंद सिंघ सावन सिंघ मंडी तांदलिआं वाला ज़िला लाइलपुर

(२) भाई गुरबख्शा सिंघ जी ग्रन्थी ते सेवादार मंदर स्त्री बाबा भाग सिंघ जी महाराज नगर फतहपुर जिला मंटगुमरी दसके हन

* मणका ग्यारां (११) भाई सुंदर सिंघ जी

*करनी ते कथनी दा प्रभाव ४५०-४६१

(१) डाक्टर गुरबख्शा सिंघ जी चक नं १२-४R जिला मैटगुमरी दसदे हन....

(२) सरदार राधासिंघजी जिमीदार नगर गड़ फतेशाह जिला लाइलपुर दसदे हन....

(३) लाला साहिब दिता जी सपुतर लाला हाकम राइ जी, जात पावहा नंबर दार, पिंड झांबरा तसील जंडावाला, जिला लालपुर जी ने दसिआ.....

(४) इह वारता तां आप दी अती प्रसिध ते नगर झांबरे दा बच्चा-बच्चा जानदा है ते गिरद निवाह विच भी सभ लोक जानदे हन.....

(५) ला: राम रखा मल जी, जान मुंजराल, नगर पिंडी चेरी जिला शेखूपुरा निवासी (अज कल जिना दा निवास जंडा वाले है) दसदे हन....

(६) ला : देवी दिता जी, जात पाहवा, झांबरा निवासी अज कल चक अमराया, तसील जडां वाला दसदे हन

(७) उपरोक्त देवी दिता जी का कथन है ...(८) उपरोक्त देवी दिता जी दसदे हन

(९) रेण कवी दे अखी डिट्टे ते हड्डी-बीते हालात.....

* लड़ी दूजी दा मणका १२

स्त्री पंडित नाराइण (नारायण) दास जी 'ओम'

नन्दाचौर (हुशिआरपुर) निवासी

★ आप जी का जनम समां अते नगरादि ४६३

★ आप जी की शादी, वैराग उत्तपती ४६४

- ★ पंडित जी दी अकाल पुरख अगगे बेनती करनी ४६४
- ★ गुरु (मुरशद) की आवश्यकता ४६६
- ★ गुरु दी ढूंढ भाल ४६६
- ★ गउड़ी बैरागण मः ४ ४६७
- ★ गवाले प्रति आप दा बचन ४६९
- ★ गवाले नू दुध चोके आपजी दे अगगे रखणां ते आपजी ने मिठे दी भी मंग करनी ४६९
- ★ गवाले दा बन विचो जाके फल लिआके दुध मिठा करके पंडित जी नूं पिआउणां ४७०
- ★ आप जी दी सोच ४७२
- ★ सोच दा सिट्टा ४७२
- ★ श्री महाराज बाबा ज्वालासिंघ जी दी नित क्रिया ते आप दा मिलाप ४७४
- ★ स्त्री १०८ महाराज पंडित नाराइण दास जी दी अपनी कलम तों भ्रमण अधयाय
(सफरनामा) ४७६
- ★ आपजी दी कविता संबंधी नोट ४७७
- ★ ग्रंथा के नाम ४७७
- ★ स्त्री बाबा ज्वालासिंघ जी दे हुकम ते पंडित जी ने तदाकार होकर अभयास नूं जुट पैणा ते बेगम पुरे
विच पुज्जके आनन्द रूप हो जाणा ४७८
- ★ स्त्री पंडित जी दा इस अवसथा विच पुज्जन ते लोकां वल्लों कलेश मनो त्रिती दा बदलानां ते बाबा
जी के हुकम नाल जनम नगर नंदाचौर विच जाके भी कुछ समां ब्रिती मस्तानी ते फिर दानी करके
रहिनां ४७९
- (१) फुल्लां दी वरखां ४८०
- (२) पिऊंदी गिटक उग्गी ४८०
- (३) भेख नूं लाज लांऊदे हो ४८०
- (४) रस्सा पूरा नहीं आऊणां ४८१
- (५) आपजी ता ऐथे ही रहे हन ४८१

- ★ आप जी दा अंत समा ४८२
- ★ शंका ते उसदा उत्तर ४८३
- ★ सिसकार ४८४
- ★ आप जी की यागदार ४८५
- ★ कवि विनय, आप जी के सतसंगीया दी सूचि ४८६

लड़ी दूजी दा मणका १३

स्री पंडित नाराइण दास जी 'ओम' के पहिले सतसंगी

स्री संत ठाकुर दास जी

॥ स्री निरगुण मंगल ॥

॥ श्री ठाकुर दास जी मंगल ॥ ४८७

- * आप जी का जनम ४८८
- * भागां दी गती ४९१
- * ठाकुर दास जी दा नंदाचौर विच सौंदा लैण वासते आवणां
अते
- अगो महाराज पंडित नाराइण दास जी के दर्शन होणे ४९१
- * प्रशनोत्री ४९२
- * स्री ठाकुर दास जी दा मोहित होना ४९२
- * ठाकुर दास जी दी बेनती ४९३
- * ओम जी उवाच, स्री ठाकुर दास जी उवाच
४९४
- * जद स्री ठाकुर दास जी ने इह बचन आखे तां पंडित ओम नाराइण दत्त जी ने ज़रा जेहा
ताड़िआ अत्ते इऊं आखिआ....नज़म उर्दु ४९५
- * आप जी दे रचे होए ग्रंथा विचों वंनगी मात्र

- * महाराज पंडित जी दे कथन दा भाव, संत ठाकुर जी दे उत्तर दा भाव ४९८
- * 'गुरमुख माइआ विच उदासी' (चोरी प्रसंग) ४९९
- * बाजीगरा का तमाशा ते बखशश उदारता ५००
- * पुनः उदारता ५००
- * होर उदारता ५००
- * अंग अंग जुदा ५०१
- * कागज़ गुम्म होए दरी हेठों प्रापत ५०१
- * स्रः किशनसिंघ कथन ते बेलासिंघ दा उत्तर ५०२
- * किशनसिंघ ने परशाद लिजाके स्त्री ठाकुर दास जी दी सेवा विच बेनती करनी ५०३
- * मंजा हलिआ ५०४
- * मौत वटांददा ५०४
- * कवि वल्लौं स्त्री ठाकुर जी दे चरनां विच शरधा सहित बेनती ५०५

पुसतकांत

शुकरीया - धनयवाद

लख-लख शोक

धनय भाग

कवि क्रितगय

माँ आर्शीवाद आभार

॥ जय बापू दी ॥

परमआराध्य, प्रतिपल स्मरणीय

श्री परमहंस बाबा ठाकुरजी महाराज जी

के पावन श्रीचरणों में

बापू हरभगवानजी गद्दीनशीन "नन्दाचौर धाम"

आज्ञानुसार

साधु आत्मा सिंह 'रेण' कृत पंजाबी ग्रन्थ

श्री हंस चमत्कार

का

हिन्दी अनुवाद

सहृदय समर्पित

अनुवादक

प्रीति अमृत अनेजा

१९ सतिगुर प्रसादि ॥

जे हरि दासन की सतति है सा हरि की वडिआई।

हरि आपणी वडिआई भाव दी जनका जैकारु कराई।।

(वा. मै.श. ४) (वार श्लोक महला चौथा)

तुधु सालाहनि तिन् धनु पलै नानक का धनु सोई।

जेको जीओ कहै ओना कर जम की तलब न होई।।

प्रभाती महला पहला

बाबाणीआ कहाणीआ पुत् सपुत्त करेनि ।

ग्रन्थ

श्री हंस चमत्कार

अते

हंस माल - भाग पहिला

जिस विच नगर नरवड़ (लाहौर) विच प्रगट होए श्री परम हंस

बाबा ठाकुरजी महाराज

अते

पाँज पद नूं पहुँच चुके कुछकु उन्हां दे जगयासु महं पुरखां दे जीवन हन जिसनूं आप जी ने अति किरपा करके अपने सेवकां दे सेवक

साधु आत्मा सिंह 'रेण'

नूं रचन दी सेवा बुधि ते बल बखशिआ अते जगयासू पुरशा दे लाभ हित छापण वासते माया दी सेवा अपनी निवाजी होई संगत तो लई ।

सितम्बर १९३७ ई०

समरपण

कबित्त

मालक दी धरा बाग बूटे सभ मालक दे

मालक दे फुल्ल पत्ते टहनीआं ने सारीआं। मालक दा माली लैंदा नौकरी महीने पिछों मालक दे बाग राखी आदि करे कारीआं।

मालक दे बाग विचों चुण चुणि फुल्ल सोहणे मालक दे वासते ही मालां ने सवारीआं । मालक दी भेंट जिवें माली ने इनाम पावे

रेण करे भेंट इह निमाणी सेहरे हारी।

|| दोहरा ||

मालक माली बाग दे, ठाकुर जी महाराज ।

तिन् चरना विच भेंट इहु, दे चाहों निज लाज ॥

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (क)

कवि बिनय

|| दोहरा ॥

धेनु करुपा विमल पय, पान करे गुण देइ ।

हीन मति कवि नाथ यस, बुधि जन सुने गुणेइ ॥

इस ग्रन्थ दी भाशा

॥ दोहरा ॥

खिचड़ी भाशा विच है, लिखया ग्रंथ तमाम । सजन पढ़ो समाल के, मन पावे विस्राम ॥

कबित्त

किते किते भाशा विच आशा बख्यात कीता, पढ़के पंजाबी किते राजी मीत होणगे ।

किते किते संसक्रित बदी बदी थित भई,

किते किते फारसी दे पद पैणे दोणगे ।

किते किते अरबी दी चरबी भी कढ़ रख्खी, किते किते बागड़ी दी रागड़ी अलोणगे ।

किते अंगरेज़ी दी न होई, परहेज़ी मैथों,

पूरब दी पूरबी भी 'रेण' किते जोहणगे ।

'रेण'

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (ख)

भूमिका

महां पुख्खां के जीवण लिखण वेले डर हुंदा है, कि लिखे प्रसंगा नाल जे महांपुरुख सहिनत न होण, तां उलटे ठेणे के देणे ना पै जाण। किउं कि लेखक कोई सरखगय नहीं हुंबे, ते इसथित महांपुरख अपने जीवण बीआं खास खास लिखण योग घटनावां ते आप रोशनी नहीं पाउबे, उह अपने जीवन नूं सगों लुकावन का जब फरवे हन। इस खिआल ते कि साडे जीवन दीआं खास खास घटनावां नूं पढ़ सुनके लोक साडी मानाला करन लग जाब्सन, जिस करके सानूं तकलीफ होवेगी। इक महां पुख्ख जी का कयन भी है कि 'लोक मावता गुरु ते मक्खिओं की निओई दुखदाई हुंबी है।"

एह है भी यथारथ कि लौड़वंद दुनिया विशेष करके सरीर अछित महं पुरखों में बहुत तंग की है। परंतु इह गल वी भुल्लण वाली नहीं कि महंपुरखां के जीवन जगयासु जनां वासते रोशनी मीनार हमने अन सानूं किसे भी महंपुरख का जीवन प्राप्त नां होवे तां असी निराधार होके अम्बलभूसे खावन गल जाए।

मेरी जाँचे सच तां इह है कि महापुरखां के जीवन ना केवल रोशनी मीनार उन, सणों बचे मेलडी हन जिनां तों चढ़के असी छेती तो छेती मंजल मकसून ते पहुंच सकते हो।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दी तुक तुक फोल देखों एहो सिधांत मिलेगा कि इतहास पढ़ो सुनो जिनां विचों महापुरखां दे जीवन आप नूं सिद्धा रसता दस्सनगे। यथा:-

बसंत महला पंजवां (५) घर पहला (१) दु तुकीआ

सुनि साखी मन जपि पिआर ॥ अजामलु उधरिआ कहि एक बार।

बालमीकै होआ साधसंगु ॥ ध्रू कु मिलिआ हरि निसंग ॥१॥

तेरिआ संता जाचु चरन रेन ॥ ले मसतकि लावउ करि क्रिपा देन ॥१॥ रहाउ ॥

गनिका उधरी हरि कहै तोत ॥ गज इंद्र धिआइउ हरि कीऊ मोख ॥

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (ग)

बिप्र सुदामे दालदु भंज ॥ रे मन तू भी भजु गोबिन्द ॥ २ ॥ बधिकु उधारिओ खमि प्रहार ॥ कुबिजा उधरी अंगुसट धार ॥ बिरु उधारिओ दासत भाइ ॥ रे मन तू भी हरि धिआइ ॥३॥ प्रहलाद रखी हरि पैज आप ॥ बसत्र छीनत द्रोपदी रखी लाज ॥ जिनि जिनि सेविआ अंत बार ॥ रे मन सेवि तू परहि पार ॥४॥ धनै सेविआ बाल बुधि ॥ त्रिलोचन गुर मिलि भई सिधि ॥ बेणी कउ गुरि कीओ प्रगासु ॥ रे मन तू भी होहि दासु ॥५॥ जैदेव तिआगिओ अहंमेव ॥ नाई ऊधरिओ सैनु सेव ॥ मनु डीगि न डोलै कहूँ जाई ॥ मन तू भी तख्सहि सरणि पाइ ॥६॥ जिह अनुग्रहु ठाकुरि कीओ आपि ॥ से तै लीने भगत राखि ॥ तिन का गुणु अवगणु न बीचारिओ कोइ ॥ इह बिधि देखि मनु लगा सेव ॥७॥ कबीरि धिआइओ एक रंग ॥ नामदेव हरि जीओ बसहि संगि ॥ रविदास धिआए प्रभ अनूप ॥ गुरु नानक देव गोबिन्द रूप ॥८॥

तथा:-

अन्य बानी भगत धन्नेजी की ॥ महला ५ ॥

तथा:-

आसा बानी भगत् धन्नेजी की ॥ महला ५ ॥

गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेउ मनु लीणा ॥ आढ़ दाम को छीपरौ होइओ लाखीणा ॥१॥ रहाउ ॥
बुनना तनना तिआगिकै प्रीति चरण कबीरा ॥ नीच कुला जोलाहरा भइओ गुणीय गहीरा ॥१॥ रविदासु
दुवन्ता ढोर नीति तिनि तिआगी माइआ ॥

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (घ)

परगटु होआ साध संगि हरि दरसनु पाइआ ॥ २॥ सैनु नाई बुतकारीआ ओह घरि घरि सुनिआ ॥ हिरदै
वसिआ पार, ब्रहमु भगता महि गनिआ ॥ ३॥ इह बिधि सुनि के जाटरो उठि भगती लागा ॥ मिले
प्रतखि गुसाईआं धन्ना वडभागा ॥४॥२॥

यथा महं भारत दे यख्य अते धरम पुत्तर युधिशठर दे संबाद विच भी यखय ने प्रशन कीता है कि: कह
पंथ अरथात् संसार विच् उद्धार दा मारग की है? इसदे उत्तर विच धरम पुत्तर ने किहा-

**"तरकौ अप्रतिशठः शत्रयो विभिन्ना नई कोपि रिशी यस्य वचो परमाणम् ॥ धर्मसय तत्वं निहितं
गुहायां महं जनौ येनगतः स पंथा ॥"**

तरक अरथात दलील बाज़ी नाल सिद्ध कीता मारण ठीक नहीं किउकिं इक ही दलील नूं दूसरे दी प्रबल
दलील तोड़सकदी है। इस वासते सच्च दा निसचय करना मुशकल है-

तरक अरथात दलील बाज़ी नाल सिद्ध कीता मारग ठीक नहीं किउकिं इक ही दलील नूं दूसरे दी प्रबल
दलील तोड़सकदी है। इस वासते सच्च दा निसचय करना मुशकल है-

"फिलसफी की बहस में कभी खुदा मिलता नहीं। डोर को सुलझा रहा कभी सिरा मिलता नहीं ॥"

शरतीआं अरथात वेदां दे बचन नानां मत दे अधिकारिआं नूं उपदेश होण दे कारण एक मारण निसचय होना जगिआसुओं वासते कठन है। उसें तरां खट दरशन, अठारां, पुराण, सताई, सिम्रतियाँ, भाशाकारां सूत्र कारां अते अनेक टीका कारां दे वर्णन कीते होए प्रसंग दे वस होके अनेकां मत कथन कीते हन। इस वाक सरब सरोमनी सिधांत निरणय नहीं हो सकदा। इसे तरां धरम तत्व भी अति सूखम होन करके ठीक ठी रुसता दिखा नहीं सकदा। राजा युधिशठर जी कहिंदे हन- "हे यखय! महान पुरा जिस मारग द्वारा सिस क्रम नूं चलाके अंतर ध्यान हो गए हन, उहो ही निसचय करके पंथ है अते उहो ही कलयानकारी मारग भी है। इस वासते लौड़ है कि महान पुरशां दे आदरशक जीवन नूं संसार दे सनमुख रखिआ जावे।

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (३०)

भगवान श्री किशन जी ने भी गीता विच फरमाया है- "हे अरजन भावें त्रिलोकी विच कोई ऐसा पदारथ नहीं जो कि मैंनूं प्रापत नां होवे, मैं ईसवर हुंदा होइआ भी करम करदा होइआ देखिआ जांदा हां, ओह केवल इस वासते कि "मम वरतमानु वर्तन्ते मनुशिआ पारथ सरवशः," अरथात् मेरे पालन कीते गए मारग ते चलन वाले सत पुरम हुंदे हन।

ऊपर कथन कीते राग बसंत दे शबद विच साहिब दसदे हन 'हे मेरे मन। मेरो कोलों गवाहीआं सुन, ते फिर प्रेमा भगती विच लग जाह, दूसरी तुक तों गवाहां दे नाम दिते हन। ते जिखम रूप विच जीवन देके दसिआ है कि इन्हां दे जीवनां तों सिखां हासल कर ।' इसै ही सिधांत नू राजा युधिशठर अते भगवान श्री क्रिशन चन्द्र जी दे वाकां ने वी सिघ कीता है। हुण जेकर असां विस्तार पूरवक जीवन देखने होण तां सानूं महं पुख्खां के इतहास फोलने पैणगे। ओन्हां दे जीवन नूं असी अपना अमली जीवन बनाके, उन्हां जैसे सगों एदों भी वद् हो सकदे हां, पर जे साडे पास महं पुरखां दे मुकम्मल ते विसथारपूरबक जीवन ही ना होवण तां ऊपर दस्सिआं तुकां साडा कोई मतलब नहीं सार सकदीआं ।"

सो ऊपर कथन कीते गए सिधांत अनुसार महान पुरखां दे जीवन कितनी कूं लोड़ी दी शै हन, इसनूं जगयासू लोक ही अनुभव कर सकदे हन ॥

जिनां महां पुरशां दा जीवन लिखन वासते 'रेण' ने अज कलम चुकी है, उन्हां दे जाती खिआला तो भी लेखक अगिआत नहीं। ओह बिलकुल वी नहीं चाऊन्दें कि उन्हां विच सरीर करके मौजूद महां पुरखा दीआं खास खास शक्तिआं प्रगट कीतीआं जावण, सगों ओह एह खिआल प्रगट करके टाल देंदे हन यथा-

"अजहु सु नाऊ समुंदर महि किआ जानउ किआ होइ।"

भावें गुरवाकां दवारा लेखक आप जी दी अवस्थानुसार उपरोक्त गुरवाक दा भाव आप ते घटन नहीं दे सकदे पर फिर भी "सलामु जबाबु दौवे करें, मुंढहु घुथा जाइ।" गुरवाक नूं मुख रखदे होए खामोश हो जांदे हन हां पर फेर भी दी ढीठ पुणां कीते बिनां रहि नहीं सकते। किऊकिं ऐसिआं हसतीआँ दा जीवन हनेरे विच जाणके पिआ रहिण देना घोर पाप समझदे हां।

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (च)

भला जे जीवन लिखन लगे खास खास प्रसंग छड्डु दिते जावन, तां फेर लिखीए की ? इन्हां प्रसंगा तो बिना लिखणा सबकुछ बिअरथ होवेगा।

भरोसा है मेरे इस ढीठ पुणे ते सारे महांपुरख खिमां द्रिशटी रखदे होए गुस्सा नहीं करणगे सगो आपले दरदा सेवक जान के किरपा दा पात्र बनाउणगे। जिस तरां कि श्री गुरु अमर दास जी महाराज दी हुकम अढूली करण करके भाई साहब बुदा जी बणे सन।

इनां जीवनां विच विशेष करके महांपुख्खां दीआं शकतीओं दा जिकर है, जिसनूं करामात कर कहिआ जांदा है। करामात नूं बहुत लोग कैहर करके कहिंदे हन।

जे सचमुच करामात कहर हैं तां महांपुरखां नूं वरतों विच नहीं लिआवनी चाहीदी। पर वरतों सारे लिआवंदे हन, भावें कोई थोड़ी, ते भावें बहुती। कोई रिशी, मुनी, अवतार, पैगम्बर, गुरु, पीर, फकीर, सिध,साध, संत, सिख ऐसा नहीं जिसदे पास होवे ते किसे ना किसे वेले वरती ना होवे, जे इह ठीक है तां करामात कैहर किवें होई? की सब कैहर करदे रहे हन, जां करदे हन ?

हां इक गल शकती सबंधी जो दसनी अती ज़रूरी है, उह इह है कि करामात नूं वरतों विच लिआवन वासते, महं पुरुश सुतंत्र हुँदै हन, चाहुन दसन चाहुन ना दसन, पर इह ज़रूरी गल है, कि जे दसदे हन तां अपने सरघालुआं नूं, जे वरतदे हन तां अपने पिआरिआं विच, जे कोई ज़ोर नाल देखना चाहे तां जान तां दे देवन तां भावें दे देवण, पर शकती नहीं दसदे, जैसा कि श्री गुरु तेग बहादर जी मखण शाह लुबाणे दा सैकड़े कोहां तो दूर बैठे करामात दुआरा डुब्बदा जहाज़ बचाऊंदे हन पर औरंगजेब बादशाह जो ज़ोर नाल करामात मंगदा है, सिर दे देंदे हन पर करामात नहीं दिंदे। सो निसचित सिधांत इह होइआ कि जिस नूं भी कुछ देखन दी लोड़ होवे जगिआसा भाव करके सच्चे दिलों सेवक बंणके देख सकदा है, पर ज़ोर नाल नहीं।

हां मैं फिर उपरले सिधांत वल्ल जांदा हां, कि जिस विच शकती है ही नहीं, उह महं पुख्ख किंवे होइआ ? किऊंकि सभ तो वड्डा लख्खण जिस नूं दुनिआ वेख के झुकदी है, उह शकती ही है। जिस विच शकती नहीं ऊसनु इंऊ जाणों जिवें बिना शास्त्रां दे सिपाही, जिस तो कोई लाभ हानी नहीं हो सकदी, इह शकती ही है

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (छ)

जो दुनिआं नूं महं पुरखां वल रुजू करदी है, ते रब दे होन दा पता हिंदी है, तां इह बुरी शै किवें होई? इस विशे ते दीरघ विचार करीए तां असल भेद नूं पा सकीदा है। सो किस तरां ?

साहिब करामात दो तरां दे हुंदे हन

(१) इक उह सजन जेहड़े साधना द्वारा शकती प्रापत ही इस वासते करदे हन कि दुनिआं नूं दिखा के वाह वाई लईए। उन्हां दा नुकता निगाह केवल दुनिआ विच वड्डे कहावन तक महदूद हुंदा है, रब दे मिलन दा शोक उक्का नूं नहीं हुंदा, ओह तां केवल इक तरां दी होर विद्या दी तव्यं इह बाकाइदा विद्या प्रापत करदे हन, ते फेर जदों सिधीआं प्रापत कर चुकदे हन ता जिवें होर विद्या प्रापत करके मनुख ऊस तो माइक (माया) लाभउठांदे हन, इह भी इसे तरां दा लाभ उठांउदे हन, वडे वडे माइआ धारीआं नु आपणीआं शकतीआं दिखाके वस करके उन्हां तो मान करांदे हन। मान भी इक नां तिआगे जाण वाला माइआ दा ही सरूप है, जो कि उन्हां शकती वानां दा आधार हुंदा है। चूकि इह साहिब करामात सिधी प्रापत ही मान दी प्रापती वासते करदे हन, इस वासते थोड़ी थोड़ी गल ते गुस्से राजी होके वर-सराप दे उर नाल दुनीआं तो अपनी पूजा कराउंदे हन। भाव इह भी इक तरां दा वपार ही करदे हन, जिस वासते

गुरु साहिब ने ऐसी करामात नूं "धिग सिधी धिग करामात" कहिआ है। ते वासतव विच इसे करामात नूं कैहर किहा जा सकदा है किउं कि शकती नूं कैहर विच आके अयोग वरतिआ जांदा है, ते अयोग वरतिआ तां अमृत भी विख समान हुंदा है। इस दी अयोग वरतों इउं समझो कि जिवें किसे तूं हीरा प्राप्त हो जावे पर ओह हीरा देके गाजरां खरीद के खा छट्टे । शकती इक हीरे दी निआई अमोलक

चीज़ है पर दुनिया दी वाह वाह वासते वरतो विच लिआउणां मानो गाजरां मुल्ल लैणीआं हन। इक कवी जी

ते फेर जो सिधी प्राप्त कर चुकवे हन ता जिवें होर विद्या प्रापत करके मनुख ऊस तो माइक (माया) लाम उवांचे हन, इह भी इसे तव्यं दक्ष लाभ उठाउंदे हन, वडे वडे माइआ घारीआं नु आपणीआं शकतीआं दिखाके वस करके उन्हां तो मान करांदे हन। मान भी इक नां तिआगे जाण वाला माइआ दा ही सरूप है, जो कि उन्हां शकती बानां वा आधार हुंका है। चूंकि इह साहिब करामात सिधी प्राप्त ही मान दी प्रापती वाब्सते करदे हन, रूस वासते थोड़ी थोड़ी गल ते गुस्से राजी होके वर-सराप दे उर नाल दुनीआं तो अपनी पूजा कराउंदे हन। भाव इह भी इक तरां का वपार ही करने हन, जिस वासते गुरु साहिब ने ऐसी करामात नूं "धिग सिधी धिग करामात" कहिआ है। ते वासतव विच इसे करामात नूं कैहर किहा जा सकदा है किउं कि शकती नूं कैहर विच आके अयोग वरतिआ जांदा है, ते अयोग वरतिआ तां अमृत भी विख समान हुंदा है। इस दी अयोग वरतों इउं समझो कि जिवें किसे नूं हीरा प्राप्त हो जावे पर ओह हीरा देके गाजरां खरीद के खा छट्टे। शकती इक हीरे दी निआई अमोलक चीज़ है पर दुनिया दी वाह वाह वासते वरतो विच लिआउणां मानो गाजरां मुल्ल लैणीआं हन। इक कवी जी लिख के हन कि -

"इक पैसे दाणे लेके चबिआं पेट दा कुछ चिर वासते आधार हो जांदा है पर दुनीआं की वाह वाह भावें मणां मूंही कट्टी कर लो, ओस नाल पेट दा कोई हिस्सा थोड़े तो थोड़े समें वाब्सते भी नहीं भरदा।" सगों इसनू अती हानी कारक दबिसिआ है यथा -

कबीर माइआ तजी त किआ भइआ जउ मानु तजिआं नहीं जाइ।

मानु मुनि मुनिवर गले मानु सभै कउ खाइ ॥

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (ज)

(२) दूसरे साहिब करामात उह हुंदे हन जिन्हां नूं रब्ब दी बदंगी करदे करदे सुत्ते ही सिष्य शक प्रापत हो जांदीआ हन। ऊहां दा नुकता निगाह शकतीआं प्रापत करना नहीं हुंदा, उन्हां दा नुकता निगाह बा नूं मिल पैण, ते वज़ीर मुसद्दी आपे अधीन हो जाण वांगू रब्ब नूं मिलण दा हुंदा है। इस वासते उठ इनब कुछ मुल्ल नहीं समझदे ते ना इन्हां दी परवाह ही करदे हन, किउंकि ओह सगों इन्हां नूं अपने नुकता निग खिसकाउण वाले जाणदे हन, पर उन्हां नूं इह दात अचित प्रापत हो जांदी है, अते ज़रूरी हुंदी है।

पहले दस्सिआ है कि ओनहां दा नुकता निगाह बहुत उच्चा हुंदा है ते इस करके इन्हां निक चीज़ा दी लौड़ या परवाह नहीं रखदे, सगों मुकती तक नूं भी पैर नाल ठुकरा दिंदे हन। यथा-

कई बैकुंठ नहीं लवै लागे । मुकति बपुड़ी भी गिंआनी तिआगे ॥

अते उह सिंघ दिस्सटे हुंदे हन, इस लई किसे ते राजी-गुरूसे भी नहीं हुंढे, पर ऊन्हां दी विच बदंगी करन करके सत्ता हुंदी है, ते सुते सिध मुख तो निकले बचन सत्य हुंदे हन। यथा-

(3) "करम खंड की बाणी जोर।"

(अ) भगत मुखे ते बोलदे से बचन हुवंदे।

अने उह सिंघ ब्रिन्सटे हुंदे हन, इब्स लई किसे ते राजी-गुरूसे भी नहीं हुंढे, पर ऊहां की रस विच बदंगी करन करके सत्ता हुंदी है, ते सुते सिध मुख तो निकले बचन सत्य हुंढे हन। यथा-

(3) "करम खंड की बाणी जोर।"

(अ) भगत मुखे ते बोलके से बचन हुवंदे ।

(३) साथ बचन अटलाघा ॥

(स) भगतां का बोलिआ प्रवाण है।

या इहो कहो कि इनहां दे बचन भविखयत हुंदे हन, अगम की वाचके कहिंदे हुन, उन्हां वल्लों वर या सराप नहीं हुंदा, जैसा कि गुरु वाक् है-

तिलंग मः १

"जैसी मैं आवै खसम की बाणी, तैसड़ा करी गिआन वे लालो ॥"

(देखो सारा शब्द)

तां ऐसी वरतों नूं कैहर नहीं कहि सकीदा, सो इह सारे भी दूसरी प्रकार के महांपुरख ठन् जि दे बचन अमोघ (अमोल) हन ।

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (झ)

जिस तरां गऊ दे थणां विच दुध ते लहु दोवें चीजा मौजूद हन, वच्छा दुध पीन्दा है ते चिचड़ लहू पीदा है, इस विच गऊ दा उका ही कोई दोश नहीं, इसे तरा संता दी रसना मानो गऊ है ते जगिआसू वच्छे हन, ते दुशट पुरश चिचड़ हन । जगिआसू शकती सम्पन्न पुरशा नूं प्रसन्न करके वर रुप दुध पीदे हन, ते दुशट पुरश नराज करके सराप रुपी लहू प्रापत करदे हन । इह सभ कुछ करदे होए भी आप सदा ही निरलेप रहिंदे हन। यथा -

"बाहरि सूतु सगल सिउ मउला, अलिपतु रहउ जैसे जल महि कउला।"

अते

"ब्रहम गिआनी सदा अते निरलेप, जैसे जल महि कमल अलेप ॥"

इक तो वद प्रसंगा विच महांपुरखां दे बचना द्वारा जगिआसूआं नूं पुत्तरां दी प्रापती दा जिकर आया है। अते कई कुबादी पुरश तरक करदे देखे सुने गए हन के “उह। संता दे पास ही पुत्तर पए हन”, जे वादी पुरुशां दे वाद वल्ल ही तक्किए, तद तां साडे पास इस दा उत्तर ही कोई नहीं। किउंकि वादी पुरश ता परमेश्वर विच भी दोश अरपन कर दिंदे हन। पर जे कर कोई सच्चे दिलों उत्तर लैके संतुष्ट होणा चाहे ता इतना ही कहिणा काफी है कि -

"संत की महिमा बेद न जाणे।" ते "संत राम है एकौ" ते "चार पदारथ जेको मांगे, साध जना की सेवा लागे।"

जेहड़े मुकती तक्क दे दाते हो सकदे हन कि उह इह तुच्छ पदारथ नहीं दे सकदे ? फिर गुरु घर विच गुरु साहिबां ने मिसाल भी कायम कर दीती है। श्री गुरु अरजन देव जी आप हर तरहां समरथ सन, पर देखो माता गंगाजी दे याचना करण उते संत भाई बुढ़ा जी दवारा श्री गुरु हरगोबिन्द जी दा आवणा प्रगट कराइआ आदि:-

तदे ही तां भाई गुरदास जी ने उचारिआ है:-

कारन करन समरथ्य है, साध संगति दा करे कराइआ।

भरे भंडार दातार है, साध संगति दा देइ दिवाइआ ।।।

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (ज)

बेनतीआं

१) भावें लेखक ने जो प्रसंग लिखे हन निसचित हन। पर फिर भी लेखक दी अपनी जिमेवारी उथे घट जांदी है जिथे कि प्रसंग दस्सन वाले सज्जना दे पूरे पूरे पते ते नाम दिते जाण। कईआं तो तां लेखक ने कलमी बिआन प्रापत कीते होए हन, ते उनां दे नाम पते प्रसंगा विच दरज कर दिते हन।

२) सज्जन जन लेखक दी कलम वल, या प्रसंग दे अड़ंग-बड़ंग या तरतीब आदि या छंद-बंद दे दोशां या जाती दोशां वल्ल न तक्कन, सगों केवल सिधांत वल तक्कन। किउंकि सज्जनपुरख गऊ दे रूप रंग नूं नही तकिआ करदे, उसदे दिते दूध दे गुणां नूं तक्क के पींदे ते लाभ उठाउंदे हन। यथा-

"सिआम सुरभि पै विशद अति गुणद करें तहिपान।"

ते गुरु बचन भी है-

"सांझ करीजै गुणह केरी छोडि अवगण चलिए॥"

सो भरोसा है सज्जन जनगुणग्राही बणनगे, हां ! जे कोई ऐसी भुल्ल होवे जो ठीक करन योग होवे तो सज्जन पुरशां दे पता करन ते दूजी वार छपन वेले धनवाद सहित ठीक कीती जावेगी।

३) जिनां सज्जनां पास हड्डी वापरे या सुणे-दस्से ते डिठे होए कोई होर प्रसंग महं पुरखां दे होण ओह किरपा करके जबानी या कलम राहीं दसन दी किरपालता करन तांकि दूजी वारी छपन वेले ओह भी दरज कर लाए जाण।

४) सारे दे सारे महं पुरखां दे सतसंगी तां अनेक हन जिन्हां दा सानू पता लग गिआ है, उन्हां दे नाम असां लिखणों संकोच नहीं कीता, पर जिनां दा सानूं पता नहीं लगा उन्हां तो असी खिमां (माफी) मंगदे हां ते एह बेनती करदे हां कि असी दिलों इह चाहुंदे हां कि जितने भी महंपुरखां ते उन्हां दे जितने भी सतसंगी हन उन्हां सारिओं नूं इके लड़ी विच परोता जावे। आप सजना नूं चाहीदा है कि जे आप हो या नहीं, या आप नूं पता है कि इस घर के फलाणे महंपुरखा दा फलाणा सत्संगी है ते, इस ग्रन्थ विच उसदा नाम नहीं आईआ तां सानूं पता करो, असी रजिस्टर विच नाम दरज कर लवांगे, ते दूसरी वार ग्रन्थ छप्पण वेले या अगला हिस्सा छप्पण ते योग थां ते नाम छाप देवांगें जिस करके एक तरां दा संगठन हो जावेगा।

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (ट)

|| दोहरा ||

युग निधि निधि ससि बिक्रमी, भाद्रों मास पुनीत ।ससज वार कर - वेद मिति, ग्रन्थ इती सुभ रीत
॥ इक नौ तिन्न सत्त ईसवी, मास सतम्बर जान ।छप्प के ग्रन्थ तिआर भा, ससि सुत दिवान ॥

१६ सतिगुर प्रसादि ॥

साधु आत्मा सिंह 'रेण' कृत पंजाबी ग्रन्थ

श्री हंस चमत्कार

हिन्दी अनुवाद

पहला खंड आरम्भ

॥ मंगलम ॥

प्रीति अमृत अनेजा

१६ सतिगुर प्रसादि।।

मंगलम

कुंडलीआ छंद

सति' चित्त आनंद रूप प्रति करों प्रिथम परणाम।कलु महि" नानक नाम जहिं पुरा राम घनिशाम ।। पुरा राम घनिशाम, कलू धरि दस अवतारी। पुन भार पानप दास, वही भे दास भिखारी ।। नरवड़ प्रगटे आन, बाबा ठाकुर अगम गति। जग तारन कारन भए, काइ आनंद चित्त सति ।।

॥ दोहरा ॥

विघन विनासन सतिगुरु, ठाकुरजी करि बंद ।। नमसकार जुग चरन पर, गाथ करों सवै छंद।।

---

१ नाम तो रहित २ चेतन ३ प्रसन्न ४ पहिले ५ नमस्कार ६ कलजुग ७ विच ८ पैहला ९ श्री राम जी १० श्री क्रिश्न जी ११ धारन कीते १२ फेर १३ होए १४ जो जाणी ना जा सके १५ मर्यादा १६ सीर १७ नाम करन वाले १८ हथ्य जोड़ के यानि नमस्कार १९ दोहां २० कथा करदो हां २१ मै

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (०१)

घनाछरी छंद

क्रिपा के करया है कि नाम के दिव्या हैं, कि धाम के बस्सया है कि करूणा की खान है
यम को लज्जया है कि गम को मिटया हैं, कि मोख के दिवया है जिउं बामन को दान है
पापन के खापबे को पुंनन के थापब को, सागर के लाघबे को, केवट समान है
रेण जैसे बामी कामी पापनि उबारबे" को, श्री बाबा ठाकुरजी, भव मैं जिउं यान है

॥ सवैया ॥

क्रोध करे निरबोध सही नर, काम करे निर काम नरं ।मोह के संग ते ध्रोह वधे चित्त, लोभ के संग ते
खोभ घरं ॥ संग हंकार विकार बधावत, दोश, अरोपत बीच हरं ।रेण कवी कहि तयाग करे इन, होइ
नमो तहि पुरश वरं ॥

॥ दोहरा ॥

अनहद नाद स्त्रोत जिन, ऐसे पावन सन्त । रेण करे तिन बंदना, संख्या-रहित ४० अनन्त ॥

॥ दोहरा ॥

भई जोत प्रगट जिनहे, ऐसे ब्रह्म सवरूप । नमसकार तिन रेण की, काढ़ अंध ते कूप ॥

१करन वाले २देण वाले श्रसा देण वाले ४किरपा दी ५खाणी ६शरमिन्दा करन वाले ७चिंता ८दूर करन
वाले ९मुक्ति १०पापां नूं ११ खपाउण नूं १२पुन्नां दे-पुष्ट १३ असथापन करता १४ संसार समंदर १५
लंघन नं १६ मलाह १७सरीखे वरगे १८टेढ़ा १९ कामातुर २०पापीआं नूं २१ बचाउण लई २२संसार २३
जहाज २४मूरस २५निसचे करके २६कामातर होणा २७-२८ निकम्मा २९ छल ३० मन विच ३१दुख
३२धारदा है ३३वधाउदा है ३४ लगाउदा है ३५ रब नूं भी ३६सेश्ट ३७शब्द ३८ सुनदे हन ३९पवित्र ४०
गिनती ४१बिअंत ४२अन्धे ४३खूह

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (०२)

॥ दोहरा ॥

विघन काबय के दूर हवै, ग्रन्थ समापत होई । केवल यह अभिलाख है, दुतीआ और न कोई ॥

संखेप जीवन

घनाछरी छंद

बाबाजी ने करे सभ कौतक अजाबा जग्ग, नानक गुरु ने यथा काबा जाइ फेरिआ धार के कलंदर दा रूप निज दास द्वारं मरकट, औ भालू अजा निज कर प्रेरिआ पऊए निज पाद के अकास में, भरमाए ऐसे, छान" को उठाइ असंतबोल" जाइ गेरिआ तोड़बों हंकार को सरदार को संघार कर, निंदका दा मुख करि कारख लबेरिआ

प्रसंग प्रारंभ - बिजै दंडक छंद

मांझा देश ते जिले लाहौर अंदर, नगर नरवड़ है इक मशहूर सज्जनों राजे नल ने ऐहुं वसाइआ सी, हैसी राजिआं चों चन्द नूर सज्जनों महाभारत दे विच प्रसंग उसदा, जुआ खेड जिस डोबिया पूर सज्जनों रेण भाग जागे कैसे पिंड दे ने, नरवड़ साहिब कहिंदे नेड़े, दूर सज्जनों

भागां वाले ऐसे नरवड़ पिंड अंदर, इक उत्तम जगयासु निवास रक्खे करदा पाठ सुखमनी दा प्रेम करके, गुरुनानक दे दरशन दी आस रक्खे ऐही कामना मिले कोई आप गुरमुख, जेहड़ा गुरु दे चरणां दे पास रक्खे वसावा सिंह सी नाम पिआरड़े दा, हरदम पापां तों दिलें त्रास रक्खे

१कविता २होवण ३इच्छा ४दूसरी ५चरित्र, चमत्कार६ असचरन ७ जिवें ८ आपना ९दरवाजे ने, १० बांदर ११ और १२ रिछा १३ बकरी १४ आपणे १५हथ्य १६चरणा १७ भवाए १८ छप्पर १९ इक शहर दा नाम है २०तोड़ना २१नास २२ मूह २३ कालख

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद(०३)

कवियो वाच

जदो प्रेम कीता बहबल पिआरड़े दे, खिच्च पई पिआरे नूं आइआ छेती, सांई दास ते रामों दे प्रेम ते जिउं, हर गोबिन्द गुरु घरी बुलाइआ छेती, भाग भरी दे प्रेम कशमीर अंदर, सिलां वट्टियां विच दुड़ाइआ छेती, शिवनाभ दा प्रेम जिउं देख केते, नानक गुरु जी आप जिउं धाइआ छेती, अमरदास दे प्रेम नूं गुरु अंगद, अपने आप नूं जिवें प्रगटाइआ छेती

राम रूप विच भीलनी द्वार जाके, वाज मार जिउं आप बुलाइआ छेती, क्रिशनरूप विच बिदर दे घरी जाके, बिना लूण दे साग जिउं खाइआ छेती, जिथे जिथे भी प्रेम ने खिच्च पाई, बध्था ओथे ही प्रेम दा धाइआ छेती, रेण मुझ ते भी करी मेहर बाबा, जिवें होरनां नूं चरनी लाइआ छेती

श्री बाबा ठाकुर जी ने प्रगट होके दरशन देणे

सचखण्डवासी उसदा प्रेम जाता, बारां बरस दे रूप नूं धार करके, हथ्थ दे विच चिमटा सिर ते केस कक्के, सुन्दर रूप सरूप मुरारि करके सम्मत सौ अठारां तीह बिक्रमी सी, निज प्रेमी दा प्रेम चितार करके, रेण नगर दी गली विच होए प्रगट, वसावा सिंह दा नाम पुकार करके

श्री बाबा ठाकुर जी ने प्रगट होके दरशन देणे

चानचक्क चबारे ते चढ़े आ के, जिथे प्रेम दे विच गलतान बैठा, बार बार अक्खा मल मल देखदा ए, भुल्ल सुपन प्रतख दा गयान बैठा, आदर उठ कीता रिखी जान मन विच, पूजा खोड़स दा करके समान बैठा

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (०४)

वेख रूप अनूप असचरज होइआ, संतकुमार दा ला अनुमान बैठा, मात लोक आए मैनुं देण दरशन, पक्का एहो निसचा दिल विच ठान बैठा, कड्ढ अन्दरों पलंग विछा दित्ता, बैठे बिदर जिउं घरीं भगवान बैठा

बाबा वसावा सिंघ जी दी याचनां

अते

श्री बाबा ठाकुर जी ने नाम दान बखशणा

नाल प्रेम दे बचन बिलास कीते, कीती याचना नाम ते दान दीए, बाबे मेहर कीती योग जान केते, दस्सी जुगत जो योग कमान दीए, सिद्धी सड़क दस्सी सच्चखण्ड वाली, डंडी नहीं दस्सी भुल्ल जान दीए, सारे राह दे पते निशान दस्से, अनहद आदि जों शबद सुणान दीए, आप सामणे बैठ बिठा लउ सानुं, सारी विधी जिउं धिआन लगान दीए, रेण नज़र दे नाल निहाल कीता, रखी लौड़ न मेहनत कमान दीए

बाबा वसावा सिंघ जी दी दशा

सवाती बूंद जिउं सिप्प लै बैठ जावे, चात्रिक बूंद लै जिवें त्रिपताउंदाए, बद्दल देख प्रसन्न जिउं मोर होवे, जिवें चंद चकोर नूं भाउंदाए, कमल देख खिड़दा जिवें सूरताई, भौरा कमल ते जिवें भरमाउंदाए, ओस समे दा हाल न कथन होवे, गूंगा पी अंम्रित न दसाउंदाए

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (०५)

श्रीबाबा ठाकुरजी महाराज दा बाबा वसावासिंघ जी नूं निहाल करके विदा होणां

अते

पऊड़िआं दी जोड़ी बखशनी

सचखंडवासी बाबा जान लगगा, अपने पिआरें दा वेख के हाल सारा ,जाता बिरहा ना झल्ल सी इह साडा, चंगी तरहां इह करके खयाल सारा, पऊए चरणां दे देके बचन कीता, बचन नाल ही कीआ निहाल सारा,यादगार रखो साडी पास अपने, करसन दूर इह रंज मलाल सारा

कुछकु पऊड़िआं दा प्रसंग

अज्ज तीक चुबारे विच्च इक पऊआ, सोभनीक है करो दीदार वीरो, पावन बाबे दे चरनां दे नाल होइआ, बेड़ा रूप हो करेगा पार वीरो, ऐपर शरधा दे बिनां ना दरस करनां, शरधा मूल ते होर सभ डार वीरों, रेण दूसरे पऊए दा हाल दस्सां, किधर गिआ उस कीती की कार वीरो

पऊए ने असंतबोल विच छप्पर पहुंचावनां

इक वार दा सुनों प्रसंग वीरो, बैठे बाबाजी अन्तर धिआन होए, असंतबोल अन्दर डिट्टी निज संगत नाल,
धुप जिन दुखी प्रान होए, नेत्तर खोहल के दास नूं बचन कीता, भेजो पऊआ जो झट्ट रवान होए ,छप्पर
बाहर दा दे पहुंचा उथ्थे, सिख दुखी दुखी मेरी जान होए

---

१ विछोड़ा २ टाहण ३ दास-इसदा नाम बाबा राम पिआरा सी

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (०६)

उत्तर बाबा राम पयारा जी

हथ जोड़ के दास ने अरज कीती, ऐस जोड़ी नूं नहीं विछोड़ बाबा, आके संगता करन दीदार इसदा, ऐसे
वासते ऐस दी लौड़ बाबा, नगर विच जो पऊइआं दी इक जोड़ी, ओनां विच्चो जावें इक दौड़ बाबा, रेण
हुकम दे नाल पहुंचाए उथे, जिथे छंनदी बहुत है लौड़ बाबा

कवि उवाच

पऊआं कहां या भरत दा बान आंखा, लैके उडिआ छन्न अकास* अंदर, पऊआं धुरो करदा ऐहो कार
आईआ, छडिआ सिध्दा दे नहीं धरवास अंदर, छिनक इक दे विच्च लै जा पहुँचा, देस रूस दे कीता
निवास अंदर, असंतबोल ते छप्पर न गल्ल कोई, शेशनाग दा रहे त्रास अंदर

श्री महाराज बाबा ठाकुर जी दा निवास असथान

नगर नखड़ कोलों चड़दी दिशा अंदर, झंगी जंड करीरां दी बहुत भारी, जिस विंच सूरज दी किरन ना
पहुंच सक्के, चोर यार करदे जाके चोर यारी, बंदे रब्ब दे बंदगी करन उथे, थाउं जोगीआं नूं लग्गे बहुत
पिआरी, रेण जाण निरजन बाबे कीआ डेरा, विच भजन गुजारदे उमर सारी वसावासिंघ जी बिना ना
कोई जाणे, ना कोई आंवदा ते ना कोई जांवदा सी बाबा पौण दा करे अहार हरदम, अन्न दुध आदिक ना
कुछ खांवदा सी कदी झंगीओं निकल के सैर करदा, जदों आपनी मौज विच आंवदा सी, रेण नहीं तां
माणदा रंग आतम, खुशी आपणी विच्च रहांवदा सी

---

१ छप्पर २ हौसला ३ इक देस दा नाम है ४ डर

* पुरानी गल होवे ता आज तक नगर निवासी कहिदें हन कि अमुकी गल उदों दी है, जदों बाबे ने छप्पर उडाड़िआ सी

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (०७)

बाबा सरूप सिंघ जी दा उद्धार

वसावा सिंघ बाबे दा उद्धार करके, सरूप सिंघ जी वल्ल धिआन कीता, बैठा खूह ते गाह दी चलाउंदा, सी बैल गाहदीओं खोहल हैरान कीता, बंलद पए पैली मोड़े, जट्ट जाके जोड़ खूह नूं फेर खान कीता, अजे इक अध्धा फेरा नहीं आईआ, खोहल बाबे ने फेर खपान कीता

दवैआ छंद

माइआ ऐसी पाई बाबे, सुरत नूं रही टिकाणे। बाबा जी चा बलद खोहलदे, ओह जाके फिर आणें ॥
आके जोड़े जोड़ तुरावे, बाबा जी चा खोलण। ना कुछ मुहों ओहों बोले, ना बाबाजी बोलण ॥१॥

पहिर इक इह माईआ रख्खी, माइआ खिच्ची बाबे । सरूप सिंघ आ बाबा फड़िआ, घूरे देवें दाबे । रस्से पैड़े कट्टे करके, हथ्थ पैर चा बन्ने । बन्न बन्ना के बाबे तांई, रख्ख दित्ता इक बन्ने ॥२॥

छापे बालण कट्टा करके, उस नूं अगग लगाई।

जदों जवाला लाट निकाली, बाबा दीआ वगाई।

मूहों सिंघ सरूप आखदा, साधा मगरों लैह जा। आके पैहर खपाइआ मैनुं, बहुत कहिआ मैं रैह जा ॥३॥

---

१ माया २ अकल ३ लिआवे ४ पासे

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (०८)

हुण तां शांति होई तैनुं, सड़के होइउ ढेरी। सड़ने दा दुख काहनूं, वेहदों जे मन्नदों कुछ मेरी। सड़के लकड़ी राख होई, जद जट्ट खड़ा पछुतावे। मैं इह कीआ कुकरम अनोखा, हथ्थ नहीं कुछ आवे ॥४॥

पसचाताप करे ते झूरे, अख्ख चुक्क की डिट्टा । पऊइआं ते चल्ल बाबा आवे, बचन बोलदा मिट्टा। चिंता करो नहीं तुम कोई, हम को खेद न कोई। जो हम करें होवे है सोई, तुमरा कीया न होई ॥५॥

करामात जद डिट्टी ऐसी, चरना उते ढट्टा। आखे बखश लो जी बाबा, जे है मैथों तुट्टा। बाबा जी ने चा गल लाइआ, करके किरपा द्विशटी। कुंदन वागों शुध चा कीता, जो सी अतसे भ्रिशटी ॥६॥

श्री महाराज बाबा ठाकुरजी दा आपणे आसन तूं मुड़ना, ते बाबा सरूप सिंघजी ने मगर लग तुरना अते बाबाजी ने सरूप सिंघ नूं निहाल करना - बिजै दंडक छंद

वेख वेख असचरज असचरज होईआ, मानो भुल्ल असचरज असचरज होवे, बाबा मुड़न लगा आसन आपने नूं, तुरिआ मगर सैदाअ जिउं मरज़ होवे, बाबा मोड़दा मुड़े ना मोड़िआं उह, लैहण दार मानों जिवें करज़ होवे, रेण जाणिआ सी लैहणदार बाबे, देईए लाह सिर तों जेहड़ा फरज़ होवे, बाबे मेहर कीती नाम दान देके, सवै सरूप विच सिंघ सरूप कीता

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (०९)

मानो जनम दे रंक नूं पकड़ करके, लौकां चौंदा दा आपने भूप कीता, जूऐ विच जो जनम नूं हार बैठा, दाअ जित्तन वाला विच्च जूप कीता, रेण पापां रूपी कुश्ट दूर करके, पुन्न वान सरूप अनूप कीता

बिजै दंडक छंद

लगन बाबे दे चरनां दी लगी ऐसी, घर बार खाणा पीणा भुल्ल गिआ, शमां वांग पतंग तिआगदा नां, भौरा जिवें होवे वेखन फुल्ल गिआ, सूरज आन चड़िआ मानो प्रेम वाला, दीवा लोक तेल जकर गुल्ल गिआ, शीशा विशे विकारां दा चूर होके, कुल दा कुल सनेह दा डुल्ल गिआ

बाबा सरूपसिंघ नूं भुख ने तंग करना ते बाबाजी ने उसनूं घर जाण लई प्रेरणा

सरूप सिंघ नूं भुख ने तंग कीता, कहिआ बाबे ने घर नूं जाओ भाई, बिनां अन्न ना रहन प्रान इसथित, कलू काल दाइ हप्रभाओ भाई, अगन बुझ जांदी नहीं रहे बलदी, बालण होर ना जे करां पाओ भाई, रेण जाओ ते करो आराम घर विच, मन चाहे तां फेर भी आओ भाई

बाबा सरूप सिंघ जी दा कथन

हथ्य जोड़ के बेनती खड़ा करदा, इह है गाथ प्रसिध संसार बाबा, योगी अते राजे नहीं बणन मितर, नाले इसत्री करन शुमार बाबा ,अगनी जल भी नाल रला कहिंदे, करिऐ इन्हां दा नहीं इतबार बाबा, आवन जान दा पता न देन जोगी, जंगल गए ही जान सिधार बाबा, फेर ढूंडिआं मूल न लभदे ने, कई रहे ने टकरां मार बाबा

---

१ गरीब २ राजा ३ जूआ ४ भंवरा ५ खानदान दा ६ सारे दा सारा ७ मोह जांदा रिहा

मी हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (१०)

जिवें होर सारी किरपा आप कीती, करो भुख भी दूर अजार बाबा, भुख देई नां दुख ना जां ऐथों, चरनां विच ही रहां सरशार बाबा ,मच्छी वांग नहीं तड़प के जान देसां, जेकर परत न होइआ दीदार बाबा,रेण उठके * घरां नूं तदों जासां, सच्चा आप जे करो इकरार बाबा

उत्तर श्री बाबा ठाकुर जी महाराज

भाई सिंघ सरूप जी घरी जाओ, करीओ भोजन ते होर विवहार जाके, घर विच्च इसत्री पुत्तर कुटम्ब सारा, करो उन्हां दे नाल पयार जाके, सानूं मिलो आके ऐसे थांउ उत्ते, सिमरन घर विच्च करो करतार जाके, रेण दे धीरज ऐस तरां बाबे, घर नूं तोरिआ करे सम्भार जाके

दूसरे दिन बाबा सरूप सिंघ जी ने श्री बाबा ठाकुरजी महाराज दे दरशन नूं आवना ते आपने मित्तर चरनदास खत्री नूं नाल आवण लई प्रेरणा ते उसदा भी श्री बाबाजी दे चरणां विच्च पुजना

सिंघ सरूप जां घरां तो मुड़न लगा, खत्री उस दा ओथे इक्क यार हैसी, चरन दास सी नाम उस पिआरड़े दा, ऊस दे नाल इस दिली पयार हैसी, जाके आखिआ मित्रा कम्म बणिआं, कल्ल देखिआ इक दीदार हैसी ,तूं भी चल्ल के ओसदा दरस कर लै, लिखया भाग जे तेरे करतार हैसी

* सिंघ सरूप जी दा पिंड थैहपुरा सी जो इस झंगी तो दो मील पूरब बल्ल है।

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (११)

बाबा सरूपसिंघ जी ने चरनदास दे पास बाबाजी दा सरूप कथन करना

सुंदर रूप की संत दा कहां मित्तरा, कोई घल्लिआ ओह सिरजनहार है ,जी साडे तारने नूं संत रूप धर के, मानो आ गिआ आप करतार है जी ,बारां बरस दी उमर ते नूर बरसे, मानो जिस तरां क्रिशन मुरार है जी, या ओह दुशट ते पापीआं दण्ड देवन, विशनूं धारिआ आप अवतार है जी

या ओह मात कुशलया जाइआ ऐ, रामचंद या भरत कुमार है जी ,राम गए बनबास जद भरत मगरे, उहो रूप ते उहों नुहार है जी, या मैं होर खिआल इक दस्सदा हां, ब्रहमां पुत्त उह संत कुमार है जी, है खयाल आइआ या सुखदेव स्वामी, घरों चल्लिआ जनम दे सार है जी

या ओह ध्रू है, तप फिर करन खातर, आ गिआ फिर विच्च संसार है जी, सिर ते बौरीआं कक्कीआं सोहंदीआं ने, लक्क लई कुपीन ही धार है जी, चल्लो चल्ल के संत दे दरस कर लौ, दरशन नाल ही करे उद्धार है जी, मेरे सीस ते पाप दी पंड हैसी, नज़र नाल लाहिआ सारा भार है जी

बहुता दूर नाही नेड़े रहे ऐथे, वाट कुल ही पैलीआं चार है जी, सुण के दास जो चरन दे भाग जागे, झटपट हो गिआ तिआर है जी ,दोवें आए झंगी अंदर देख बाबा, भेंटा रख दीती नमसकार है जी, रेण बैठीआं कुछ न वकत होइआ, रचिआ कौतक इक अपर अपार है जी

---

१ क्रिशन भगवान २भाव- विश्नु रूप धार के ते पापीआं नू दण्ड देना ३ ढेर, भार

'श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (१२)

श्री बाबा ठाकरजी महाराज ने बाबा सरूपसिंघ ते प्रेमी चरनदास नूं असचरज कौतक दिखावनां

अचनचेत ही बाबे ने बचन कीता, कहिआं दोहां दे ताई पुकार करके, देखो मगर अपने कैसा शैहर सुंदर, करो सैर तुम भली प्रकार करके, परत देख के शैहर असचरज होए, सोभा बहुत है महिल मुनार करके ,चौक विच्च डिट्टा खड़े आप ताई, पास बाबा जी खड़े पयार करके, जिधर वेखदे वेख हैरान रहिंदे, नहीं रज्जदे सैर बाज़ार करके, सीतलमंद सुगंध दी पौण चले, सबज़ा ज़ार है बाग बहार करके ,किधरे मोतीआ किते गुलाब खिड़िआ, चम्बा किते खिड़िआ गुलानार करके ,किते अंब, आडू, केले लटकदे ने, डली झुकी अनार दे भार करके ,किधरे कोइलां खुशी दे गीत गावन, बुलबुल बोलदी राग मल्हार करके, तोते खावंदे फल, न कोई रोके, भौरै फुल्ला ते फिरन गुंजार करके, प्रिथवी लई चादर सबज़ रंग बैनी, वहुटी नवीं जिउं बहे सिंगार करके, चारे तरफ ही खिड़ी बसंत दिस्से, जीव जंत सभ खुशी बहार करके ,लगे सोनिआ दे ढेर हट्टीआं ते, डर रता नां चोर चकार करके ,तोल बोल दे विच न फरक रखवन, सुख भोगदे धरम विवहार करके, कोई ठगी दा नाम नां जाणदाए, खावण सभ ही धरम दी कार करके, कोई किसे दे नाल न लड़े झगड़े, कोई फिरे नां फेर इकरार करक, कोई मास शराब न खाए पीवे, खुश होंवदे अन्न अहार करके, माइआ वासते बने न कोई पंडित, ग्रंथ पढ़न सभ अपनी विचार करके, स्रोतागन विद्वान दी करन सेवा, नम्र रहिन हरदम शरधा धार करके, किधरे खड़े मंदर, किधरे धरमसाला, धरमी बैठे ने धरम प्रचार करके

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (१३)

रागी सिंघ जी कीरतन करन किधरे, भोग पै रिहा आसा दी वार करके कथा करन महातमा संत किधरे, दस्स रहे ने जगत आसार करके किधरे सिंघ जी खड़े वख्यान करदे, खोल दसदे गुरु उपकार करके पंडित किते बैठे ग्रंथ रख अगगे, करदे कथा पुरान विसथार करके किधरे कथा रामाइण दी करन रोडे, आए राम अवतार जिउं धार करके किधरे करन जगयासू प्रशंन बैठे, उत्तर देन विद्ववान सवार करके किधरे साध समाधीआं ला बैठे, पंजां दूतां नूं अंदरो मार करके धयान योग दा करन अभिआस किधरे, खीवे हो रहे अनहद झुनकार करके ग्रिहसती जावदें किते ने थाल चाई, भोजन संता नूं देन तयार करके कई जांवदे ने दूध देने लोटे, तयागी अन्न जो रहिन अधार करके किधरे दानीआ दे लंगर चल्लदे ने,

बिहगम जावदें जिथों अहार करके दया धरम दा रहे निवास हरदम, हिंसा आदि विकार निवार करके लोभ मोह नूं कोई ना जानदांए, निंदा नाम ही नहीं विकार करके दैवी गुणां दा सभ निवास दिस्से, गुण आसुरी गए मानो हार करके राज धरम दा करे भूपाल ऐथे, होवे दुखी ना कोई सरकार करके मेरे खिआल विच राम दा राज होसी, बहुत देखिआ सोच विचार करके रेण बुधि दे विच न ज़ोर ऐनां, दस्सा नगर दी सिफ्त शुमार करके

कवी उवाच रासमंडल

डिठ्ठा होर की इस सोहणे शैहर अंदर, विच्च चौकदे क्रिशन दी रास होवे किधरे किशन बनिआ किधरे राधका है, किधरे क्रिशन दा बनिआ कोई दास व किधरे भूप दा रूप अनूप बनिआं, किधरे हो रिहा राजइजलास होवे किधरे बिदर दा रूप ते पास नारी, छिल्लड़ केलिआं दे हिंदी पास होवे किधरे तंदल सुदामें तों क्रिशन खोहवे, करदी रूकमणी हास बिलास होवे

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (१४)

किधरे गोपीआं दे नाल क्रिशन होवे, किधरे कंस दा कर रिहा नास होवे किधरे रात सारी भौंदा रिहा नारद, वेख वेख के चलत निरास होवे किधरे द्रोपदी दी रखे लाज जाके, किधरे आन रचिआ मंडल रास होवे बका दैत दा किधरे बध होवे, किधरे काली दे दिले त्रास होवे किधरे मक्खन दे चोर दी जै होवे, किधरे चीर लै ब्रिछ निवास होवे किधरे मात जसोधां खिझांवदा ऐ, तोड़ मटकीआं खड़ा ना पास होवे कदे गोपीआं दे पासो लोप होवे, फौरन गोपीआं चित्त उदास होवे हुंडी भगत दी किते जा तारदा ऐ, सावल शाह बनिआं जा के खास होवे किधरे अरजन नूं करे उपदेश गीता, कथन हो रिहा योग सनयास होवे किधरे चरन धोवे अपने पिआरिआं दे, बालमीक दा कर रिहा पास होवे दस्से जग संपूरनां तदो होसी, धुनी घंटे दी जदों अकास होवे कदी रूस सिंगार ते बीर किधरे, किधरे रौद्र दा आन प्रकाश होवे किधरे करूणा दे बीभतस शांत किधरे, किधरे आन प्रगट रसहासय होवे ऐसी रास नूं वेख प्रसन्न होऐ, खड़े रहे जिओं बिना कोई सांस होवे रेण कलम दे नाल तू करी कीरत, दूर तेरी जो जमां दी फास होवे

श्री बाबा ठाकुरजी महाराज ने रास वेख प्रसन्न हो के पंज रूपए बखशणे

बैत

बाबे देख के रास नूं खुशी कीती, ओघर भगतीआ भी मंगण आइआ ऐ खोली कन्नीओं आपने कुछ माइआ, आइआं चित्त सो हथ्य फड़ाइआ ऐ जदों बैठके समां कुछ रास वेखी, नींद आण के ते ज़ोर

पाइआ ऐ आइ ऊंघ जा खोलके अख्ख वेखण, ना उह शैहर ना रास न छाइआ ऐ

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (१५)

होर कौतक

बैठे वकत दुपैहर दा आण होइआ, दोहां प्रेमीआं भुख सतान लग्गी पास बाबे दा छडना भांवदा नां, देही दोहां दी आण कुमलाण लग्गी कैहंदे बाबा जी छकण नूं कुच्छ देवो, नहीं तां जान जे असां दी जाण लग्गी रेण वांग मरदाने दे कौतकी ने, लाई भुख जो प्रान सुकान लग्गी

बाबाजी दा बचन

जाओ सामहणी झाड़ी दे पास देखो, ओथे संत इक लाई ध्यान बैठा करो याचना भोजन दी जा ओथे, तुसां वासते लई पकवान बैठा गए आगिआ मन्न महातमां दी, डिट्टा ठीक जाके गुणवान बैठा हथ्थ जोड़के भोजन दी मंग कीती, अगगों झिड़किआ लई ना नान' बैठा क्रिशन भेजिआ जिवें गवालिआं नूं, पाड़े अगगे जिउं सहित अभिमान बैठा मरदाना गिआ जिउं परबतों लैण पाणी, अगगो पिर जिउं रख त्रान बैठा भोजन रिहा किधरे अगगो दे गाली, डंडे मारन नूं दत्त' हो आन बैठा दोहां भज्ज के आणके अरज़ कीती, संत नहीं जम कढण नूं प्रान बैठा

बाबा जी ने सनेहां देके दोहां प्रेमिआं नूं दुबारा भेजणा

जाओ फेर ते दिओ संदेस सादा, दस्सो गंगा दे छेतर दा हाल जाके गड़वी कुध दी इक ते पा पेड़े, देह दिओ इह करो सवाल जाके गंगा छेतर जो अज्ज सवेर वेले, लै आए जो असां दे नाल जाके रेण असां दा जाइके नाम लैणा, बिनां नाम तों होसौं पामाल जाके

---

१ भोजन २ तयार ३ खराब, शरमिंदा

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (१६)

दोहां ने जाके बाबेजी दा संदेसा देके पेड़े ते दुध छकणा

जाके दित्ता संदेस जा संत जी नूं, संता आदर दे नाल बैठाइआ सी पा पेड़े ते दुध दी इक गड़वी, अग्गे दोहां दे झट टिकाइआ सी खा पी के होऐ प्रसन्न दोवें, मूर्हो राम दा नाम घिआइआ सी रेण बाबे दे पास प्रसंग सारा, हथ जोड़ के आण सुणाइआ सी

कविओ वाच

ऐसे तरां अनेक ही करन कौतक, वेख वेख के लोक हैरान हुंदे परम हंस प्रतीत से कदे हुंदे, कदे सहित केसां सवाधान हुंदे कड़े पहिन के बैठदे पशम रेशम, कदे नंगिआ दे दरशन आन हुंदे रेण रूप सुदामें दा कदे ठाकुर, कदे रूप जिउं क्रिशन भगवान हुंदे

कई दिना दे मोए होए मोची नूं श्री बाबाजी ने धरती विच्चों जीऊदां कढ़णा

इक वार दी कथा सुनांवदा हां, प्रेमी बाबा जी पास दो यार हैसन नाल मौज दे पिंड नूं खाना होए, पिंडो अजे कुछ दूर ही बाहर हैसन डिट्टी बाबे जी थाउं निवाण थोड़ी, पुछे प्रेमी जो नाल हुशिआर हैसन रेण थाउंदा दस्सिआ हाल ओनां, ओस थाउंदे जो वाक्फकार हैसन

प्रेमीआं ने उस थाउं दा हाल दसना

महाराज जी मोची इक रहे ऐथे, ऊस ने खूह वा पट्टिआ पार हैसी पाड़ पट्टिआं पट्टिआं पाड़ मिलिआ, मोची निकल न सकिआ बाहर हैन्सी किसे कड्दिआ नहीं खिआल कीता, कोई ओसवा नां रिशतेवार हैसी रेण दस्सिआ एहु प्रसंग सारा, जिउं कर वरत चुक्की ऐथे कार हैसी

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (१७)

बाबाजी दा बचन

बाबे आखिआ थाउं नूं पट्ट देखो, अजे जीऔंदा ए रब्ब दी आस उते मोइआ नहीं उह पाड़ दी आड़ करके, भार पिआ ना हट्टु ते मास उते पाड़ पट्ट के कढ़िआ झट्टु मोची, जीवे पता ना केहड़ी परवास स्ते रेणं बाबे दी शक्ति न कथन हुंदी, मोऐ चाहे उड़ाए अकास उते

कविओ वाच

वेख वेख के लोक असचरज कौतक, मन आपणे विच हैरान हुँदे आवन बाबे दे पास कंगाल जेहड़े, मेहर बाबे दी ते धनवान हुँदे रोग सैहत आ, हो अरोग जावण, निरबल आ के ते बलवान हुँदे रेण जाइ कुरबान ऊस मूरती तों, जिस तों देवते पए कुरबान हुँदे निताप्रती ही देख असचरज कौतक, लोक आपणे दिलों अनुमान करदे कोई आखदा क्रिशन किशोर आयू, कोई खिआल सी विशनु भगवान करदे कोई आखदा धू अटल्ल एहो, कोई भगत प्रहलाद बयान करदे, रेण आपनी आपनी अकल मूजब, वखखो वखख ही सभ गुमान करदे, कोई आवंदे भेंट लै चीर चंगे, कोई माईया दा आण के देर खख कोई घोड़ा लैके खड़ा आण हाज़र, कोई जोड़ा सुंदर भेंटा हेर रखखे कोई भोजन ते, दुध लै कोई आवे, कोई दही मक्खण बिना देर रखखे चौदां लोकां दे रेण जो आप मालक, सरधा सिख्खां दी केवल प्रेम रखखे

---

१ बसतर, कपड़े २ माया, धन ३ वेखके

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (१८)

पिनशनी सिख फौजीआं ने बाबाजी नूं माइआ भेंटा करनी अते असथान बनाण दा प्रसंग

सरधावान सिपाही जो लैण पिनशन, आके बाबे जी दे अगगे रखदे ने बाबा लै ना सिंघ ना मोड़दे ने, शरधा उन्हां दी आप परखदे ने, सिंघ आखदे बाबा जी वसत तेरी, असीं कखख दे ना कीते लखख दे ने रेण करो हथ्थी इहो सफल माया, तुसां वासते लखख इह कखख दे ने

श्री बाबा जी दा बचन

बाबे परख लीती जदों ठीक शरधा, कहिआ तुसां ज़रूर जे लावणी है ऐथे दिओ बना असथान चंगा, होर अब्सां दे कम्म ना आवणी है यादगार साडी ऐथे बणी रहिबसी, पूरी तुसां दी होवसी भावणी' है रेण समां पाके ऐसे थाउं उते, महिमा आपणी असां वधावणी है

सिख्खा दी बिनय

गल विच पा पल्ला सिख्खां हथ जोड़े, कहिआ अससीं तेरे हरदम दास बाबा आसन आपदा बणे निरोल पक्का, गारा फटकनां पाए ना पास बाबा, खरके पिंड झंडेर ते साहनके दे, नखड़ अते अटारी दे खास बाबा हर इक पिंड दा इहो ही चाहुंदा सी, साडी जूह विच करे निवास बाबा

बाबा धरमदास जी दा श्री बाबा जी दे पास नीहं रखन लई बेनती करना

बैठी संगत बिसाल सी पास बाबे, धरमदास जी बेनती आन कीती नीहं रखनी बाबा जी थाउं केहड़े, केहड़ी धरत चाहो सोभावान कीती बचन सुणदिआं ही धरमदास जी दा, सिंघा सारिओं ने खिच्चोतान कीती हर इक आखदा बाबाजी कर किरपा, साड़ी जूह चाहीए आवादान कीती

---

१ इच्छा २ नींव ३ वारी वारी सब ने प्रार्थना कीती

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (१९)

श्री बाबाजी दा फैसला करना

आपस विच्च ही सिंघ पाए झगड़दे ने, बाबे आखिआ करो असरार' कोई नां थाउं असां दी जेहडी पसिंद दी ए, थाऊं उसदी किसे नूं सार कोई नां सतयुग में बैठके तप कीता, उसे थाऊं तो बिना दरकार कोई नां रेण उठ के ते खड़े आन उथे, रिहा किसे दे नाल ततकार कोई नां

श्री बाबाजी दा बचन

मुखो आखिआ आप ने नीहं पुट्टो, पूरख समें दी है यादगार ऐथे सतयुग में बैठ जब तप कीता, होई एकता नाल करतार ऐथे थोड़ी पुट्टी जद आखिआ होर पुट्टो, देखो चिन्ह तां करो इतबार ऐथे रेण पुट्टिआं तां हेठों देखिआ की, थड़ा इक निकले चिन्ह चार ऐथें

प्रिथवी विचो की- की चिन्ह निकले

थड़ा इक जिथे बैह के तप कीता, अगगे धूणे दा लगिआ देर हैस्सी चिमटा लोहे दा पऊइओं दी इक जोड़ी, चौथा लिआ बैरागण नूं हेर" हैस्सी झट पट ही बाबे दे चरण चुम्मे, पुट्टी नीह सारी बिना देर हैसी रेण भाग जागे भागां वालिआं दे, जिन्हां बाबे नूं लिआ परेर हैसी

मंदर दी नीहं ते सेवा

हथ्थी आपने बाबाजी नीहं रख्खी, लगी संगत भी मंदर दी कार आके शाम सिंघ अटारी ते होर केई, सेवा करन जो आप सरदार आके होर किसे दी गेनती करां केही, चाई टोकरी आप सरकार* आके इंदर आदि

तों देवता सब आए, कीती सेव न कीता इनकार आके

१झगड़ा २लोड़ ३झगड़ा ४निशान ५देख

* सरकार - महाराजा रणजीत सिंघ वालीऐ पंजाब दा प्रसिध उपनाम है।

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (२०)

कोई घड़े, इट्टां, कोई राज लावे, कोई चुक्क के पास लिआवंबा सी कोई नाल प्रेम के रोड़ पावे, चूनां पीस के फेर बनावंदा सी कोई आविआंदी लगा कार आके, इट्टां पथ्य का फेर उथलावंदा सी कोई चुक्क के आविआं विच रखवे, जोड़ जोड़ के प्रेम विखावंदा सी कोई करे सेवा बालण करे कट्टा, कोई गोहे ही पिआ चुणावंदा सी कोई राज के पास उदास बैठा, समां सेवा का हथ नां आंवा सी कोई चुक्क के टोकरी दो मिट्टी, भरती पाके खुशी मनांवा सी चूनां कली मिलांवा बैठ कोई, कोई चुक्क के सिरे पुचांवा सी कोई चुक वैहंगी पाणी दोंवा सी, कोई मशक के नाल लिआवंदा सी खड़े बाबा जी राज नूं आप कस्सन, जिवे क्रूसरे तिवे बनावंदा सी कोई भैवदा ते इट्टां बाहर कड्डै, कोई भैवा होर हरखावंदा सी रेण जेहे पापी जग तारने नूं, तीरथ आपना आप चिनावंदा सी

देवतिआं ने आके मंदर दी सेवा करनी

शाम सिंघ सरदार सब कार करके, रात आपने घरां नूं जांवके सन महाराज भी रात न रहे ऐथे, घरों रोज़ आ कार करांवाटे सन सुबह होंवदी नूं सारे होण कट्टे, शाम पर्ई सभ धाम सिधांवादे सन रेण करन सेवा तनों मनौं होके, करके सेव ते संत रिझांवादे सन देव नेत दे नाल नां गाए इक दिन, व्रात रहे आराम दे नाल ऐथे घरम दास जी आदि सतसंग करदे, होए बहुत जवाब सवाल ऐथे पैहर रात गुजरी चान चक्क वेखन, होईआ रंग अकाश का लाल ऐथे झिलझिल होवदी आन बिबान उत्तरे, आए देवते होन निहाल ऐथे आके देवते कम्म नूं करन लग्गे, कोई घड़े, इटां कोई लान लग्गे कोई लै चूनां चुक्के, सीस उते, उते कम्म दे आन पहुंचान लग्गे

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (२१)

कोई अवंका नाल प्रेम रुल, कोई चुल्क के पास है जान लग्गे रेण तिन रखे सारी फार करके, पूज पूज बाबा मुड़के जान लब्णे

सवेरे राजा ने आके कम्म वेखके हैराण होणां

जकों ठोई सवेर तां राजा आए, वेख काम में होन हैरान लग्गे परख करन चंगी तसं निगाठ करके,
कहिके कौन आ राज त्रिखान लम्गे मेरे मुलक के राजा का काम नाहीं, इंगलसतान' विच्चों आयें आन
लग्गे आइया विसवकरमा काम्म करन राती, रेण एठो ठी करन अनुमान लग्गे

कवियोवाच

थोड़े विनां विच्च काम ठोगिआ पूरा, सायं ठोइआ सथान तयार सज्जनों बैठ बाबा जी बचन सुनान
समनूं, सतयुग का करन इजहार सज्जनों बहुत काल हम बैठ यहां तप करिआ, खुशी तों ठोइआ
सिरजनहार सज्जनों साख्यात ठोके आप बचन कीते, सुनिओ आप सारे सरया धार सज्जनों

निरंकारो वाच इस असथान नूं वर

समां कलू का जबरें आ वरत सींगा, होसी प्रगट इस चान संसार सारे पहिले बनेगा मंबर इठ अति
अवभुतं, फेर बणेगा शहर बाजार सारे ठोसी अधिक प्रताप प्रकाश सारे, लोक करनणे बहुत सतकार
सारे जिमी विकेगी बमड़े वी एक कमड़ा, वास करनणे आन सरवार सारे पंज सी सूरमां बैठके नाम
जपसी, हरखम नाम वा करन उचार सारे कुष्थ वही मटके भरे रोज आवन, भेजन लहिविओं की शरया
घार सारे

१ देस विलायत २ देवतियां दा कारीगर ३ बहुत असपरज ४ जमीन इक सबै दी इकसपिआ भर

"श्री हंस चमत्कार"हिन्दी अनुवाद (२२)

नाम जपन वाले सेवा करन वाले, ऐसे कुष्थ दा करन आहार सारे रेण करो नाहीं शवक मन अंदर, वर
आप कित्ते सिरजनहार सारे

श्री बाबाजी दे बचन असथान संबधी

जेहड़े प्राणी असथान का करन दरशन, भला उनां का विच दरगाह होल्सी मुकती विच्च परलोक के मिले शीघर, अते लोक के विच्च विव्साह होसी सच कहां मनुख की गल्ल की है, पशु-पंछी नूं भी ऐथों लाह होव्सी रेण कलू का नहीं परभाव होसी, हरदम चलदा नाम प्रवाह होसी तिन्न सौ साठ आसन साडे जगत अंदर, सभवा मुखी इह विच्च संसार होव्सी बाकी गुपत आ करांगे फेर प्रगट, जों असां का फेर अवतार होसी संगत लाग दे पिंडा की अरज कीती, साडा बाबाजी किते उद्धार होसी बणिआ आसन झंडेर दी हद अंदर, साडी सेवा ना लैण दरकार होव्सी

श्री बाबा जी दा उत्तर

सुणके बनेती सभदी कहिआ बाबे, नानक गुरु जो आप करतार समझो ओव्से गुरु की मेहर है तुब्सां उते, बखशे तुसी होए सिरजनहार समझो जदों पर बरौला ऐव्स देव्स अंदर, कोई रहेगी नहीं सरकार समझो रेण लोक तकलीफ विच बहुत होव्सन, कोई बनेगा ना मददगार समझो इक पुर अनंद असथान साडा, करसां लोह दा कोट ऊन्सार समझो अम्रतसर ते पंज इह पिंड सारे, कोई करे नां आन के वार समझो लोक सुखी वस्सन दुख दूर रहसन, खुल्ले करनगे ऐश बहार समझो नखड़ हब अंदर चले बहुत लंगर, रेण अन्त नाहीं पारावार समझो

* अदारी, नरवड़, साहनके, खरक, झंडेर। जिस असयान ते हुण लंगर चल रिहा है इस नरवड़ दी हद विच है अते मंदर झंडेर दी हद विच है।

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (२३)

बाबा सरूप सिंघ जी दा अन्त समां

इक बेर का सुनो प्रसंग सजणों, सिंघ सरूप वा अंत जिओं ढाल होइआ धैह पूरे नूं जांवढे विच्च रूसते, माई रॉबी इक वेख सवाल होरुआ माई वास्स किउं रोवळी वैण पाके, रॉबे रोकिया है मंवा ढाल होइआ रेण माई ने आखिया रॉवकी ने, मेरे पुत्र का अज्ज ही काल होइआ

बाबा सरूप सिंघ जी दा माई नूं दिलासा देणा

कशा हाल सुन माई ते क्या आई, कहिआ माई ना रो जिवालका हां साघांवाली नूं चुक्क लै चल्ल
इन्सर्नु, उथे चल्ल के खड़ा दिखालका हां ज्ये संत पूरे आन के टिकके होए, शैका' मैं भी ऊसे जमाल का
हां रेण उन्हां के चरना ते रख मुरका, जीवे फेर में ऐस खिआल का हां

माई ने मुरदे पुत्तर नूं चुक्क के लिआके बाबाजी दे चरनां विच्च रख के बेनती करनी

माई चा पुत्तर तुरी नाल ऊसवे, आन चरनां ते उते टिका कित्ता भाई सिंघ सरूप को हथ जोड़ें, हाल माई
का सभ सुना कित्ता महाराज जी बचन मैं के सच्चा, मुरखा आप जी पास पहुंचा बित्ता बुदी माई ते
तख्स कर आप बाबा, चाहीए बाल नूं दुणे जिवा कित्ता

श्री बाबा जी दा उत्तर

बाबे आखिआ ऐह नां कम्म होसी, मारे रख्य ना असां जिवावने ने आज ऐब्स नूं असी जिवा देईए,
भलके सैकड़े ही चले आंवने ने सायांवाली का नाम ना कोई लैब्सि, मुरखे वालीआ सभ अलांवने ने रेण
आपणी भुल्ल बा बिओ बदला, जिवे आपके बिलां नूं भांवने ने

१ प्रेमी २ दरशन ३ कहणजे

"श्री हंस पमत्कार" हिन्दी अनुवाद (२४)

बाबा सरूप सिंघ जी दी दुबारा बेनती

करके बचन में माई नूं नाल लआंबा, झूठा आपना बचन ना करां बाबा या ता बाल नूं किओ जिवाल'
बाबा, नहीं तां नाल ही आप मैं मरां बाबा जिओं कर आपकी आणिआ करां ओवें, बेर ऐब्स विच रत्ता' ना
धरां बाबा रेण आपके बचन की डेर सारी, हरदम आपके बचन तो उयं बाबा

बचन बाबा जी दा

जेहड़ा बचन मुहौं पैहले कद चुक्के, इह तां फिरेगा नहीं जहान फिरसी सूरज लैहंविओ चदे ते जाए पूरब,
जिमी फिरे ते भावें असमान फिरूसी परबत तुरन" ते वायु वा वेग ठेहरे, बचन आपना तयाग भगवान"
फिरसी रेण फिरन ता फिरन के सभ ताई, बाबे ठाकुर की नहीं जुबान फिरसी

कविओ वाच

उत्तर बाबे का सिंघ सरूप सुणिआं, जीवन आपना बुरा प्रतीत होइआ होवें बचन जे सत्त तां जान
जीवण, जे असत तां जीवन विप्रीत" होइआ गुरु बचन नूं याद कर चित्त अंदर, छडु जीव ना बिलों अतीत
होइआ लेट गिआ ज़मीन ते लै चादर, रेण उमर का झट्ट बितीत होइआ

श्री महाराज बाबा ठाकुरजी पास लोकां ने बाणी उचारन लई बिनय करनी ते श्री बाबाजी दा उत्तर इक
दिन बैठिआं संगत ने अरज़ कीती, बाणी तुझी भी करो उचार बाबा पैहले विच्च संसार जो हो चुक्के,
वली ऐलीए मुनी अवतार बाबा सभ ने रची बाणी जगत लाभ खातर, करके आपना सभ प्रचार बाबा

रेण तुसां ने रची न कोई बाणी, जिसते जीव का होई उद्धार बाबा

१ जिवा देओ, जिंदा करना २ जरा भी ३ धरती ४ चलण लग्ग जाण ५ क्रिशन भगवान ६निराचे ७ उल्टा,
अनहोणा

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (२५)

श्री बाबा जी दा उत्तर

बाबे आखिआ ऐब्स संसार अंदर, गुरु बाणी दे होर समान नाहीं गुरु नानक तो आद लै रची जेहड़ी, बिना
ऊसदे आन कलयान नाहीं सतिनाम का भजन जो क्रूसदी ऐ, सोहं जाप की होर धयान नाहीं किसे
बाणी दी होर की गल्ल आखां, तुलय' ऐब्सले वेद भगवान नाहीं

श्री बाबा ठाकुरजी ने बन विच्च जाके, अगनि विच लोप होके चौथे दिन फेर प्रगट होणां

इक रोज़ गिआ बाबा विच जंगल, वागी मुंडे सभ लए ललकार करके कहिआ बालण छापे करो तुझी कट्टे, कसां खेड इक इनहानूं छार' करके बालण कर कट्टा ऊसनूं आग लाई, बाबा विच बैठा छाल मार करके रेण घरां विच मुंडिआ दस्सिआ जा, आपने मापिओं" नूं हाहाकार" करके

चौथा दिन होइआ लोकां हो कट्टे, फुल्ल बाबे के चुनन खान होए नीयत थां ते पहुंच के सोक" करने, सिफत बाबे दी नेक जुबान होए अचनचेत खड़ावां दा खड़क सुणिआ, उधर देखके ते सवाधान होए रेण बाबा जी आंवदे मटकदे सी, जिवें गोपीआं विच भगवान होए

फुल्ल चुगण आए नरवड़ीआं दी बेनती

करके दख्स ते बाबे दे चरन पकड़े, इह की बाबाजी खेल वरताइआ जे साडे विच सरीर ना जान छट्टी, जाके मुंडिआ जदों सुनाइआ जे आज चाज्या करन नूं असी आए, अगगों दब्रस तुंसाडड़ा पाइआ जे रेण असां ते मेहर की नज़र रखवो, ऐब्स तरां ना फेर भरमाइआ जे

१ बराबर २सुआह ३छलांग ४ मां बाप ५ शोर ६ मुकरर ७ दुख, अफसोस

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (२६)

श्री बाबा जी ने उहनां नूं बीर रस विच आके उत्तर देणा

बाबे गज्ज के ते अगगों आखिआ इठ, साफ तुसां बी अंवों भीत नाही ताप वाले नूं लम्माका जिवें पाला, हटे किवें भी उसकी सीत नाही कौतक कई डिले तुसां अन्सां कीते, आई तुसां नूं अजे प्रतीत नाही रेण कोरडू वांग सुभा रहसी, तुसी बनोगे किसे के मीत नाही

श्री बाबा जी दा जल दे उते खड़ावां नाल तुरनां

नरवड़ पिंड के ठेठ इक दाब वट्टी, पाणी जों आके खड़ा होवदां सी पाणी ऊसवा बहुत दूघांण अंबर, उर जावबां ऊस जो जोवबां' सी धरती वांग बाबे उते सैर करवा, जल चरनां के नाल नां छोड़वां सी रेण करे महिबूब जा सैर ओबों, दो चित्त का जबीं आ ठोवकों सी

तिन्ने महादेव दरशन नूं आए

एक रोज़ का सुनों प्रसंग सज्जनों, गुफा विच ही बाबे नूं बेर हो गई प्रेमी बाठर उड़ीक के बन्नशना नूं,
रोज नालों अज बहुत अवेर हो गई अचन्चेत गुफा विचों वाज आई, है अंधेर बाबा जी अंधरे हो गई घड़ी
एक भी अजे ना गुजर चुक्की, रख्ख लई बाबा नै फेर हो गई

थोड़ा समां अजे होर गुजरिआ सी, मैं कुरखान वारी नै फेर हो गई सुणके सभ असचरज तैरान होए,
कठिंबे अज की अजब इठ मेहर हो गई सभने बैठके मता इठ पास कीता, चल्ल देखीए की घुमन घेर हो
पाई भाई मानसिंघ भेजिआ देखने नूं, रेण कासवी है हेर फेर हो गई

१ देशदार २ देर ३ जादू

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (२७)

भाई मानसिंघ जी ने वेखके असचरज होके सारी संगत नूं दसणां

मान सिंघ जी देखिआ झीत थाणी, कौतक वेखके हो हैरान बैठा डिले बाबा जी बैठे करबीर आसन,
अग्गे देवते सणे भगवान बैठा विशं चौर करदा बाबे सीस उत्ते, महादेव ब्रहमा हो निरमान बैठा तेज
झल्लिआ गिआ ना रत्ती जिन्ना, पिछे हट के ते सिंघमान बैठा सारी गुफा प्रकाश अमित्त होई, अनगन
सूर दा ला अनुमान बैठा मुड़ के आन के दसिआ विच्च संगत, मूहों आखके कुल बयान बैठा रेण देव त्रै
हाज़री भरन किउनां, निरंकार जद गुफा विच्च आन बैठा

श्री बाबाजी ने गुफा तो बाहिर आके संगत नूं दरशन देणे ते संगत दे प्रशन-उत्तर

थोड़ा समां गुज़ार के गुफा अंदर, बाबे बाहर आ सभ नूं निहाल कीता सभ ने उठ के चरनां ते सीस
रक्खे, इक ज़बान हो सभ ने सवाल कीता मानसिंघ जो डिट्टा असचरज कौतक, जेहड़ा आपने दीन
दयाल कीता तिन्न देव आए पास आप दे जो, रज्ज रज्ज के जिनां जमाल कीता निकली होर आवाज़
जो गुफा विचों, उह भी चाहुंदे हल सवाल कीता करो दया आवाज़ दा भाव दस्सो, संगत ऐसदा खास

खयाल कीता आए आप जी दे दरशन करन खातर, उत्तर प्रश्न जो उन्हां दे नाल कीता रेण असी हां
दीन दयाल है तूं, किरपा करो जो बचन किरपाल कीता

श्री बाबे जी दा उत्तर

बाबे आखिआ करो खिआल संगत, आए देव त्रै उन्हां सवाल कीता समां आउण वाला उन्हां पुछिआ सी,
ऊस दा उत्तर सी उन्हां दे नाल कीता

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (२८)

पहिले पाप दा जोर 'अंधेर' कख्सी, 'रख लई' गुरु आजे अकाल कीता शांती वरत सी लोक कुरबान
होसन, कहिक्सन भला सभ दीनदयाल कीता

महाराजा रणजीत सिंघ दा दरशन वासते आवणा

इक रोज़ महाराज तयार होइआ, चल्ल बाबे का करां बीदार छेती कीते सभ वज़ीर उमरां कट्टे, हुकम
वित्ता हो जाओ तयार छेती इक साधु सनयासी महातमा सी, पास रखिआ नाल सतकार छेती रेण संत
समेत सभ चलके ते, पहुंचे बाबे के चल दरबार छेती

सनिआसी महातमां ने रसते विच विचार करनी

हैसी साधू हंकार दे नाल भरिआ, मन विच ओसदे तुरंत खिआल आइआ दस्सन साध बच्चा बारां साल
दा ऐ, मेरी उमर दा सठवां साल आइआ मथ्या टेकदा मैं लज्जावान होसां, करदा गिनती दिले दे नाल
आइआ उलटा अदब करैण दी विओंत सोची, जाने नहीं होवन पाइमाल' आइआ

आखर सोचदे सोचदे विओंत' सोची, पहिले जाइ महाराज मैं जा पिछों मेरे गिआं महाराज उठ अदब
करसी, सारे लिआउनगे अदब बजा पिछों उह साध भी उठसी नाल ऐहनां, ऐस दंग ते अदब करां पिछों
रेण आखके जंगल दा नाम बैठा, महाराज तूं चल मैं आ पिछों

* अग्रे प्रसंग देखो 'धरम दा राज होसी' १ शरमिंदा २ तरकीब

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (२९)

महाराज तों पिछों साधु ने आउणा

महाराज आके नमसकार करके, हथ्य जोड़ के बाबा जी पास बैठा थोड़ी देर पिछों आइआ साधड़ा ओह,
पिछों अदब करावन दी आस बैठा महाराज उठुण लगे अदब खातर, बाबे हुकम दित्ता रहु खास बैठा
इसदे ढोलदां पोल हां खोहल दिंदे, सुन के साधड़ा हो निरास बैठा

साधू ने प्रश्न करना

साधू हो शरमिंदड़ा दिले अंदर, उत्तर घोड़ियों इस तरां बोलदा जे कहिंदा बाल के उमर की तुसांदी ए,
मानों प्रश्न करके उन्हां तोलदा' जे मूख्ख बोल हंकार दे बोल करके, आपे आपने पोल नूं खोहलदा जे
मुखड़े आपने तों बाबा दे उत्तर, किवें छज्ज विच छट्ट के रोलदा जे

श्री बाबा जी दा उत्तर

॥ श्री मुखवाक ॥

"हमसे पूछे बावरे किआ उमर तुमारी । हम बारक मासूम हैं खेले जुग चारी। कोटिक बिशनु भए दस
कोटघनया। सपत" कोटि सभू भए हमरी एक पलया। अंध घोर ब्रहमा भए महंमद चार यारी । देवतिआं
की गिनती नहीं सिसटि किया विचारी । हम सदा सदा मौजूद है निराहार निरंकारी ।

१ जांचदा २ करोड़ ३ किशन ४ सत्त ५ शिव ६ पलक ७ बेअंत

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (३०)

कविओ वाच निशानी छंद -

मूरख ऐह नां जाणदा सभ गुण कर वड्डे। नहीं वडाई उमर कर वेदां लिख छड्डे। इस ते साखी एक है विच लिखी पुराणां। उस नूं ऐथे लिख के सभ तांई बखाणां ।

साखी पौराणक - निशानी छंद

एक समें की वारता सुन लीजै भाई। विदिआ सासत्र वेद की सिखि दीन भुलाई ॥ बाल इन्नों का एक थां नहिं विदिया छोरी। रहे सरसवती' तीर वोह कर धैन बहोरी ॥१॥

रिखी दूधीचै पूत था जग्ग जाने सारा । नाम सारसुत ताहिं को सभ करे पुकारा ॥ मात सरसवती ताहिं की कीनी प्रतपाला" । तातें रूस के कंठ रहे सभ बेद बिसाला ॥२॥

समां और कुछ पाइ कर रिखी होए इकट्टे। विद्या पूछे पख्सपर जो थे सभ पट्टे ॥ भूले सभ विद्या घनी नहिं कंठ किसी को। अब पूछो किस जाइकर ले बहुर जिसी को॥३॥

१ सरस्वती नदी २किनारे ३ पढना ४मुड़मुड़के ५ पालना ६ याद ७ आपस चिच ८ पढ़े होए ९ फिर "श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (३१)

जब छूछे' सभ होइ गए गए बालक पासू। विद्या पढ़ने हेतु निज कीआ भावं प्रकासु ॥ कहिआ बालके सिख मम जब बनों पढ़ाउं । नाहिं तां अखर एक भी नहिं किसी बताउं॥४॥

उत्तर सुनकै सभ रिखीनै मन मैं रिस धारी । तूरे हमरा बाल हवै किआ बचन उचारी ॥ ब्रिद्ध^० उमर हम संभन की तुम बालक आयू" । हम किआ तुम को गुर करें सब लाज बिहायू ॥५॥

हिरदै धार क्रोध को गाए ब्रहमा पासू" । तां पै सभ ब्रितंत को निज कर प्रकासू ॥ पूत दधीची रिखी को नहिं विदया है है। सिख बनाइ हमको चहै वह बालक बालक बय है॥६॥

हम को पूत पुकारता सभ लाज बिहाई। हम आए दिग आपके तुम होहु सहाई ॥ सुनके बालक बचन को हम खेद" सहारे । हमरी आयु विध" है वहू पूत पुकारें ॥७॥

थाली २ वाशते ३ मतलब ४ प्रकाशकीता शामिद ६ पड़ावमा ७रिखी ८को ९ बालक १०ज्यादा उमरां
वाले ११ उमर १२तियाग के १३पास १४ जाति १५शरण १६ोट १७ वृद्ध १८कहि

"हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (३२)

तब चतुरानन' मुख भने सुन हो रिख ईसर। गुण कर बड़ा सो होत है इस कशैं कवीसर ॥ तुम हो बालक
गुणों कर वहु गुण कर बूढ़ा। विद्या कर जो सुनय है, है वहि ही मूढ़ा ॥ ८॥ ४

॥ दोहरा ॥

सुन प्रिंच के बचन को, गए तयाग सभ गरब। पूत दधीचे रिखी के, सिख कहाए सरब ॥

नीती कथन

॥ दोहरा ॥

गुण कर बड़ा सु है बड़ा, ऊचा बैठ न होई। काक अटारी थित हवै, पूजत उसे न कोई ॥

॥ दोहरा ॥

ऐसे जब उत्तर सुनिओ, होइ रहिआ विसमांद१०। मुख" मलीन" परगट भयो १४, चित्त" सहि अति
विखाद" ॥॥

॥ सोरठा ॥

कीती भज अपील, पास ब्रहमा दे जाई के। पक्की दे दलील, खारज कीती ओस ने॥

१ ब्रह्मा रकहिंदे हन ३खाली ४मूरख ५अहंकार ६काउं ७उच्चे महिल ते ८बैठा ९होवे १० हैरान ११चेहरा
१२उदास १३जाहिर १४ होइआ १५मन १६ सहारदा १७ बहुत १८ दुख

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (३३)

॥ दोहरा ॥

होर न कोई थाओं है, जिथे करन पुकार । होइ निरासे ओस तों, चले हंकार निवार' ॥ सुण ब्रह्मा दे
बचन सभ, गए सारसुत पास । गुरू गुरू कर आखदे, लई विद्या बणि दास ॥

सनयासी ने खुन्नस खाके पना प्रशन करना

निशानी छंद

पुना कहे बासा कहां कर हो तुम बालका । उत्तर इसका हमें दो कीजै नही आलका ॥ कौन' देस नगर
कहां को कर हैं राजू । कौन' दिशा तव धाम है कहि मात-पिता जू ॥

निशानी छंद

कर बाबे इक छिटी थी उरध दिव्स कीनी । अग्र भाग उस छिटी के दिव्सी सभ दीनी ॥ एक बूंद
झलकत तहां सभ कीन निहारी । सनयासी तिस देखते होयो पाहन हारी ॥१॥

१ तिआग के २ फिर ३ निवास ४ आलस ५ केहड़ा ६ कौन ७ करदा है ८ राज ९ केहड़े १० पासे ११ तेग
१२ घर १३ किये १४ हथ्य १५ छड़ी १६ उतले १७ पासे १८ अगले १९ पासे भाव अगले सिरे २० दिशती

२१ सभने २२ देखी २३ पत्थर वरगा

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (३४)

मौन' गहीं जुग घटीं लग नहीं मुख सो बोला । मानों प्रितमा पाहिनी सभ पड़ी अबोला ॥ १० त्रास भयो"
सभ के रिदे किया कीआ सनयासी । बलर बिहीन निज १४ हवै रहियो नहिं शक्ति प्रकासी ११ ॥ ८५

दिव्स साधू कबि देखते कबि बाबा ओरी। हिरदय जिन के अधिक थी शरधा की डोरी ॥ घटी" दोइ
पसचात" तब महाराजा बोला। हाथ जोड़ घिघआवतों बच कीन अमोला ॥ ३ ॥

बखशो बखशनहार तुम सभ बिरद संभारो। अती अघी को तारना यह नेम तुम्हारो ॥ साधु नहीं उपाध
धाम जिस करी अयोगा। होमे दीरघ रोग इस अब काटो रोगा ॥४॥

बखशो बखशनहार तुम सभ बिरद संभारो। अती अघी को तारना यह नेम तुम्हारो ॥ साधु नहीं उपाध
धाम जिस करी अयोगा । होमे दीरघ रोग इस अब काटो रोगा॥४॥

सुनी बिनय महाराज की, तब बोलयो बाबा मूढ़ गुमानी साधु यह करे अधिक खराबा । सिमरण सेवा
रैहत हवै विद्या अभिमानै । पचे ईरख्खा बाद" महि निमरत नहिं जानै ॥५॥

१ चुप २ ग्रहण कर ३दो ४ घड़ी ५ तक ६ जाणो ७ मुरतियां ८ पत्थर ९ ना बोलण तों १० डर ११ होया
१२ ताकत १३ बिना, रहित १४ आप १५ रोशनी कीती १६ वल १७ बहुत १८घड़ी १९पिछों २०रणजीत
सिंघ २१पापी २२ घर है उस पापी का २३अंहकार रुपी २४ वड्डा रोग २५मुख २६ हंकारी २७खराबी
२८झगड़िआं २९ निरमानता

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (३५)

समता' चहै समुंदर की इक बूंद निहारी । होश भई फरमोश सभ नहीं गई सहारी ॥ सुन महाराजा बचन
मम जो सपत समुंदर । जिन के भीतर हम रहे रच अपना मंदर" ॥६॥

उन सातों की मेलके इक बूंद दिखाई। अकल भइ फरमोश सभ सुध दीन भुलाई ॥ पूछा हमरे बार्स को
उत्तर तिव्स दीना। निज निवास बतरावनो ऐसे हम कीना॥७॥

हाथ जोड़ बिनती करी राजे तिस काला।

इस मूख ने करा प्रभु यह पाप बिसाला ॥ बख्शो इस की खता नाथ हवै रावर सरनी।चैतन" बुधि करो
जब पर है तव चरनी ॥८॥

उत्तर बाबे तब दीआ नहिं बखशन जोगू। उर इसके हंकार है नहिं साध" यह रोगू ॥ राजे पुन बिनती करी
दे गुर प्रमाणू । खिमा करो इस दी खता मैं जाण निमाणू ॥९॥

१ बराबरी २ देखके ३मारी गइ ४ सत्त, सात समुंदर ५ घर ६इकट्टी करके ७मारी गई ८होश ९निवास
१०उस ११दसणा १२वशाल, वड्डा १३ पाप, गुनाह, भुल्ल, गल्ली १४आप दी शरण १५होश वाली १६
तुहाडी १७योग १८ हिरदय, मन, दिल १९दूर होने वाला २०रोग २१ फिर २२निमाणां

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (३६)

जऊ पै हमना पाप करंता अहै अनन्ता । पतित पावन नाम कैसे हुन्ता ?

(श्री राग रविदास)

॥ दोहरा ॥

सुन राजे की बिनय को, दया करी भगवान'। दे जल छींटा मूढ़ पर, तुरत करयो सवाधान ॥ स्वपन
अवसथा ते जगे, ऐसे जागयो सोइ । चरन कंवल पर गिर परिओ, अर बहु दीना होइ ॥ हाथ जोड़ पुन
ठाढ़ रहि, अशटक कहयो बनाइ । सभ संगत सुन कान दै, दैहै रेण सुनाइ ॥

भुजंग प्रयात छंद

ब्रहम निरंकार आदि तू ही है। बर् को छल्ले कारनादि तू ही है। बलि को छल्ल' कारनादि तू ही है। हने
रावणं रूप राम धरा है। पुना बध्ध कंस का तू ही करा है।। १

मधु कैटभ युध तू ही मचाया। असुर हिरनकरायुप को तू ने ही घाया। जीआ दान काली को तूं ही दीआ है। मघवा का बल छीन तू ही कीआ है।।२।

१भाव बाबा ठाकुरजी २ होश विच आंदा ३ खड़ा हो ४अट्टां छंदा दा नाम है ५ब्रहमा ६निर आकार देह तो बिनां ७सभ तों पहलां ८बलि राज नूं ९छल्लन वाले नूं १० सभ दा आदि करन वाले ११मारिआ १२रावण नूं १३राम रूप धार के १४फिर १५नाम १६कंस १७, १८ मधुकैटभ १९दैत्य २०हरनाकश्यप २१मारिआ २२इंद्र २३नास

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (३७)

नवनीत' का चोर तू ही बना है। बध्धक उधारा जिने सर हना है। निरीहन निरालंब आलंब तूं है। तू करता तू हरर्ता जगत थंभ तू है ।।३।।

जगत नास करता बिनासी ना आपम" । परावार नाथम' न सवै नाथ थापम। अनंदम" को मूलम" निकंदम" विकारम । निजदास दासान नित्तम प्रतिपारम ।।४।।

महा मोह हसती बली शेर होए है। अहं महा नागन को गरुड़ संदों है। भए नीर त्रिशना (तृणा) अगन के निवारी। दयो सुमति दानं महां मूढ़ भारी ।।५।।

दया सागर देत दासान मोख । निकंदान दासान के दोख दोख। छिमों प्राध मोरा में अजान सरनी। करो निज दाया पिखो नाहिं करनी ।।६।।

१ मक्खन २बान३धारिआ४ इच्छा रहित५किसे दे आसरे तो बिना६ आसरा ७ करन वाला८ हरण वाला ९जगत दा आसरा १० नाश नां होन वाला ११आप१२परें तो परे १३स्वामी १४आप १५ स्वामी १६ बणाईआ १७इक सुख अवस्था १८जड़१९ नास करन वाला २० विकारां दा २१अपने२२हमेशा२ ३प्रतपाला करदा है२४वड्डा - वड्डा अगिआन मानो हाथी वांगु है, आप उस वासते शेर हो २५ हंकार २६ मानो इक नाग है २७गरड़ २८ समान है २९जल ३०त्रिशना अग्नि ३१दया ३२श्रेष्ठ ३३दान ३४समुंदर ३५ मुक्ति ३६नासकरता ३७देशां दे ३८ खिमां करो, माफी ३९अपराध, गुनाह अवगिआ जे में कीती है ४०मेरा ४१अपनी ४२ दइआ ४३ वेखो

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (३८)

नमो' मोरि लीजो अभयदान दीजो। यम को पिखों नाहिं करुना करीजों । प्रसीदो प्रभो शरन की लाज राखो । यही एक इच्छा नहीं और काखौं ॥७॥

नमो हो अरूपम नमो हो अनूपम । नमो साहसाहम" नमो भूप भूपम" ।

नमो गिआनधाम नमो रहित कामम ।

स्वीकार कीजोकरे रेण सवामम ॥८॥

॥ दोहरा ॥

इहो अशटक जब ही भनयो, भए प्रभु किरपाल । नाम दान ततकाल तिस, देकर कीआ निहाल ॥१॥

गिआन सलाका नैन दे, खोले करी न बार । भयो अंध जो मान संग, दीना तुरत निवार ॥२॥ तीन भवन सोझी भई, तीन काल की गयात ।

कुठरे चन्दन संग सम, प्रभू कीन निज तात ॥ ३॥

प्रेम दी खिच्च घनाछरी छंद

प्रेम के अधीन, नहीं नेम के अधीन प्रभू, देख प्रेमी, प्रेम तातकाल धाए जाई हैं सैलन को देखत नां गैलन को देखत है, बैलन प्रतीखत नां सयंदन बुलाए हैं

१ नमस्कार २डर तो रहित होना ३ जमां नूं४ वेखां५किरपा ६करो७ किरपा करो, दया करो८ कोई नहीं ९रुप तो रहित १०उपमां तों रहित ११ शाहनशाह १२ राजिआं दे राजे १३ गिआन दा घर १४कामना तो रहित १५अंगीकार १६हे स्वामी १७कथन कीता १८ सलाई सुरमचु

१९ कुहाड़े २० पिआरा २१ प्रबता२२रसतिआं नूं २३उडीकदे २४रथ

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (३९)

राज को ना देखत, समाज को न देखत हैं, बाज को उडीकत ना नांगे पाऊं धाए हैं रेण निज कामी नां अकामी' कर देत प्रभू, ऐसे बाबा ठाकुर जी हीए बख्स जाए हैं

नरवड़ नगर विच बीबीआं दा संबाद ते बाबाजी नूं प्रेम नाल याद करना ते बाबाजी दा पुज्जना

घनाछरी छंद

ग्राम मैं अवास इक, तामे थित कनया हवै, मुखो गीत गाए सूत कातती भ्रमावती हास ऐ बिलास करे आपस मैं मोद भरी, धने सूत कातने की विद्या को दिखावती गावती है कोई गीत कानह ओ कन्हैया कहि, कोई राम सीता जी के गुनन को गावती रेण गुरु नानक औ दसम गुरु जी के गीत, कोई अती प्रेम सहित सभन सुनावती ता मैं एक कनया जो चतुर गुनन संग, बाबाजी के जीवन को भली भांत जाने है तानै कहिओ सभ को, सम्बोधन सहित, अली नानक गुरु ने भी अनेक रूप ठाने है बाबा एक ठाकुर जी आयू है, कुमार जाकी, नगर पूरब दिशा करे आ ठिकाने है कौतक अनेक गुरु नानक समान करे, अली हम उन्हें गुरु नानक ही जाने हैं दुतिय कहित सखी हमें नही सुने कबि, कहां है निवास ताको, करें कौन कार को त्रितीय कहित सुने ! पिखे नहीं आज लग, होइ भाल' भाग तबी होइ है दीदार को कहित चतरथ री प्रेम घट जानत है, प्रेम बस्स होइ धाएं, प्रेमी की समहार को रेण है निकामी' नां वहु रीझत' प्रेम बिन, करो प्रेम शीघर" ही पिखों तातकार को ऐसे जब रीत प्रतीत करी नाथ जूं की, सभ ही के हिदे प्रेम अती अकुलायों हैं जैने प्रेम रामों साईं दास के अवास" हित, खड्ग धारी गुरु ताहिं चित्त सो बसायो है जैने प्रेम सबरी के राम जी को प्रेर कर, जूठे बेर खाए अति मन हरखायो है उसी प्रेम आज कर ऊरध सवास" लेत, कनया बनाइ गीत प्रेम सहित गायो है

१ कामना तो रहित २वेहड़ा ३बैठियां ४उसने ५सहेलीओं ६बारां बरसां दी उमर ७ सहेली ८ मथे दे ९दरशन १० कामना रहित ११प्रसन्न हुँदे १२छेती १३विआकुल १४जौने १५धर १६भीलनी १७ प्रसन्न होए १८ साह, हाहुके १९ लड़कियां

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (४०)

राग भैरवी, ताल तलवाड़ा (तरज़ - प्रेम नगर दीआं कुड़ीओ तानहें मार दीओं)

पिंड नखड़ दीआं कुड़ीआं तैनूं चितार दीओं ने सुण सुण तेरी उपमा भारी, लख वारी जाईए बलिहारी।
थां थां होवण गल्ला तेरे दीदार दीआं ने॥ १॥

कोई तां कहिंदी क्रिशन हैं आईआ, किसे ने तेनूं राम बताईआ हुंदीआं चरचा धू दी तेरी, नूहार दिआं ने॥
२॥

कोई ता कैहिंदी सनक सनन्दन, कोई ता कहिंदी नानक नन्दन कोई कहि भगत प्रहलाद, ना जिदों हार
दीआं ने॥३॥

कोई तां कहिंदी लछमी सवामी, कोई कहे सुकदेव निकामी वखो वखख सभ कहिके, बाबा पुकार दीआं
ने॥४॥

शंका सभ दी दूर हो जावे, बाबा जे आके दरस दिखावे। सारीआं आपने चित्त तों, इहो विचार दीआं ने॥
५॥

भागों दे जिऊं घर विच्च जाके, खुशी होए गल्ल खदर पाके। देखीआं जाके धारां, बरफी पहाड़ दीआं
ने॥ ६॥

काइ ता काहेदी नानक नन्दन"

कोई कहि भगत प्रहलाद, ना जिदों हार दीओं ने॥ ३॥

कोई तां कहिंदी लछमी सवामी, कोई कहे सुकदेव निकामी वखो वखख सभ कहिके, बाबा पुकार दीआं
ने॥४॥

शंका सभ दी दूर हो जावे, बाबा जे आके दरस दिखावे । सारीआं आपने चित्त तों, इहो विचार दीआं
ने॥५॥

भागों दे जिऊं घर विच्च जाके, खुशी होए गल्ल खदर पाके।देखीआं जाके धारां, बरफी पहाड़ दीआं ने।।
६।।

सबरी दे जा बेर सी खाए, कुबजां दे गल हार सी पाए। तेरीआं बाबा मेहरां सभ नूं तारदीआं ने।। ७।।

पंचालीं दे याद जो कीते, लाज़ रखी तूं जा चुप्प कीते। रामों वागों अखीआं भुखीआं, दीदार दीआं ने।।
८।।

जिऊं कर इहनां दी आस पुजाई, क्रिशन रूप कदे बन रघुराई। साड़े भी हिरदय अखीआं तेरीआं
ठारदीआं ने।।९।।

श्याद करना २दरशन ३वरगा ४बाबा श्री चंद जी ५विशनु ६द्रोपदी ७ श्री राम चंद्र जी

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (४१)

प्रेम तेरे बाबा कमलीओं कीतीओं, जानों जो साडे हिरदय बीतीआं। जावन जे हो मेहरां, सच्ची सरकार
दीआं ने।। १० ।।

भैण नानकी जिवें चितारिआ, मदीनिओं छेती नाल पधारिआ । नानकी जेहीआ भैणां तैनुं, चितारदीआं
नें ।। ११ ।।

छेती आके दख्स दिखावो, घड़ी ते पल भी देर ना लावो कसमां तैनु बाबा सिरजन हार दीओं ने ।।१२।।

कोई है छोटी, कोई है वड्डी, सिक्क दरस दी हिरदय गड्डी सारीआं मिल के बच्ची, अरज़ गुज़ार दीआं ने।।
१३।।

सधर सभ दी पूरी कीजो, छेती आके दरशन दीजो। रेण मन के अरज़ा सभ गुनाहगार दीआं ने।। १४ ।।

राग पहाड़ी, ताल ठेका

(तरज़ - चुड़ी गुरां दे ना जाई वें, दोल पतलिआ व माहगुजा)

टेक - आके दरस दिखाई जी, बाबा सानूं बौरीआं' वालिआ ।

सुन सुन तेरीओ अचरज गल्लां, हिरदै उठुन प्रेम उछल्लां । दिल विच तांघ समाई जी बाबा सानूं बौरीआं वालिआ ।

लोक सारे तेरीआं सिफता करदे, सभ ही कहिंदे रूप ने हरि दे। सानूं भी रूप दिखाई जी, बाबा सानूं बौरीआं वालिओं.....

बाबा वसावा सिंघ घर जा तारिआ, सिंघ सरूप जा आप बारिआ लीना दास चरन पद लाई जी, बाबा सानूं बौरीआं वालिआ.....

नां तू ते मामू साडे पिंड दे फकीर ने, लोकी तां वेखन नाल नज़र हकीर दित्ता आपने पूजय बनाई जी, बाबा सानूं.....

१ बौरिआं सिर ते छोटे छोटे केस २परमेस्वर ३ नफरत घृणा दी नज़र नाल तक्कना

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (४२)

कदे तां मोची मोइआ जिवाइआ, चुक्क अयाली नूं शाह बनाइआ । दुध पी दित्ती वडिआई जी, बाबा.....

नाई नू निज चरनी लाके, दित्ता बिठाइ महंत बनाके। आपनी लाज निबाही जी, बाबा...

कर अंहकार जो साधड़ा आइआ, नाल शक्ति दे ऊसं निवाइआ । भरी सभा विच पत लाही जी, बाबा.....

आसन लगे आप बनावन, सुंदर मंदर करा चिनावन। देवतिआं सेव कमाई जी, बाबा.....

करके आप अनेक चरित्तर, तारे शत्तर नाले मित्तर। भेद ना जाणिआ राई जी, बाबा.....

सुण सुण अचरज कौतक सारे, हिरदै प्रेम उछाले मारे। सानूं भी चोज विखाई जी, बाबा.....

इह भी कहिंदे सुणे ने दाने, बाबा जी दिल दा प्रेम पंछाने । जाइ बिन देर लगाई जी, बाबा.....

सचमुच प्रेम जो जाणे तू बाबा, दरशन देवीं आन सिताबा। बच्ची अरज़ सुनाई जी, बाबा.....

|| दोहरा ||

बहिबल सभ कनया भई, अधिक प्रेम प्रभाव। सुध बिसरी तन बदन की, गीत रही सभ गाव ॥

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (४३)

कुंडलीआ छंद

शीघर बाबे को मिली, चली प्रेम की तार साहस' नहीं अब थिर रहें, चले बेग सहि पयार चले बेग सहि
पिआर, दीए सभ नेम भुलाई भैण नानकी प्रेम यथा, जिउं गुरु बुलाई कनया दे मन जान देय, रहयो प्रेम
अज़ाबे चली प्रेम की तार, मिली जा शीघर बाबे ५

|| दोहरा ||

गीत प्रेम कर गावती, धुनी सुनी पग केर । बाबाजी द्रिशटी परे, आवत पिखे अदेर।।

घनाछरी छंद

तंत को निकास दिस उरध लिजात भई, तंत ऐसे भई मानो सार सरी हवे गई हाथ को छुराइ दिस अधे को घुमाइ रही, छूटत नां हाथ मानो टामण नीके हवै गई जोरत नां हाथ पै निवावत है, माथ सभ, खिमा करो नाथ जो अवगिआ हवै कवै गई रेण कर कौतक यों औचक दिखाय प्रभु, ऐसे छूटे हाथ मानो मुरी सिध है हवै गई

टीका

* जदों तंदा त्रकले तों ऊपर नूं लै गईआं, तां तंदा सभ दीआं फौलाद जेहीआं हो गईआं

* हथ नूं छुड़ाके हेठा नूं कर रहीआं, पर हथ नहीं छुट्टे, मानों किसे ने जादू कीता है

१ हौसलार बैठे ३ छेती ४ नाल ५ दुख ६आवाज ७ बिना ढिल दे

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (४४)

* हथ तां जोड़ नहीं सकदीओं पर सिर निवाके कहिंदीआ हन, महाराज कोई अवगया होई है तां खिमा करों

* इस पुकार बाबा जी ने अचानक कौतक दिखाइआ, हथ इस तव्यं छुट गए मानो सिध दारू छुह गिआ

॥ दोहरा ॥

ऐसे निज प्रताप ते, कौतक करे अनेक । रेण अलप वरनन करे, जैसे बुधि बिबेक ॥

बाबा कुम्मा सिंघ जी गुरुसर सतलाई वाले नूं बखशस

॥ दोहरा ॥

बाबा कुम्मा सिंघ जी, गुर सतलानी माहिं । करे निवास उदार चित्त, सेवा संत कमाहिं ॥

बाबा जी के चरन में, राखे प्रेम अमेट । प्रेम बसी' भगवान हवै, करे दास सिउं भेट ॥

निता प्रति जब चितवते, देग भंग कर तयार । बाबाजी पहुंचे तबे, चसां ना करे अवार ॥

ठाकुर जी प्रति यूं कहें, कुम्मा सिंघ सुजान । गफ्फे लाओ देग दे, जिस से लग्गे धयान ॥

१ वस्से २ मिलदे ३ याद करदे ४ देर

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (४५)

उत्तर बाबा जी

निशानी छंद

एह तो झूठी भांग है पीवे कंरि कमली । 'नाम रमाइण जो रते नानक सच अमली' । (गुरखाक) गुरु नानक इस भांग को नहीं बरतन कहिता इसको अमली होइ जो सो तन निज दहिता ॥१॥

हम को ऐसी भांग है सतगुरु ने दीनी । उत्तरे निव्स अर दिवस नहीं हवै सदा नवीनी । बाबा कुम्मा सिंघ कहे जब हम को दैहो । तब हम इस को तयाग देइं नहिं पान करैहो ॥२॥

ऐसे ठाकुर महाराज छुछे ही आवे ।

निंदत झूठे अमल को कबि मुख नहीं लावें । सिख कहाइ महाराज को पुन सुखा पीवें ।

अंत काल सतिगुरु के सनमुख नहीं थीवें ॥ ३॥

घनाछरी छंद

एक समें बाबाजी न गए दोइ पख तहां, बाबा कुम्मासिंघ जब रगड़ा लगावते सोध अरदास जबी पान करें देग मुख, प्रिथमें नमित बाबे चुला घट पावते कहिं बाबा दरसन न देत काहे निताप्रती, घट" मैं के प्रेम घटघट कै नां भावते प्रेम साथ टेर सुन दोइ पख बीते पाछे, बाबा धायो गुरु सर रेण जा बुलावते

१ साइदा २ नवीं ३पीण ४ खाली ५ पंदरा दिन दा पख हुंदा है ६घड़ा ७ की मेरे घट (हिरदे)दा प्रेम धट गिआ है, जिस करके आप दे घट विच भाउंदा नहीं हां

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (४६)

आए देख कुम्मासिंघ दौर पौर' पास पहुंच, चरनन पै सीव्स राख प्रेमगाथ भाखी है, प्रेम के अधीन होइ प्रभू नांगे पाउं दौरे, सुधि लीनी गज की पंचाली लाज राखी है, कुबड़ा की फुल माल, सबरी के बेर जूठे, यथा अब भए राखी देग अभिलाखी है, रेण भणे बाबाजी शिताबा कर देग दीजो, पान कर रहें पूरे आस को जो कांखीं है

बाबा कुम्मासिंघ गए शीघर न देर करी, लाए घट" बाबे अगर धरा नमसकार कर, बाबा देख प्रेम तिक्स वसी भूत होइ रहे, कहा मुख कमल से बचन उचार कर, नानक गुरु की भई करूनां अपार अब, संपत तुमारे घर रहेगी अपार भर, रेण ये बचन मानो बान रघुनाथ जू को, बेध दसम द्वार गए खोल ही किवार कर

बाबाजी सिताबा कर दूसरों बचन कहें, नानक गुरु के घर कमी नहीं कोई है, मांग और मांग कर इछा निज पूर कर, नहीं हैं अदेय कछु मागों दिओ सोइ है, मांगे पुन कौन जौन मांगे सो तो रहयो नाहिं, आपने ही भए तीन लोक निज जोई है, रेण निज कर सो हिलाय कहया पुना बाबे, नेतर उघारे जैसे सोयो होइ कोइ है

बाबा कुम्मा सिंघ जी दी बेनती

किरपा कटाख' ते निहाल तात काल करा, दूसरो पदारथ नां तुल्ल रहयो मांगनों, माया तो अनित नहीं मित्त बने कांडू संग, देह भंग होइ जैसे काटे विख नागनों, लागने के योग ताहूं लाग रहयो चित्त मोरा,

आन को तयाग भइओ ठग गइओ ठागनों, यदी निहकामी रेण एक अभिलाख कहीं, देग हवै अतोत चले
और प्रभु का गनो ?

१ दरवाजे २ हाथी ३ द्रोपदी ४ इच्छा ५ धड़ा ६अगे ७पदारथ ८ बेअंत ९ दरवाजे १० हथ्य ११द्रिश्टी
१२सरप (सांप, नाग) १३ जेकर

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (४७)

लंगर संबधी बाबा जी ने वर देणा

लंगर अतोत रहे, बिना जदों खोट रहे, खोट जदों पिआ तदों लंगर दी तोट सी* सिरोमणि आप जदों
तीक विच लंगर दे, बैठ छके भोजन ना वख्ख खाए रोट सी बैठके महंत जदों भिन्न करे भोजन नूं, तदों
टुट जाइ साडा इहो दिता कोट सी रेण साडे बचनां दी रचना है तदो तीक, बचन लुटाए' सभ संपत को
लोट सी

बोघी तों बोघी शाह

॥ सवैया ॥

एक समैं स्त्री बाबा जी भए, उदत्त' जाहिं गुरु सर माहीं। बार्ट में एक अयाल फिरे बन, माहि चरावत ठाढ़
अजा हीं। हेरत शीघर आइ गिरा वहु, चरन गहे पुन छोरत नाहीं।जोरके हाथ करी बिनती निज, बाबाजी
मोहे लेहु बचाहीं ।

॥ दोहरा ॥

ठाकुर जी किरपा करो, पान करो कुछ शीर। करो क्रितारथ दास को, जाइये बहुर सधीर ॥

* अग्रेज़ी- see - देखो १ मोड़ेस्तयार होए ३रसते विच ४बकरीआं ५ छेती ६दुध

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (४८)

बीजै दंडक छंद

सुनी बेनती बाबाजी सिदकवाली, कहया भरो चिप्पी असी पान करीए तेरे प्रेम दे हां वसीभूत होए,
जलदी करो छेती अगगे जान करीए सेवा करो जो नाल प्रेम साडी, उस दी तुछ भी भेंट परवान करीए
रेण करी प्रतगया विच गीता, हरदम ऊसदा अति सनमान करीए साग बिदर दे जाइ के घरी खाधा, मिठ्ठा
लूण भी नहीं पछान कीता प्रेम देख सुदामे दे चौल कच्चे, चब्बे मार फक्के ना गुमान कीता मिस्सी रोटी
खाधी मुहों मंग के ते, व्याकुल माई दे प्रेम जद आन कीता रेण कोधरे नूं अम्रत जान खाधा, अंगीकार सी
नहीं पकवान कीता

#पत्तर पुशप फल, तोयं यो मे भकव्या प्रयच्छति।

तदहं भक्कु युपहितम् शनामि प्रयतातमनः॥ (गीता सं० २७) अः ९

पद छेद

पात्रम, पुशपम, फलम, तोयम्, यः में भकवया प्रयच्छति ।

तत्, अहम्, भक्कु यूपहितम्, अशनामि, प्रयतातमनः ॥१। २६)

श्लोकानुवाद पंजाबी

पानी पत्तर फुल्ल फल किछु अरपे शरधा धार।

सगुण रूप धर प्रेमी का, पारथ करो अहार॥

हिंदी अर्थ

जो कोई भक्तु मेरे लिए पत्तर पुशप फल जल इत्यादि प्रेम से अर्पण करता है, उस सुधबुधि निष्काम प्रेमी का प्रेमपूर्वक अर्पण किया हुआ, वह (पत्तर पुशपादिक) मैं (सगुण रूप में प्रगट होकर) प्रीत सहित खाता हूँ।

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (४९)

बोधी ने बकरीआं चोवणीआं

बोधी गिआ जां बकरीआं चोण लग्गा, चिप्पी भरे ना हो हैरान बैठा इक चो दो चार फिर सभ चोइओं, ऊंणी रुख बाबे अग्गे आन बैठा बाबे आखिआ भरी न गई चिप्पी, करी बकरीआं दा सैं गुमान बैठा रेण धौण नीवीं करके कहे बोधी, सब कुछ आपदे हाथ मैं जान बैठा

बोधी ने बिनय पूरबक उसतती करनी

जिसदे भरो भांडे ऊसदे भरे जावन, खाली करो न चलदा ज़ोर बाबा हरन भरन दी खेड सभ आपदी है, तेरे बिना नां दूसरा होर बाबा तेरे हुकम अंदर चलन चंद तारे, खड़े परबतां नूं देवें तोर बाबा रेण मेहर करके तारें पथरां नूं, आवें आपनी विच जे लोर बाबा

बोधी तो उसतती सुनके महाराज जी ने किरपाल होके लाचीआं दी बखशश करनी

सुनके बोधी दे बचन किरपाल होए, कहिआ नाम तूं आपना दस्स भाई, बोधीनाम ओस आपनां दस्सिआ सी, अग्गों बाबेजी आखिआ हस्स भाई, बोधी नहीं तू हुण बोघेशाह होइओ, दिता हथ तेरे असां जस्स भाई, रेण लाची देके कुछ पासों, सारा वर दिता मुखों दस्स भाई

श्री बाबा जी दा बचन

लाची इन्हां विच्चों देवी औंस वेले, रोगी जदों कोई तेरे पास आवे, भावें किसे ही रोग दा दुखी होवे, हर इक रोग ते ठीक इह रास आवे, हस्सदा जावसी आप दे घरी मुड़के, भावें होइके किवें निरास आवे, रेण जाई खता ना इह नुस्खा, भावें जिन्दगी तों हो उदास आवे

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (५०)

कवि उवाच

बोधे शाह दा दसदे हाल लोकी, जिन्हां वेखिआ है अख्खी नाल ऊसनूं हर इक रोग दा करे इलाज पूरा,
बखशश बाबे दी इह कमाल ऊसं देर नहीं होइ बहुती उस ताई, होए मोए नूं ने पैती साल ऊसं

रेण वैद सच्चे दिता इक नुसखा, इक से नालही किआ निहाल ऊसं

आपे पुट्टों

बाबे आखिआ सिंघ जमीत ताई, टाहली ब्रिछ बूहे विच नहीं चंगा इब्सनूं पट्ट ऐथो देहो सट्ट किधरें, औदे
जांवदे नूं करे राह तंगा उदूढे जिंघ जमीत जी तुरे नगर, लैण खाती ते नाल कुठार चंगा रेण कहिआ
ललकार के आपजी ने, किधर जावने नूं होए उत अंगा

बाबा जमीत सिंघ जी दा उत्तर

जोड़े हाथ जमीत सिंघ अरज कीती, बाबा खाती' नूं सद्दने जांवदा हां खाती आइके ब्रिछ नूं कट देसी,
कट वढके परहे लगावंदा हां बाबे आखिआ लोड़ नां किसे दीए, पुट्टो आप मैं हुकम सुनांवदा हां रेण
मन्निआ हुकम ते पट्ट घत्ती, जिवें पुट्टियां तिवें बतावंदा हां कहिआ सिंघ जमीत जी हथ जोड़े, किवें ऐब्स
नूं, सक्कां हिला बाबा जप्फे विच्च नां आवंदी बहुत मोटी, जड़ा खड़ी पताल जमा बाबा मेरे विच नां
तान बलकार मन विच, देसां ऐब्स नूं किवें गिरा बाबा रेण बिना रच्छा नहीं मच्छ मरदे, सारे आखदे लोक
दना बाबा

१ तिरखान २ संद, हथिआर

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (५१)

श्री बाबाजी दा हुकम

बाबे आखिआ ऐब्स बिच तान कोई नां, तू है शेर दा रूप पछान आपे हनूमान दे वांग समहाल अपना, करो परबत दे वांग उच्चान आपे मन हुकम ते एब्सनूं मार जप्फा, टुट जावसी वांग कमान * आपे रेण मार जप्फा टाहली पुट्ट घत्ती, टुट्टी ईओं जिओं सड़िआ दओकान आपे

अनोखी सवारी

इक निकों-सरा है नगर वाह वाह, रहिन राम प्रशाद जी संत ओथे, कीता बाबे दा जिनां सतसंग हैसी, करन बंदगी बैठ बिअंत ओथे, होके सुरत सवार ओह आंवदे सी, ऐथों बाबाजी जान तुरंत ओथे, रेण राह दे विच इकट्ट करदे, करन बैठ विचार इकन्त ओथे

तोप दा गोला

अक वेर आइआ बाबा दरशनां नूं, वीर सिंघ जी जिन्हां दा राम हैसी, नूरंगाबाद दे विच निवास करदे, केवल लगन विच जिन्हां दे राम हैसी अट्टे पहर चलावदें बैठ लंगर, होर तीसरा कोई नां काम हैसी, रेण संत ते साध दी करन सेवा, मशहूर विच देब्स तमाम हैसी, आए आके ते बैठे पास बाबे, परसपर दी होइआ सतकार चंगा कई तरां दे बचन बिलास होए, चरचा हो रिहा नाम करतार चंगा, संत मिले कुछ आखीए, कुछ सुनीए, मिले दुशट तां मौन ही धार चंगा, अचन चेत ही उन्हां दे पट्ट उते, धप्पा मार के कीआ खड़कार चंगा

* सिखलयपुरीआं दी कमान (धनुश) वांगु जो रामजी ने विश्वामित्र जी दी असीस अते हुकम नाल तोड़ी सी

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (५२)

बचन बाबा वीर सिंघ जी

जदों पट्ट स्ते वजा धम्म धप्पा, वीर सिंघ जी हस्स के बोलिआ ऐ

दिशट कूट* में आपदी समझ लीती, जीकर आपने मुझे नूं तोलिआ ऐ तोप नाल इस देह ने मुक्त होणा,
भेत आप ने इस तरां खोहलिआ ऐ रेण पंदरा साल दे बाद ऐवें, बीती वारता बचन न डोलिआ ऐ

श्री बाबा ठाकुर जी ने चोर किवें तारे

पिंड बामणी वाला है पास पट्टी, रात पई हनेरड़ा छाड़आ ऐ, रूड़ा बूड़ा दो चोर सलाह करदे, समां चोरी
का ऐवै गवाड़आ ऐ, चलो अजे न विगड़िआ कुछ यारा, अजे पख्ख हनेर का आईआ ऐ, रेण दिन दो चार
हनेर बाकी, हल्ला करो जो रब्ब नूं भाईआ ऐ

रूड़ा उवाच

रूड़ा आखदा बूड़े नूं भला यारा, दिन चल्ल सांघावाली कट्टीए जी, दरशन ठाकुरां दा करके काम करीए,
इस तों होंवदी बहुत ही खट्टीए जी, मन्नत मन्न जे संत दी चलीए तां, नहीं पाए सरकार दी चट्टीए जी,
रेण मोरचा भी किते लाग लाईए, घर चल्ल चंगा कोई पट्टीए जी

बूड़ा उवाच

बूड़ा आखदा छट्टु दे बहुत गल्लां, उस साध दे पास न जावनां ऐ, रोड भोड नां सिख है केस धारी, सीक्स
ऊस नूं नहीं निवावनां ऐ, असी केक्सधारी पुत्त सिख दे हां, उस दे पास जा असां शरमावनां ऐ, रेण वल्ल
रिआड़की चल के ते, असां मोरचा ठीक ही लावनां ऐ

* दिशट कूट नाम बुझारत दा है

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (५३)

रूड़ा उवाच

रूढ़े आखिआ तरक ना करो कोई, संत भेखदी नहीं विचार भाई, नही रब्ब दा मज़हब ना संत दा है, वस्से संत दे विच्च करतार भाई, संत राम दे विच्च ना भेद कोई, गुरु साहिब जी कहिआ पुकार भाई, संत पुजिआ रब्ब दी खुशी हुंदी, खूफगी रब्ब दी संत तिरसकार भाई, जेकर भेख दा करे विचार केई, भेख आसरे कोई ना पार होइआ, केसा नाल जे मुकत इह जीव होवे, चाहिए रिच्छ दी सभ उद्धार होइआ, बिंद रखिआं जे करां मिले मुकती, खुसरां कदे ना मुकत संसार होइआ, वाल मुनि जे करां मुकत होवे, भेड़ां लई ही मुकत दुआर होइआ, रीझे रब्ब जे नंगिआ रैहन उत्ते, बन चर बांदरां नगर विवहार होइआ, पाइआ भसम जे रब्ब प्रसन्न होवे, हाथी गधा उड़ावने हार होइआ, फिरने नाल जे रब्ब प्रसन्न होवे, चक्की चक्क है तेज़ रफतार होइआ, सुन लै, जल जे मुक्त दा बने साधन, उड़ी मच्छ सभ मुकत संसार होइआ, भगवे कीतिओं जे करां रब्ब मिलदा, फंधक नाल भगदे फंधनहार होइआ, काले रंग ते जेकरां रब्ब राजी, रंग काउं कोइल मजेदार होइआ, चिट्टे रंग ते जेकरां मिले मुकती, बगला उज्जला दुध अनुहार होइआ, मुद्धे लटकि जे करां मिले मुकती, चामचड़िक उलटा लटकनहार होइआ, लत्तां तांह जे कीतिआ रब्ब रीझे, तां टटीहरी दा बेड़ा पार होइआ, पौणा हार जे कीतिआं रब्ब मिलदा, सर्प सदा ही पौण आहार होइआ, जेकर रब्ब मिलदा मौन धारिआं ते, पसु सभ ही रब्ब दा यार होइआ, इंद्री वड्ढिआं मिले बैकुण्ठ जेकर, खस्सी दुग्गिआं टटूआं सार होइआ, भेखी प्रभू न भिज्ज दा गुरु कहिंदे, तांते नेक ही अमल दरकार होइआ

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (५४)

कविओ वाच

बूड़सिंघ ने बहुत समझा कहिआ, रूड़ा मन्निआं नां हठ धार करके, परमहंस दे करां ना मूल दरशन, आवे भेख जे आप करतार करके, ज़िद्द आखदे जट्ट दी बुरी हुंदी, कुल घात करदा नां विचार करके, जट्ट गुरु नूं टिच्च कर गाल कड्ढे, मशहूर* है बचन संसार करके

आखर बूड़ा भी रूढ़े दे मगर लग्गा, तुरे वल रिआड़की जांवदे ने, मालक दो जहान दे पा माया, रसता दोहां दे तांई भुलावंदे ने, तिन्न बजे आए पहुंचे पास नगर, इक खूह ते खड़े पुछांवंदे ने, दस्सिआ नाम खूह वाले ने पिंड नखड़, रूढ़े हुरी सुण चित्त शरमांवंदे ने

मैं कुरबान बाबा चरनां तेरिआं तों, कौतक तुसां दे अपर अपार डिट्टे, पापी तारने लई तू जग आयों, मुकत हुंदे तैथों चोर यार डिट्टे, पिंगले परबतों छिन कवि च पार कीते, गूंगे गांवदे राग मल्हार डिट्टे, मूख्ख

वेद दा करन वख्यान चंगा, धन हीन जो धनी उदार डिठे

दर दर मंगदे भिख्व ना जिन्हां मिलदी, तेरी मेहर ते बने सरदार डिठे ,दुध पुत्त दी जिन्हां नूं भुख रैहंदी,
दर तेरे तों तृप्त हज़ार डिठे ,जप तप तों हीन ते करम नाहीं, हुंदे भव समुंदरों पार डिठे , दुखी आए हज़ार
दरबार तेरे, जांदे सुख दा करन इज़हार डिठे

जाति मज़ब दा पख्व ना खदे हो, तरदे आपतों बिना अधिकार डिठे , मुसलमान हिंदू होर सिख्व मेहत्र,
कीते पार जो रब्बों इनकार डिठे ,रेण आण डिग्गा तेरी शरण बाबा, मैं तार जिऊं तेरे दरबार डिठे

* जट्ट विगाड़े मुरशद नाल। जां बोले तां कट्टे गाल । (मुहावरा)

"श्री हंस चमत्कार" (हिन्दी अनुवाद)

अरूड़ा ऊवाच

सुनके नाम रूड़ा मन विच खुशी होया, किहा बूड़े नूं खूब ललकार करके दरशन जिन्हां दे करन नां चाहुंदा
सैं, खिच्च लिआई उन्हां बलकार करके अजे हई वेला आखे लग्ग मेरे, चल्लो पास बाबे शरधा धार
करके रेण रहेंगा दुखी संसार नांही, सुख भोग से भली प्रकार करके

रूड़ा जदों इह बचन सुनांवदा सी, बूड़ा सुनके ते शरमसार होइआ उत्तर कोई नां औहड़दा दे अग्गों, नाल
चल्लनें लई तयार होइआ सूरज उहे होईआ मुंह हथ्य थोते, धोके मुंह सुचेत हुशिआर होइआ रेण तुरे
ढोर्वे आए पास बाबे, अग्गे वेखिआ लग्गा दरबार होइआ

कवि उवाच

संगत पास बाबे दे बेअंत बैठी, सांई दित्ता रबाब सी राग करदा करे कीरतन नाल प्रेम ऐसा, सुणने सार
ही चित्त वैराग करदा बाणी रूप गंगा विच नहाए संगत, दूर पाप दे दिलों सी दाग करदा रेण आवंदा ते
कोई जांवदा सी, हंस होइ इशानान जो काग करदा

असे समें दे विच सुभाग दोवें, आए आके ते नमसकार करदे वेख वेख हैरान असचरज हुंदे, जिऊं जिऊं बाबे दा बैठ दीदार करदे शरधा आप सभदी बाबा करे पूरी, जिवें कोई आवे हिरदै धार करदे रेण दुखी आए सुखी हो जांदे, जेहड़े बाबे दा दिलों सतकार करदे

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (५६)

श्री कलगीधर जी दे दरशन

पिआ भोग जद कीरतन होंवदे दा, बूड़े सीस नूं उतांह उच्चां डिट्टा आसन बीर करके सतिगुर आप बैठे, कलगी जिगांते बाज दाचा डिट्टा विच गात्रे तेग कमान मोढ़े, तीर फेरदे हथ दे दा डिट्टा रेण मोतीआं दी माल गए सोहै, मुख चंद्रमा बा हया डिट्टा

श्री बाबा जी ने बूड़े नूं अपना रूप पुछना

दसवें पातशाह दा रूप धार बाबे, कहिआ बूड़े नूं ऊच पुकार करके दसूसी बूड़िआ रूप की असां दा ऐ, सच्च बोलनां रिदै विचार करके नहीं पख्ख ते पात दी गल्ल करनी, हाज़र नाज़रा जान करतार करके रेण झूठ जे बोल से पास साडे, जासे नरक दे विच सिधार करके

बूड़े दा उत्तर

जोड़े हथ दो बूड़िसिंघ अरज़ करदा, इको मैं ना देखने हार सतिगुर संगत सभ बैठी दरशन करे तेरा, लग रिहा है तेरा दरबार सतिगुर दसवें पातशाह आप प्रतख दिस्सो, करें शक्क होवे गुनहगार सतिगुर हथ्थीं आपदे बाजते साज सुंदर, कलगी जिगार्दीं अजब चमकार सतिगुर

धनश सोभदा ऐ कंधे आपदे ते, बाण करे हथ ते नृतकार सतिगुर भथ्या लक्क देना लहै ठीक बध्धा, सज रही गात्रे तेज तलवार सतिगुर आसन बीर है आपदा बीर जोधे, आसन हेठ विछिआ ज़रीदार सतिगुर नाम गुरु गोंबिद सिंघ आप जी दा, मशहूर है रेण संसार सतिगुर

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (५७)

रूड़े दा विचों खिड़के बोलणा

सुने वाक जदों रूड़े हो छिथ्या, कहिंदा नहीं बाबा झूठ बोलदा जे नाम आप का ठाकुर प्रसिद्ध सारे, हर इक जानदा दूर ते कोलबा जे परम हंस स्वरूप प्रतीत होवे, सारे देखने कोई नां डोलबा जे बूड़ा झूठ ते सुद्धा ही झूठ बोले, विचों राख के मोती टोलबा जे

श्री बाबा जी दा बचन

बाबे आखिआ बूड़िआ उठ ऐथों, जाके रूड़े के पिछों दी हो देखो जो कुछ नज़र आवे सच्च दसनां जे, बैठे दिस्से ना उद्व खलों देखो कहिंदे ज़िद्ध ते झगड़ना नहीं चंगा, दिलों हंगता नूं ज़रा खो देखो रेण दिलों जे दूई नूं दूर करखसो, मेरा असल सरूप है सो देखो

श्री बाबा जी दे हुकमानुसार बूड़े ने रूड़े दे पिछों होके देखनां

बूड़े देखिआ रूड़े दे हो पिछों, नां उह साज ते नां उह सामान दिस्से नां उह बीर नां दिसदा बीर आसन, नां उह तीर दिस्से नां उह कमान दिस्से, नां उह ज़िगां कलगी नां उह रिहा भथ्या, नां उह गात्रे विच किरपान दिस्से, नां उह हथ्य ते बाज ना साज सुंदर, नां महाराजिआं वालड़ी शान

दिस्से

आसन दिसदा नां तिल्लेदार हेठां, नां उह रूप गोबिंद भगवान दिस्से, मोति न माल ना सोभदी गले अंदर, नां उह उमर नूहार जवान दिस्से, दाड़ा मुख नां सीस ते केक्स सोहणों, नां उह सूरमें विच दीवान दिस्से, रेण रूप अनूप नूं पलट के ते, परम हंस दा रूप नादान दिस्से

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (५८)

श्री बाबा दा जी कथन

उच्ची दे के आखिआ आप बाबे, सुनो खालसा ज़रा ध्यान करनां कलगी वालड़े ने राती हुकम कीता, रूड़े बूड़े दी तुसी कलयान करनां इहु खेल कीता हुकम गुरु दे के, होर असां ना कोई बखयान करनां रेण

पऐ चरनी दोवें डिग्ग ओवें, बखशो गुरु जी साडा अभमान करनां

कवि उवाच

कौतक नवां ना आपने इहु कीता, धूरों आपदी इस तरहां बान सज्जनों, शरधा आपने भगत जी देख केते, उहो रूप आ घरे भगवान सज्जनों, राम रूप नूं धारिआ गुरुनानक*, शरधावान डिट्टा हनुमान सज्जनों, तुलसीदास दी राम ते देख सरधा, रूप धारिआ राम दा कानह# सज्जनों, चतुरभुज^ दे रूप नूं धार मिलिआ, सरधा धू दी लई पछान सज्जनों, मांई दास दी सतगुरु देख शरधा, रूप धारिआ क्रिशन + दा आन सज्जनों, उहो देख शरधा बूड़े चोर दी नूं, बाबे धारिआ तीर कमान सज्जनों, गीता** विच प्रतगया करी सवामी, करन आपना बचन निबाहन सज्जनों

* श्री गुरु नानक देव जी महाराज ने राम रूप धार के हनुमान जी नूं संतुष्ट करना। (नानक प्रकाश उतारध अध १८ छंद७२)

दोहरा -कैसी छबि है आप की, भले बिराजे नाथ। तुलसी मस्तक तब निवे, जो धनशबान होइ हाथ ॥
क्रीट मुकुट माथो धरियो, धनशबान लीओ हाथ। जन तुलसी को कारने, नाथ भए रघुनाथ ॥

^ देखो श्री मद भागवत पुराण । + देखो गुरु प्रताप सूरय रा १ अं; ५

** श्लोक - यो यो यां यां तनुम भकुः सरथा चिंतुमिछति। तसया तसया चलां शा था तामेव विक्वामियहम् ॥ २१ ॥

पद छेद - यः यः याम याम, तनुम, भकुः, सघया अरिचतुम इछति। तसय तसय अचलाम, शुधाम् ताम एव विक्वामि अहंम् ॥ २१ ॥

अनवया अर्थ- यः जो, याम-जिस, तनुम - देवता के सरूप को, भक्र - सकामी भगत, सघया शरया से, अरिचतुम पूजनां, इछति चाहता है,

तसय - ऊस (भगत की), अचलाम् सथिर, शरधाम-शरथा को, ताम् ऐव - ऊस ही देवता प्रति, विक्ष्यामि - करता हूँ, अहम् - मैं अर्थात् - जो जो सकामी भगत, जिस जिस देवता के सरूप को पूजनां चाहता है, मैं ऊस सथिर भगत की शरधा को, ऊस ही देवता प्रति करता हूँ

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (५९)

॥ दोहरे ॥

छे महीने पास रख, कीआ चोर ते साध। जनम सफल तिनका भया, मेटी अधि उपाध॥

दोनो घर अपने गए, छड्डे सभ विकार। देव कीए प्रभु दैत ते, जपै नाम करतार॥

बूड़ा रूड़ा तारिआ, कर किरपा भगवंत । आगे कथा रसाल सभ, सुनो साध अर संत ॥

श्री बाबा ठाकुर जी महाराज ने चब्बे नगर विच जाके मोतीराम ब्राहमन दा दरिदर फूकनां

घनाछरी छंद

आज प्राण नाथ मेरे चब्बे ग्राम आइ कर, धाम मोती राम टूटा खाट प विछा ज़री बाफता ना ताफतर्ता अमोल कोई, लाफता गढेला नहीं ऐसे प्रभु साजे हैं मानो बिप दारदी सुदामा को अवास याही, ठादे निकट बिदर, मानों नैन जाके लाजें हैं रेण जगे भाग भाले" आए हैं अवास जाके, छोर मोतीराम को दरिद्र आज भागे हैं

पंडित मोती राम जी दा अपनी पत्नी प्रती कथन

मोती राम कहिंदा अपनी इस्त्री नूं, भागांवाली ऐ रब्ब दी पिआरीऐ नी लालों घरी जिओं गुरु किरपाल पहुंचे, जाप-पात नां जिन्हां विचारीऐ नी गए बिरद दे घरीं भगवान जी कूं, छप्पर* हेमे जिओं रात गुज़ारीऐ नी तिवें असां दे घरीं भगवान आए, करो सेव सभ देर निवारीऐ नी

पत्नी दा पति प्रती बचन

जोड़ हथ कहिंदी पिआरे पती ताई, भाजी कास दी दाल बनावनी है, साग बिनां नां दूसरी चीज़ घर विच,
जेहड़ी इन्हां नूं चाहद खवावनी है, पैसा पास नां मुल्ल लिआवने नूं, पैसे बिना नां किसे दिवांवनी है, रेण
हुकम होवे तिवें करां स्वामी, गल आपदी नहीं उलटावनी है

१ मंजी २ नरम ३ अमोलक बस्त्र ४ शरमिंदे ५ मथ्थे दे

* देखो सूरज प्रकाश रास ७ अंसू १४ छंद २० तों

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (६०)

पंडित मोती राम दा कहिणा

पंडित आखिआ साग ही चाढ़ देवो, भुख्खे संत नां होवदे खाणिआं दे प्रेम वेखके बैठदे आन सथ्थर,
पलंघ छड्डुके राजिआं राणिआं दे मेवे तयागदे बिना प्रेम जेहड़े, फक्के मार राजी हुँदे दाणिआं दे रेण
मानीआं दा मान खंड देंदे, माण रखदे आप निमाणिआं दे

भुख्खा होवदा जेकरां खाणिआ दां, मिसी रोटी ते कोधरा खांवदा किऊं भुख्खा होवदा जेकरां मंदरा दा,
छप्पर होमे ते बिदर घर आवंदा किऊं भुख्खा होवदा रेशमी बसत्रां दा, खदर भागोदा गले विच पांवदा
किऊं भुख्खा होवदा जेकरां रूपदा उह, दवार भीलनी कुबजां दे जांवदा किऊं भुख्खा होवदा घोड़िआं
हाथिआं दा, नंगे पैरी जा गजनूं बचावदा किऊं भाऊ भगत दा रेण भगवान भुख्खा, भाई वांग* अंदर फेर
गांवदा किऊं

पंडित आखदिता जदों साग चाढ़ो, नारि सति कहि चीर धरान लग्गी डिट्टा लूण नां मरच है घरी कोई,
जदों साग दे विच उह पान लग्गी बाबे पास बैठा पंडित भरे मुट्टी, नाल सैनता पास बुलान लग्गी पंडित
उठके रेण जद पास आया, लूणमरच अन होंद सुनान लग्गी

पंडितोवाच

पंडित आखदा पास नां इक कौडी, लैके मुल्ल जो लूण ही पा देईए घटां घटां दी जानदे आप मालक,
केहड़ी गल्ल जो उन्हां सुना देईए बिना लूण जिऊं बिदर दे घरों खाधा, तिवें असी भी उन्हां खिला देईए
रेण छकनगे नाल प्रेम स्वामी, जेकर लूण विच शरधा पा देईए

* भाई गुरदास जी गिआन रतन माला विचों 'गोबिंद भाऊ भगति दा भुखा' (वार१०)

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (६१)

कविओ वाच

मोतीराम जी दरूस के इसत्री नूं, चरन बाबे दे बैठ दबान लगगा छड्ड कुला हंकार निरमाण होके, करके
प्रेम ते सेव कमान लगगा जनम जनम दी रंकता साड़ने नूं, मानो चिनग चुवातड़ी लान लगगा भागां वालड़े
रेण हो करन सेवा, होवे जिनां दी पुसत भगवान लगगा

घड़ीआ दो कूं गुजारीआ बैठिआं नूं, भोजन करके नारि तयार बैठी सद्धे पति जी आओ कराओ भोजन,
मैं ता आपदी करां इंतजार बैठी भोजन पा थाली अगगे रख बाबे, पख्खा पकड़के नाल सतकार बैठी साग
रखिआ लूण तों बिना अगगे, इह कुछ सोचदी हो शरमसार बैठी

बाबा करे भोजन नाले बचन करदा, भोजन विच सवाद जो दस्सदे ने कदे आखदे लुच्चीआं वांग रोटी,
वांग पूरीआं दस्सके हस्सदे ने साग दसदे खीर समान बनिआ, कदे कहिन गुल्ले बने रूसदे ने रेण बिदर
दा खाके साग लूणां, ढेर लांवदे क्रिशन जिउं जस्सदे ने

करके चुला बाबा सवाधान बैठा, गुण गांवदा समां बितावंदा ऐ, कहिआ पंडता कढ़ सामान सारा, साडा
साड़ने नूं चित्त चाहुंदा ऐ, मन्न हुकम ते कढ़िआ विच वेहड़े, हथ्थी आपणी अगन लगावंदा ऐ, पलक
विच सभ राख दा देर होइआ, मोतीराम मन खुशी मनावंदा ऐ

वेखन वालड़े लोक पड़चोल करदे, घर इन्हां दे साधड़ा आइआ चंगा, कुछ खाण नूं लभदा नहीं पहिले,
इसने आन के साफ कराइआ चंगा

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (६२)

नहीं छडिआ कुछ भी लंग लाणा, लाके अगग सू बाल वखाइआ चंगा निंदा करन मूरख वेख वेख के ते,
भेद असलदा किसे ना पाइआ चंगा

उधर अगग लग्गी सड़े लंगलाणा, ऐधर बाबाजी ताड़ीआ मारदे ने, नाले लैण भवाटीआं आंभलांभे, नाले
मुखों बोलन बचन मारदे ने साड़ दीआ दरिदर है ब्रहमनों का, बार-बार इह मुखों उचारदे ने रेण कख नूं
साड़के लख देइए, विउंत आपने दिलों विचार दे ने

पाधड़ी छंद

मोती राम कहे फिर बाबा, जाओ तुसी लाहौर शताबा । घास जखीरा होइ नीलाम, खलकत होसी खड़ी
तमाम ॥ १॥ बोली देकर ले तुम आओ, जाओ शीघर देर ना लाओ। मोतीराम गिआ सी दौड़, छेती
पहुंचा जाई लाहौर॥ २॥ जाके जिस दम बोली दित्ती, उसने खतम इनां ते कीती निसर्फ पेशगी पैहले
मंगे, पंडित जी हो गए उंतगे॥ ३॥ शीघर आए बाबे पास, मन विच धर चनन की आस । आकर बिनय
करी भगवान, पैसा एक न मेरे पान ॥ ४॥ लए उनां ने अध्ये मंग, साडे पास नां भुन्नी भंग। बाबे
कहिआ रहो इस ठौह, अब मत जाओ बीच लाहौर॥ ५॥ आपे पहुंचे ऐथे आन, जो कुछ लिखिआ है
भगवान। हुकम मान ना गिया लाहौर, रुझा घर दे कारज और॥ ६॥

१अध्ये २ हथ्य ३ होर कम्मा विच तयरात

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी: अनुवाद (६३)

सुन लौ औधर दा ब्रितांत, बीत गए जद दिन पंज सात। ऐहलकार राजे पै जाई, दित्ता कुल ब्रितांत
सुनाई॥ ७॥ कहिआ नां आईआ मुड़ कर कोइ, लैणे गया रूपये जोइ। कैसे हुकम अहे महाराज#, हुकम
होइ तस कर है काज॥ ८॥ महाराज कहिं ऐसे करो, बेचो घास रूपये धरो। ठेका लऊ खजाने पाइ, बाधा
ऊस नूं दिओ पुचाई॥ ९॥ ऐहलकार ने तैसे कीनां, जैसा हुकम राजे ने दीनां ॥ वाधे दी सी माया जेती,

मोती रामे पहुंची तेती ॥ १०॥।।ऐसे मिला पदारथ आइ, जैसे सुदामे दीआ पुचाइ।चार पदारथ दीऐ
सुदामे, ऐसे ही अब मोती रामे ॥ ११ ॥।।माया आई चाई घूक, ऐसे दीआ दरिदर फूक ॥।।मोती राम पंडित
दी अंस, अब है चब्बे में अवितंस' ॥ १२ ॥।।बेली राम आदि जिन नाम, हर छिन सिम्रन करते राम।बाबा
जी के अति सरधाल, नहीं भुलावेँ नाम दिआलू लू॥ १३ ॥

कवि उवाच

घनाछरी छंद

बेलीराम आदि अंस चर्बे में अवास जाका, कमी ना पदारथ की किरपा करतार की कहीं भैंस कही गाए,
टांगे, बध्धी कहीं लाए, कहीं बांध रही देखों शुतर मुहार की भौन में भंडार भरे, भूखन हज़ार भरे, थाती
में दीनार भरे, बसन नां शुमार की महिल औ मुनार कौन करे है शुमार आए, संपदा जो दई बाबे ठाकुर
अपार की

#महाराज रणजीत जी सिंघ १ सिरोमणी २ संतान विच ३ऊंठा दीआं मुहारां ४थैली ५ सोने दा सिक्का,
मोहर

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (६४)

कवि उवाच ॥ सवैया ॥

दासा भाव धरें मन जो नर, ठाकुर नाम धिआवत हैं। निस बासर आलंब' एक रखें, मन हरखते ही गुन
गावत हैं॥

दूख ना भूख रहे उनको मन, इच्छत ही फल पावत हैं। रेण कहे सुर घेण मनो कर, प्रापत चिंत मिटावत
हैं॥

#टेके मेहतर दा प्रसंग

॥ दोहरा ॥

टेका मेहतर एक था, नखड़ नगर जास।

बाबा जी पै आइ कर, कबि कबि करे निवास ॥

चौपई

ऐक दिवस प्रभु टेके ताई। मुख ते ऐसे बात अलाई। चल्ल टेका तूं हमरे संग। ढाब सैल की चीत उमंग
॥ १॥ जाकर दाब तीर इम कहयो। टेके ने सरवन सुन लयो। बाबा जी गए जल के बीच। चले चरन पग
छवै नहिं कीच ॥ २॥ जल पर ऐसे जात निहारे। जैसे प्रिथवी पर बिन बारे। मध्य दाब जा पाछे हेरा।
टेका आवत नहीं पिछेरा' ॥ ३॥ बाबाजी तब ऐसे कहयो । डूबन ते डरता इम रहियो। टेका हमरी टेक नां
लीनी । ताते त्व मत भई बहु हीनी ॥४॥

१ आसरा २प्रसन्न ३ कामधेनु गउ ४कन्नी ५देखे ६जल ७ विचले ८ पिछों ९आसरा

टेके दी संतान इउं है। टेके दा रामा, रामे दा देवी दित्ता, देवी दित्ता दा लघू, लघू दा जैठू, लघू ते जैठू
नरवड़ नगर विच मौजूद हन

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (६५)

जो हमरे तू पाछे आवत। जनम मरन तुमरा मिट जावत। ऐस ढाब से होकर पार। मिट जातो त्व पुन
संसार ॥ ५॥

तू ने हमरा अलंब छोरा। हमने तुमरा कर नहिं छोरा । अब त्व जनम दुतीय हवै जबै। पार तीर पर लै नैं
तबै॥ ६॥ करी परतगया टेके संग। दुती जनम त्व भवं हवै भंग । ऐसे कौतक कर भगवान। आन थिरे
पुन निज असथान॥ ७॥

"जनके चरन तीरथ कोटि गंगा"

बिजै दंडक छंद

गोबिंद राम ब्रह्मण रैहिंदा विच नरवड़, कीती आनके सी नमसकार पंडित बाबे आखिआ पंडिता रिहो
किथे, बहुते दिनी आ दीआ दीदार पंडित नित नेम तेरा ऐथे आवने दा, दित्ता कास नूं तुसां विसार पंडित
सानूं खोलके हाल सुना सारा, दित्ता दिलों जे चुक्क पयार पंडित

पंडित गोंबिद राम दा उत्तर

पंडित आखदा जोड़ के हथ दोवें, हरदम आपदा हां ताबेदार बाबा नगर होंवदा तां दरशन नित्त करदा,
गिआ रिहा सी घरों में बाहर बाबा गया आदि तीरथ कीते जाइके ते, नाले परस आया हरीद्वार बाबा घरी
अज्ज पहुंचा, बिना देर कीते, पुज्जा तुसां दे चल्ल दरबार बाबा

१हथ २ जनम मरन ३ नाम

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (६६)

श्री बाबा जी दा बचन

बाबे आखिआ पंडिता भली कीती, निसफल भटकिओं विच संसार सारे गुरु नानक दी बाणी तों छड्ड
शरधा, पए भोग दे दुख अज़ार सारे तीरथ चल्ल के आउंदे नित्त ऐथे, लाहुण आपने पाप दे भार सारे
'रेण' परसदे संत पवित्तर हुंदे, मति गुरनानक दे हुकम अनुसार सारे

पंडितो वाच

पंडित आखदा बचन है सत्तय रावर', आवे मुझ नूं किवें इतबार बाबा कोई नदी नाला चल्ले दिसदा नां,
दो सौ कोह ऐथों हरीद्वार बाबा कोई नहीं नाला धरती हेठ आवे, प्रगट करे ऐथे आन बार बाबा करके
मेहर मेरी शंका दूर करनी, हरदम आपदा मैं ताबेदार बाबा

श्री बाबाजीओ वाच

बाबे आखिआ एह जो खूह साडा, गंगा रोज़ ऐथे चल्ल आऊंदी ऐ पापी पाप जो लाहुंदे जा गंगा, ऐथे आन के ते पाप लाहुंदी ऐ पावन होवंदी उस दम आन ऐथे, जदों आनके टुब्बीओं लाऊंदी ऐ रेण करे जो नहीं यकीन साडा, करी जिवें तेरे मन भाऊंदी ऐ

पंडतो वाच

पंडित अरज़ कीती हथ जोड़ दोवें, गंगा रोज जो दस्सदे आइ बाबा गड़वी इक डिग्गी हरिद्वार मेरी, ऐथे ऊसनूं दिओ मंगवाई बाबा

१ आपदी

२ गुरुवाक - "गंगा जमुना गोदावरी सरसुती ते करहिं उदमु धुरि साधू की ताई। किल विख मैलु भरै परै हमरै विचि हमरी मैलु साधू कीधुरि गवाई ।" मला:मा: ४

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (६७)

तद तां होवे यकीन है ठीक गंगा, शंका दास दा दिओ मिटाई बाबा, रेण आपदा बचन जे सत्य होवे, गंगा जावनां कास नूं धाई बाबा

श्री बाबा जी दा बचन

बाबे* आखिआ हेठला खूह देखो, गड़वी तुसां दी ओव्सदे विच आई ,गड़वी तुसां नूं जेकरां मिले ऐथे, गंगा जाणनां होइके जिच्च आई, गिआं वेखिआ झांत जां मार हेठां, गड़वी नज़र अंदर तरदी टिच्च आई ,कड़्डी बाहर पछान के ठीक जाती, करके रेण दी गंगा कर खिच्च आई

पंडति उवाच

जोड़े हथ्य आ बाबे दे चरन पकड़े, दठा चरनां ते पिआ घिघआंवदा ऐ, बचन आप दे सतय ने प्रभु मेरे,
निसचा असां दे मनीं ना आंवदा ऐ, करो दया ते बखरा लौ भुल्ल मेरी, भुल्ल गिआ मैं बचन उलटांवदा
ऐ, गंगा ठीक है आपदी चरन दासी, बार-बार इह मुखों सुनावंदा ऐ

श्री बाबा जी दा बचन

बाबे आखिआ बखशिआ ब्राहमणां ओए, गुरु बचन नूं नहीं विसारनां जे ,रेण साधु दी कोटि अपराध कट्टे,
कीती तीरथां इहु विचारनां जे, तदे आंवदे चल्लके पास संता, करके जांवदे पाप निवारनां जे,जनके#
करन तीरथ कोटि (हैन) गंगा, नानक गुरु जी करे उचारनां जे

* इसी प्रकार श्री गुरु अमरदास जी महाराज ने भी आपने इक प्रेमी दा गुरदवार डिग्गा लोटा श्री पावन
बावली साहिब श्री गोबिंद वाल विचों कड्ड के उपरोक्त सिधांत नूं सी। देखो गुर प्रताप सूर्य रास १अं५८
छं १७ तो ४१ तक।

स्पष्ट गुरु वाक्य - "जनके चरन तीरथ कोटि गंगा"।

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (६८)

॥ दोहरा ॥

मेरे प्रभु किरपाल हो, ब्राहमण कीआ उद्धार । आगे कथा जो होइगी, सुनो साधु निरधार ।।

पूरबले जन्म दे समाचार

बिचै दंडक छंद

जिसदी जाति सुनार ते रहे नखड़, भाग सिंघ तिस नाम पुकारदे जी, करे आन सतिसंग निसंग होके,
पास बहै बहु आन सरकार दे जी, इक दिन अरज़ कीती हथ्य जोड़ करके, सुनों बचनन बाबा औगनहार
दे जी, पिछले जनम दे हाल चा कई दस्सन, संत होंवदे जो सिरजनहार दे जी, कई हाल अहिवाल

बतांवदे ने, होवन वालड़े विच्च संसार दे जी, कई मरन जम्मन पहिले दस्स दिंदे, कीती ग्रंथ दी बिना विचारदे जी, कई आमदन ते खरच दस्स दिंदे, बचन निकलदे उन्हां दे सारदे जी, रेण आप भी रब्ब दे संत पूरे, दस्सो बचन कोई मजेदार दे जी

श्री बाबा जी उवाच

बाबे आखिआ गल्ल इह बहुत छोटी, अससी बड़ी तो बड़ी भी जानदे हां, तिनां लोकां दी खबर लै पुछ सार्थों, हर दम अख्खीआ दे नाल छानदे हां, घटा घटा दे विच निवास साडा, किते दुखी किते सुख मानदे हां, कई जनमां दे हाल नूं दस्स देईए, तेरे हाल नूं जिवें पछानदे हां, सच्च झूठ नूं लई नितार आपे, सुणी कन्न दे असी वखान दे हां, बालो नाम ते झीवरी जाति तेरी, पिछले जनम तै नूं ठीक जानदे हां

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (६९)

गोइंदवाल नगर जित्थे रहिन तेरा, करदे झीवरां दा तुसी कम्म उथे, जल कढ़दी खूह ते खड़ी तूं सी, आसी आके गए सी थम्म उथे, लगी प्यास सी, मंगया असां पाणी, दित्ता प्रेम दे नाल इक दम उथे, पाणी पीतिओं ठंड पै गई हिरदै, चार घड़ी बैठे हो बेगम उथे

असां बचन कीता हैसी ओस वेले, जिवे असां नूं जल छकाइआ ऐ, ठंडा पी पाणी हां प्रसन्न होए, दिल असां दे विच इह आइआ ऐ, जनम दूसरे विच तूं जदों आवें, होसी जनम मनुख दा पाइआ ऐ, तपत चित्त तेरा असां शांत करना, त्रिशनां धुप जो अधिक तपाइआ ऐ, जल पा संतोख दा चित्त तेरे, करनां असां ने सुखी सवाइआं ऐ, उस वाईदे नूं पूरा करन वाला, समां जाण लै अज उह आइआ

पहिले नहीं यकीन तां पता कर लै, जेहड़ा असां ने सुखन सुनाइआ ऐ, दित्ता गुठ दा पता निशान सारा, घरी पइ दस्सी ऊसनूं माइआ ऐ, तेरे पोतरे करन निवास ओथे, होर दूसरा कोई नां आइआ ऐ, जाके कढ़ रूपै दे पौतरे नूं, ऊसनूं भली प्रकार समझाइआ ऐ, माइआ पुछिआ भाग सिंघ है केती, पूरा गेनती सौ बताइआ ऐ, रेण भाग सिंघ टुर पिआ वक्त उसे, मिनट इक भी देर नां लाइआ ऐ

भाग सिंघ ने गोहिंद वाल पुज्ज के सारा पता करना

गोइंद वाल पहुंचा छेती चलके ते, इक गली विच जाइ खलोवंदा जे, बालो जीवरी दा घर पुछदा ऐ, जे कोई सामने आदमी जोवंदा जे, बूढ़े इक ने दस्सिआ हथ करके, पोता बालो दा भैंस ओह चोंवदा जे

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (७०)

भाग सिंघ पहुंचा वेहड़े विच जाके, पिछां संगके ते खड़ा होंवदा जे, मैंह चो के उठ सतकार कीता, हथ पैर पाणी लैके धोंवदा जे, कीते बचन बिलास हुलास वाले, दस्सी थां नूं जाईके टौंहवदा जे, थां खोदके देखिआ ठीक निकले, सौं कढ़ के जदों गिनोंवदा जे, पूरन पुरख दे बचन नूं सत्त जाता, शक्क रिदे दे विच नां दोंवदा जे

भाग सिंघ ने मुड़के साधांवाली आवनां

ढक्के पत्ते निशान जद ठीक पूरे, मुड़के विच साधांवाली आइआ ऐ, नमसकार कीती हाथ जोड़ दोवें, सीस चरनां ते आन टिकाइआ ऐ, बाबे आखिआ गल्ल सुना सज्जण, निम्री हो सभ हाल सुणाइआ ऐ, जिवें आपजी दसिआ ठीक सारा, गोइंद वाल जा आप अजमाइआ ऐ

इतने बचन मुहों अजे कड़ढ़ दा सी, भाग ऊसदा उदै हो आइआ ऐ, महापुख्ख दे दख्स दा लाभ ऐहो, श्री ग्रंथ विच गुरु फरमाइआ ऐ, करे मेहर करके चरन धूड़ बखशो, लथे हिरदयो पाप दा साइआ ऐ, तपत हिरदे नूं शांति दा दान बखशो, त्रिशनां अगनि ने बहुत तपताइआ ऐ

काम क्रोध रू लोभ, हंकार चारे, माया मोह दे नाच नचाइआ ऐ, राग द्वैश दी मैल नूं कट्ट बाबा, जनम-मरन विच जिन्हें भरमाइआ ऐ, विशे वाशना दी रहे भावना नां, पिछले भोगां तों अज पछताइआ ऐ, कीता वाइदा आपणां करो पूरा, पूरब जनमदा जिवें सुनाइआ ऐ, भांगा वालड़े दे अज्ज भाग जागे, नाम आपनां अज्ज सफलाइआ ऐ, रेण बचन करदा चरनी आन ढट्टा, फेर उठदा नहीं उठाइआ ऐ

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (७१)

श्री बाबा जी ने उपदेश करनां

बाबे आखिआ हो सवाधान पयारे, तेथे गुरु दी मिहर अपार बीबा, कीते पाप कट्टे असां अज्ज तेरे, कीता भव जलों तुध नूं पार बीबा, काम क्रोध ते लोभ नां दुख देवसन, नेड़े दुकसी नहीं हंकार बीबा, राग द्वैश दी मैल सभ दूर कीती, देखन पए नां जमां दा द्वार बीबा, कर लै अज्ज तों इह प्रतगया तूं, नहीं भुल्लणां नाम करतार बीबा, नाले विधी दस्सी नाम जपन वाली, 'सोहं' जाप धिआन इओं धार बीबा, जान रब्ब दे जीव सभ ते दया करनी, करनां कदी ना ज़रा हंकार बीबा, भुखे नंगे नूं देख के दान करनां, उत्तम सभ तो करन उपकार बीबा, बाणी चित्त लगा के नित्त पढ़नी, करने पड़ी दे अरथ विचार बीबा, रैहणा सदा अहिंस इह धरम जाणी, अन्न आददा करी अहार बीबा, आए साथ ते संत दी सेव करनी, इस ते खुशी होवे सिरजनहार बीबा, करनी कार सदी वही धरम दी ऐ, करना कपट दा नहीं विवहार बीबा, दुनीआं विच बदनाम है जात तेरी, कोई भगत न कहिन सुनार बीबा, तू हुण जात कलंक नूं धो सिट्टी, आवण तदे है सफल संसार बीबा, देही जानणी नहीं सदीव रैहणी, होणा अंत नूं ऐस ने छार बीबा, भला ऐस तों करी हमेश सज्जण, बुरी ऐस तों करी ना कार बीबा, पुत्तर धी ते रन दा साथ काहदा, खाण पीण दे सभ ने यार बीबा, मतलब आपणे दे सक्के भैण भाई, माता-पिता ते होर दिलदार बीबा, लगी रहे जेहड़ी छाती नाल हरदम, कम्म उस ना सको जे सार बीबा, ओसे वकत उहं भी साथ छड्डु बैहदी, देखे पास जे नां पैसे चार बीबा

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (७२)

किसमत पए पुट्टी, सारे होण पुढे, कोई नहीं बणदा मददगार बीबा, वक्त पए ते साथ निबाहुदां जो, नहीं जगत अंदर वफादार बीबा, मतलब जदों ना निकलदा देख देने, चेले गुरु नूं देन दुरकार बीबा, किनहां वासते भला तूं पाप करके, कठे करेगां चार दीनार बीबा, माया कदी नां साथ निबाहुंदी ऐ, आवनजान है ऐस दी कार बीबा, चार दिन मैहिमान सरां दा ऐ, अंत छड्डुना इह संसार बीबा, लद्दी जांवदा साथ सौदागरां दा, तू भी होवनां जलद तयार बीबा, तांते छड्डु टंटे दिलों जगत वाले, इको नाम नूं करी अधार बीबा, रेण देंई उपदेश विचार वाला, दित्ते खोल जो बज्जर किवार बीबा, रेण सारा उपदेश न लिखिआ ऐ, वध जाइनां बहुत विसथार बीबा

भाग सिंह दी बेनती

बाबे मेहर कीती जदों उस उते, हथ जोड़के अरज़ गुज़ार दा ऐ, चरन छड्डु के जावना भावदा नां, कूकर होइआ मैं तेरे दरबार दा ऐ, रही नहीं आसंग तिनका तोड़ने दी, कोमल चित्त होइआ ताबेदार दा ऐ, हिंसा

आदतां पाप रहि गए किधरे, हुकम हो गिआ जदों सरकार दा ऐ,दिओ आगिआ रहां मैं विच चरनां, घरी जावनां नहीं दरकार दा ऐ,रेण चाहुंदा कदे नां जां नगर, ऐब्सा चित्त वैराग नूं धार दा ऐ

श्री बाबा जी दा ग्रिहसथ निबाहुण दा हुकम

बाबे आखिआ भाग सिंघ घरी जाओ, ऐथे तुसां दा नहीं निवास चंगा, चंगा ग्रिहसथ विच रैहण ते नाम जपना, होणा घरां तो नहीं उदास चंगा

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (७३)

चित्त विच वैराग जरूर होवे, ठाठा बागा भी रखनां पास चंगा, रैहणां कमल दे वांग संसार अंदर, हिरदय विच नां माया दा वास चंगा, बाहरों विच विहार दे रहो पूरे, दिलों रैहन हर किसे दा दास चंगा, बाहरों रहो करड़े पत्थर वांग भावें, दिलों रैहन है वांग कपास चंगा, रहिके विच ग्रहसत दे करो सेवा, करो काम ते क्रोध दा नास चंगा, हथी कार करनी दिल यार वल्ले, ऐस तरां दा करन अभयास चंगा, करनी धरम दी क्रित ते वंड खाणा, नाम जपन हुंदा सास सास चंगा, घर छाडु फिर घरां दे विच फिरणा, ऐंदू वध विच रैहण अवास चंगा, घर छाडु बिगानड़ी आस करनी, ऐंदू आपते करन धरवास चंगा, रेण रब्ब नां जंगला विच कोई, करनां रख नूं घरों तलाश चंगा

भाग सिंघ दी बेनती

करके सिर नीवां, दोवें हथ्य जोड़े, कहे बाबा जी बचन ना मोड़ना हां हुकम आपदा जिवें, मैं करां वें, खुशी आपदी सदा ही लोड़ना हां चरन पादका दी बखशश करो बाबा, हिरदय नाल मैं इहनां नूं जोड़ना हां हुकम आपदे नाल मैं घरी रहिसां, नहीं तां दिलों प्रीत नूं तोड़ना हां दिलों रहां असंग मैं विच माया, चित्त नाल तेरे चरनां जोड़ना हां बुरे लगदे ने साक रेण सारे, प्रीत सभम दी अज्ज मैं तोड़ना हां

श्री बाबाजी ने चरन पादकां की बखशश करनी ते भागसिंघ दी प्रसन्नता दा वर्णन

चरण पादकां दी जोड़ी नाथ दित्ती, भाग सिंघ उते मेहरबान होया लैके नाल सतकार दे सीस रखी, नाल खुशी दे घरी खान होया

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (७४)

खुशी नाल ना मेवंदा विच जामे, जनम अज्ज मानों नवां आन होया, या के जनम दे रंक नूं मिला पारस, दरशन धूं नूं जिवें भगवान होया, रूपे साधूं नूं जिस तरां विच जंगल, हर गोबिंद गुरु दा दरशन जान होया, बाबे नानकी दे याद कीतिआं जिउं, आवन नानक गुरु पूरे सुलतान होया, काइर खुशी जिउं छट्ट मदान आवे, करके सूरमां खुशी घमसान होया, या जिउं लंक नूं राम ने विजय कीता, खुशी जिवें ओदों हनुमान होया, जिऊंकर विछड़े मीत दा मेल होवे, मिले बामन नूं जिस तरा दान होया, दुखी देख जिउं दुशट प्रसन्न होवे, होवे साधूं दा जिवें सनमान होया, बामन खीर ते भज्जदा खुशी होवे, सदनहार जद आप जजमान होया, खुशी देख जिउं मोर घनघोर होवे, कमल देखके खुशी जिओं भान होया, चातृक बूंद जिउं पान कर खुशी होवे, बुलबुल वेख खुशी गुलसतान होया, कामी खुशी जिउं इसत्री मिलण उते, शमां देख पंतग कुरबान होया, चंद देख समुंदर जिउं खुशी होवे, जोगी खुशी जद विच सवाधान होया, चंद देख समुंदर जिउं खुशी होवे, जोगी खुशी जद विच सवाधान होया, परउपकारी कर खुशी उपकार होवे, पापी पाप कर जिउं सवधान होया, क्रितधन जिउं खुशी अपकार करके, धन वेख लोभी बेईमान होया, बली लै जिवें देवता खुशी होवे, खुशी गोपीआं विंच जिउं कान्हां होया, निंदक खुशी होवे कर कर निंद पापी, सच बोल खुशी सत्यवान होया, सिख खुशी होवे पढ़के सुध बाणी, गुरु खुशी डिट्टे सरधावान होया, सोता खुशी विद्वान जिउं होई वकता, विद्वान कर खुशी वख्यान होया, चुक सीस ते पादकां चलिआ इवें, सूरं युध नूं जिवें रवान होया, काइआं होर दी होर हो गई दिस्से, तंदरूसत जिवें कर रोगवान होया

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (७५)

फुल्ल वांग होगिआ सरीर होला, पाप पोंट तों जदों निरबान होया करजदार दा करज, जिउं गिआ दित्ता, चिंता रैहत जिउं फेर इनसान होया जनम जनम दी मैल सभ कट्ट घत्ती, जैसे विच्च हमाम इशनान होया रेण नहां आइआ गंगा जिवें ब्रामन, भाग सिंघ खुशी भगवान होया

कुछकुं दिनां पिछों भाग सिंघ ने आपणी म्रितयू निकट जानके चरन पादुका नूं पावन असथान श्री साधावाली पहुंचा

कुंडलीआ छंद

मगन आतमा नंद, मैं भाग* सिंघ सुनिआर, निकट जान म्रितयू समां, पहुंचा चल्ल दरबार पहुंचा चल्ल दरबार, पादकां सीस उठाए, धर बाबे दे अगर, मुखों इओं बचन सुनाए मम पीछे सतकार करे, नहिं इनको को जन, मैं अब करो धयान, होइकै आतम मगन

|| दोहरा ||

दिन चाली पसचात, तिस गुरपुर कीयो पयान । फुलमाल गज जिउं गले, ऐसे तनै प्रान।। ऐसे चरित अनेक करि, पापी करे उद्धार। रेण आप की शरन है, भवनिधि ते कर पार।।

चरण पादकां संबधी नोट कुंडलीआ छंद

चरन पादका ऊह हुनु, जो है कछुक उतंग से। दुती निकसी असथान ते, प्रिथवी को कर भंग। प्रिथवी को कर भंग, निकासी जौन लंबोदरं । सतयुग# ते ले आदि, पड़ी रही धरनी उदरं । त्रिती सिंघ सरदार, शामने दर्ई अपर न। जरी हेम की तार, पादका ठाकुर चरन ।

* आप जी दा पड़ोतरा भाई नाराइण सिंघ चक्क नंबर ४५ नरवड़ पते मंडी जिला लाहौर दे पास रहिंदा हैं।

१ पउए २ अगगे ३ पिछों ४ हाथी ५संसार समुंदर ६उच्चि ७ धरती खोद के ८ लम्मीआं ९ विच १० होर ११ जड़ी १२ सोने

जो कोई वादी शंका करे कि सतयुग दीआं इह वसतु धरती विच किवें रहीआं उस नूं कंग नगर जिला हुशिआरपुर विच पंचम पातशाह दे वेले दी लौह दे दरशन भाई मंझ दे गुरुद्वारे विच करने लोड़ी दे हन जो आँदो तो रोज अग ते चड़दी है पर देखण तो इउं प्रतीत हुंदा है कि हुणे लुहार ने घड़ के रखी है, इह आलौकिक शक्ति है।

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (७६)

॥ दोहरा ॥

अब लग सभ सथान पै, दरसत है सभ कोइ । अघ' कटते जिन दरस ते, निरमल होवत सोइ ॥

नातूशाह नूं मक्के दी जिआरत

फक्कर लोक कुछ बदी यादवाला, नातूशाह सी उसदा नाम सांई, रहिंदा विच नरवड़ घर उसदा सी, कदी कदी आ करे सलाम सांई, इक दिन आ गिआं ,तलब दीदार दीते, बाबे नाल होइआ हमकलाम सांई, बाबे पुछिआ पढ़ो निमाज़ के नां, अगों आखदा पढ़ो गुलाम' सांई,बाबे आखिआ सच्ची के लोक ठग्गी, पढ़दे दस्सिओं सच तमाम सांई, सची झूठ दी खबर नां कहे नातू, फरज़ अब्सां दा पढ़न कलाम सांई, सच झूठ दा करो नितार कोई, बंदे रब्ब दे तुसी मुदामं सांई, बाबे आखिआ सच्ची निमाज़ उहो, पढ़दे रुह जो करे मुकाम सांई, घोड़ा रुह दा टिके नां इक लहज़ा, काबू नहीं जे उह दी लगाम सांई, तां ते जान निमाज़ ना ओह सच्ची, आरफ लोक कहिंदें ऊसनूं खाम सांई, बिना सच्ची निमाज़ न जात नाहीं, कहिआ विच कुरान इमाम सांई, नातू आखिआ टिके नां रुह साडी, फिरे दौड़ दी चार ही धाम सांई, सिरफ आपनी गल्ल नां दस्स दा हां, पढ़दे सभ ऐसे खास आम सांई, बाबे आखिआ फेर दुहराके ते, नातूशाह सुन सच कलाम सांई

१पाप २ बुद्धि ३इच्छा ४ दरशन ५बचन बिलास ६ सेवक ७सारा ८बाणी ९ हमेशा सदीव १०मन ११ इके इसथित १२पलक १३गिआनी १४कची १५मुक्ति १६ मुसलमानी मत दा इक ग्रन्य १७ आगू १८ पासे १९ बचन

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (७७)

सच्ची पदे निमाज़ इक पलक जेहड़ा, रब्ब ऊसते करे अक्राम' सांई, नही तां जान निमाज़ नाटक रानें, लोकी मारदे जे सुबह शाम सांई, हिंदू करें नां सच्च दी संघया जे, राजी ऊसते नहीं जे राम सांई, सिख पढ़े, बाणी इक चित्त नाहीं, गुरु साहमने ऊह खुनाम सांई ,मुसलम पढ़े निमाज़ नां सच्च वाली, करे ऊह निमाज़ बदनाम सांई, झूठे झूठ दी पंड उवाचदें ने, खावन जमां तो अंत कुशनाम सांई, उथे दंभ दा मुल्ल नां पए कौडी, चाहे वट्टनां जेकरां दार्म सांई ,छड्डो दगे फरेब ते ज़िद तांई, इन्हां नाल नां खशी गुलफाम

साईं, फल भले का भला हमेशा होवे, अत्ते बुरे दा बुरा अंजाम साईं, याद विच गुजारनी उमर सारी, आवन जगग का इहो इनाम साईं, केहड़ी गल्ल ते दंभ फरेब करने, कुल जिंदगी चार अयाम साईं, दस्सो आवणे दा ऐथे फाईदा की, कीता खुशी जे नां गुल अदाम साईं, हथ्य (हाथ) झाड़ बोवें ऐथों चला जाणां, कीता कम्म ना भला नकाम साईं, भला सच की पड़न का शौक होवी, छट्टी बंभ के सभ कमाम साईं, मामू साह नूं नाल लै आवणां जे, अते होर उलमा तमाम साईं, पदके बस्सिए तुसां निमाज़ सच्ची, जिसते रूहे नूं मिले अराम साईं, पढ़नी फज़र दी आन के पास साडे, वेखो ऊसवा फेर अंजाम साईं, नातूशाह सुन बचन हैरान होइआ, सतवार कर गिआ सलाम साईं, सजनों असल की गल्ल जे पुछदे हो, सच्चे सच्चे का जाण तुआम साईं, करी रेण ते भी किरपा वांग नातू, लखवार मैं करां प्रणाम साईं

१ किरपा २ पाखंड ३ सवेरे ४ शाम, संध्या वेले ५ दोशी ६ गालां ७ पाखंड ८ मुल्ल, कीमत ९ पिआरा १० फल ११ नतीजा १२ रिहाई १३ १४ १५ १६ विद्यापंडित १७ तारे १८ सुख १९ सवेर, अमृत वेला २० फल २१ वाहिजड २२ मोजन २३ नमस्कार

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (७८)

दूसरे दिन नातूशाह ने मामूशाह आद नाल बाबाजी दे चरनां विच पुज्जनां

दिन दूसरे' नूं होइआ फज़र वेला, नातूशाह आ करके अदाब बैठा मामू शाह समेत बहु नाल आंबे, होके सभस के विच सदाब बैठा बहुत लोक आए होर चल्ल देखन, हर इक बिल के विच अज़ तराब बैठा पढ़ वेखीऐ अज निमाज़ सच्ची, बिल विच लै उमग शिताब बैठा ऊस सच्ची निमाज़ दे लफज़ कीने, सोचे ऊसदा फेर सवाब बैठा कयों आइ पैगबरां हवा कीती, आपे करे सवाल जवाब बैठा पंजा बिना नां कहीं कुरान अंबर, होइआ सोच के विच गरकाब कवे रूह बी सोचका किवें टिकदी, सोचे रूह के कदे इंकलाब बैठा ऐसा सोच के विच गरकाब होइआ, होवे जिवें कोई विच खुआब बैठा ऐसी विच मसती बैठा पाब्स बाबे, भौरा जिवें हो पास गुलाब बैठा रेण बाबाजी मगन आनंद अंदर, मानों आप जिओं आन जनाब बैठा

श्री बाबा जी दा बचन

थोड़ी देर पिछो बाबे बचन कीता, सच्ची कहो निमाज़ पढ़ा देईए, डुब्बे जांवदे हो मझदार अंदर, बेड़े पकड़ के हथ चढ़ा देईए, रूह वांग पारे आवे हथ नाहीं, कंठा ऊसदा कहो घड़ा देईए, शेर वांग शैतान जो

जोर वाला, कहो ऊसदे नाल लड़ा देईए, सतवें कहो असमान ते रब्ब बैठा, तेरे सामने कर खड़ा देईए,
नेतर आपणे बंद कर लै सारे, रेण किते दे किते ढुड़ा देईए

नातूशाह ते मामूशाह दोहां दीआं कबरां नगर नरवड़ विच पूजीदीआं हन १ अगले दिन २ सवेर, अमृत
वेला३ नमस्कार ४ बहुत ५ प्रसन्नता सहित ६चिंता, फिकर ७उत्साह ८ छेती ९ पद, शब्द १०पुण्य ११
जारी, आरंभ १२ प्रश्न-उत्तर १३डुबा १४तबदीलीआं १५ सुपना, ख्वाब, खयाल १६ भंवरा १७ गुलाब दा
फुल्ल १८ वाहेगुरु परमेश्वर १९हूंगी २० अबलीस २१अकास २२अखां

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (७९)

इक पलक विच मक्के दी जिआरत, ते इक पलक विच सांधावाली मुड़ना

मन्नी आगिआ अखीआं मीट लईआं, पलक इक दे विच उघाड़ीआं ने अखां खोलदे सार हैरान होए,
जिधर देखदे महिल ते माड़ीआं ने ,ना है ज़िला लाहौर, नां पिंड नरवड़ साधांवली दीआं ओह न झाड़ीआं
ने, वेखन आपने आपनूं विच काबें, फिरन मौलवी झाड़दे दाहड़ीआं ने, बार बार काबा देख करन सिजदा,
जानन सफल इह अज्ज दिहाड़ीआं ने, नाल खुशी नां मेंवदे विच जामें, रेण दिले दिल मारदे ताड़ीआं# ने
,बाबे हुकम दित्ता अखां खोल देखो, तदों विरती तिन्नां उखाड़ीआं ने, नां ओह रिहा काबा नां ओह फिरन
काजी, नां ओह मौलवी भवां जिन चाड़ीआं ने ,नां ओह रोज़ जुम्मां ना ओह आब जमजम, नां ओह
दिसदीआं उच्च अटारिआं ,उहो देस पंजाब ते पिंड नरवड़, सांधावाली दीआं उहो ही झाड़ीओं नें, टिड्डां
वांग सिर उहो ने साफ दिस्से, ऊहो बैठीआं मुन्नीआं दाहड़ीओं ने, छेती नाल उठ बाबे दे चरना पकड़े,
कहिंदे छट्टीआं नीयतां माड़ीआं ने, मसती बूंद दी ने मसत सभ कीते, मानों पी लईआं भंगा गाड़ीओं ने,
रेण विच जूए मन हार बैठे, सारा जितिआ दाऊ खिलाड़ीओं ने

नातूशाह दी पुना बेनती

मन विच धार शरधा अते प्रेम करके, हथ जोड़ के करदा नातू अरज बाबा, तरेड़ पई शंका-रूपी विच
हिरदे, दिओं मेल इह शक दी दरज़ बाबा, चिंता खांवदी ऐ वढ़ दिने राती, सिर ते होवदां ऐ जिवें करज़
बाबा

मन ही मन विच खुश होना

१हुकम २ बन्द ३ मुसलमानां दा पूज्य सथान ४नमस्कार, सिर झुकाना ५शुकरवार दा दिन ६मक्वे विचले
इक हौज दा पाणी ७ दाव ८दीवार, तरेड़

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (८०)

या है सेरह टूनां किसे आन कीता, शंका रूप लगाया है मरज़ बाबा, सानूं तुसी खुदाइ दा रूप दिस्सो,
पूरी होवसी आप तों गरज़ बाबा, फरज़ रेण दा आप ते अरज़ करनी, उत्तर देवनां आपदा फरज़ बाबा

नातूशाह दा प्रश्न

लिखे सत्त अकास पैगंबरां ने, अते सत्त ही कहिन पाताल बाबा, चौदां तबक ने कुल खुदा कीते, नहीं
पद्रवां होर खिआल बाबा, नानक गुरु कहिंदे लोका लख लिखे, हल ऐसदा करो सवाल बाबा, लिखया
गुरु या सच्च पैगबरां दा, रेण दस्स के भरम नूं टाल बाबा

श्री बाबा जी दा उत्तर

बाबे आखिआ सुनी तूं शाह नातू, कर लै अंसा तों हल सवाल सांई, जो कुझ किसे ने देखिआ कहे
उतनां, इह है सभ संसार दी चाल सांई, जितनी बुर्ध ते उतनी सुध होवे, नहीं ऐस अंदर कील काल सांई,
नरवड़ देख लाहौर नां दस्स सके, दस्से वेखया कोट सिआल सांई, अखी देख पिशौर दी गल्ल दस्से,
नहीं दस्स सके साहीवाल

पार गिआ समुंदरों नहीं जेहड़ा, दस्से लंडन दा आन की हाल सांई, हंस मान सरोवर दी गल्ल दस्सन,
डडू हस्स के छडुदे टाल सांई, झूठा हंस नूं करन ओह हो कट्टे, खूहों नहीं वड्डा होर ताल सांई, जेहड़ा
जाइ के बदरीनाथ पहुंचा, परबत आन दसे हिम आल सांई, इह द्रिशटांत दित्ता तुसां समझ लैणा, कोई
नहीं है कठन सवाल सांई

१ जादू २ रोग ३धरम ४मुसलमानी मत दे आगू ५पढ्दे ६बुद्धि ७अकल, होश ८झगड़ा ९ हिमाला
(हिमालय) बरफ दा पहाड़ १० औखा

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (८१)

डिट्टे सत्त अकाश पैगंबरा ने, अत्ते सत्त ही कहिन पाताल सांई, सतगुरु नानक जी लखां ही देख अख्खी,
लखां होर नां दिए दिखाल सांई, नानक गुरु विच शकत बिसाल हैसी, नहीं दसने लई मिसाल सांई ,जे
कोई आखदा ऐ जानो मूढ़ असं, नहीं उसदे जिहा कंगाल सांई

नहीं ताब ज़बान विच आख सके, इको आख अकाल अकाल सांई ,सतगुरु नानक दे कुतिआं विच
शकती, रख्खी जिन्हां समाल समहाल सांई, होर दासां दी गल्ल की आखनी ऐ, इना विच है शकत
बिलास सांई, मैं तां दासां दा दास हां गुरु जी दा, ओह ने मुझ दे दीन दयाल सांई

जेकर कहो तां लख अकास दसां, दसां नाल ही लख पाताल सांई, इह कुछ कहिंदिआं आखिआ मीट
अखां, करो गुरु दे चरन ख्याल सांई, अखां बंद कर देख हैरान होए, करन लखां दा ठीक जमाल सांई
,लखां देख अकास पताल लीते, हो रहे ने सभ निहाल सांई

डरदे अखीआं खोल दे नहीं आपे, जाए छप मत जा हो जलाल सांई, मूंहों औहड़ दा कुछ नां बोल सकन,
ऐहो कहिन कमाल कमाल सांई, जुबां बंद मीटे गए दंद दोवें, गए भुल्ल सारे कीलों काल सांई, गए
भुल्ल पैगंबरी सभ दावे, देख लिआ जदों अंखी नाल सांई ,हुकम बाबे ते अखी खोली ने, ऐहो कहिन
कमाल कमाल सांई , खातर जमां करके नातूशाह दी नूं, मुखों बोलिआ आप किरपाल सांई

१बहुत २ दिश्टांत ३दरशन ४प्रसन्न ५सुंदरता ६हृद् हो गई ७ झगड़ा

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (८२)

कहो नातू की देखिआं नाल अखां, हल होइआ या नहीं सवाल सांई, उत्तर विच नां बोलदे होर कोई, ऐहो
करिन कमाल कमाल सांई ,कीती निशा ते तोरिआं घरां तांई, कहिंदे जान कमाल कमाल सांई ,रेण दास
ते भी किरपा करो बाबा, हरदम कहां कमाल कमाल सांई

॥ दोहरा ॥

कीता नातूशाह आदि, इस प्रकार उद्धार। आगे कथा जो होइगी, सुन संगत निरधार।।

श्री बाबे जी दे कलंदर दे रूप विच दरशन

घनाछरी छंद

मोती राम चब्बे वाले बिनयं कीती इक वेर, दसवें दिन आप साथे आवनां ही आवनां, मुंडे दा विआह मेरे ठीक साहा दरूस के ते, करके ते मेहर नाथ दरशन दिखावनां, मेरे पास घोड़ा टट्टू यक्का नां बैहल कोई, सूरत दे बिबान उते आके फेरा पावनां, रेण नूं भलावना नां समें सिर आवनां जे, भोजन आ पावनां ते दास त्रिपतावनां

श्री बाबा जी दा उत्तर

आपने जहाज़ ते जे असां चल आवना है, रही सवाधान मते भुल्ल जाए खुमारी ते ,उथ्थे आए सानूं तुसां देवनां नां अन्न पाणी, थक्के टुट्टे पुज्जे जदों आपणी सवारी ते, विआह दे झमेले मेले होंवदे ने मेलीआं दे, होश फरामोश होवे करदे तयारी ते, रेण तुसां असां नूं पछानना नां ठीक जाणों, रोगी ना पछाणे जिउं त्रिदोख दी बिमारी ते

कवि उवाच

बिजै दंडक छंद

जदों रोज़ आइआ चब्बे जान वाला, बाबे रूप अचरज बनाइआ जे, मोढ़े रख खल्लड़ हथ्थी पकड़ डौरू, शिवजी वालड़ा खूब वजाइआ जे

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद(८३)

बांदर रिछ ते बकरी लिए तिन्ने, बूहे ओस दे जाई नचाइआ जे ,रेण कौतकी करे असचरज कौतक, मन आपने नूं जेहड़ा भाइआ जे

सस बदनां छंद

तयारी भोजन, करत रहे जन। ब्रह्मण आंवे, भोजन पावें ॥ १॥

पीछे सभ भाई, खाइ अघाई'। ऐस विचारी, करत तयारी ॥२॥

बाबा आइआ, नाद वजाईआ। रीछ नचाए, भाव दिखाए ॥ ३॥

बुढ़िआ जवानां, नाच दिखाना। देखन हारे, करि बलिहारे ॥४॥

पंडित आए, आख सुनाए। सुनो कलंदर, बहुत सहि बंदर ॥५॥

खुल्ले भंडारू, मिले अहारू। कर नहिं शोरू, कहयो बहोरू ॥ ६॥

तोटक छंद

तब बाबे ने तिन योंई कहा। सुत नारी भुखे ताहिं रहा ॥ दूत देई अहारू जावों मैं। सुत नारी जाइ खुलावों मैं ॥

पाधड़ी छंद

जो मैं उत्तर तुमें सुनात। सो तुम सुनो कलंदर तात। करो नहीं तुम शोर शराबा । भोजन मिले ना तुमें शिताबा ॥ १॥

पहिले खाएं बंधु मीत। जैसी है इस जग की रीत। पाछे भोजन तुमको देई। मांगत गन पुन बहरो लेइं ॥ २॥

ऐसे सुन पुन बाबे कहयो। हमते जात नहीं इत रहयो। हम भोजन पैहले ले जाई । बहुरो पाछो सभ ही खाई ॥ ३॥

१ रजनां २ समेत

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (८४)

इस पर पंडित ठानी रार । मुख से अपने दीनी गार । पास खरो नर ताने कहयो। काहे को तुम झगरो लहयो ? ॥ ४॥

निसको बासि । भीतर देखो जाइ अवासि । होइ रोटका वही लाइ कर इसको दीजै। बहुरो कारज घर को कीजै ॥ ५॥

मोती राम जाइ निज धाम । आए रोटका ले कर बाम । हाथ रोटका दर्ई कलंदर। गिआ कलंदर चल सहि बंदर॥ ६॥

कविओ वाच

घनाछरी छंद

करके विआह गिआ मेल घरो घरी चल, होइ निसचिंत मोतीराम खुश होवदा, शुकुर हज़ार करे बार-बार रब्ब वाला, पुत्त नूह जोड़ी जदों नाल अख्खी जोंवदा, चित्त विच याद करे बाबे जी दे वाइदे नूं, बाबे पास आवणे नूं, ढोइ दिलों ढोवदा, उपालंभ देण बाबे पास आइआ छेती चल, रेण हथ जोड़ खड़ा सनमुख होवदा

मोती राम ने श्री बाबा जी नूं उलांभा देणां

दोवें हथ जोड़ दीन होइके अधीन कहै, बाबा जी विआह ते नां दित्ता आ दीदार नूं, कीता तुब्सां वाइदा बेफाइदा ही गिआ ऐवें, कीता क्रितारथ नां निज ताबेदार नूं, साधू दा बचन तां अटल सभ आखदे ने, टले नहीं कदी टाले बच करतार नूं, आप दी उडीक विच असां दी सूरत रही, करदे सी रेण भावें घर दी ही कार नूं

१ झगड़ा २ गाल ३अंदर ४रोटी ५रात की ६बेहि, बासी ७देखदा ८ सामने

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (८५)

श्री बाबा जी दा उत्तर

बाबा जी शिताबा कर उत्तर तड़ाक दित्ता, असी पुज्जे वाइदे ते सूरत दी सवारी ते, तुसां सानूं पुछिआ नां आदर सनमान कीता, फुल गई नज़र तेरी विआह दी खुमारी ते, आदर ता किते रिहा कीता तिरसकार' सगों, गालां खाके मुड़े होर बचे बहु खुआरी ते, पहिले घर सदना नां बिदनां जे चल आवे, रेण नहीं नीती जाई पूछो नयाय कारी ते

आइआ जो कलंदर नचाइआ रिछ बंदर सी, तुसा उख्स नाल दस्सो जेहड़ी कीती कार सी, मंगी ऊस रोटी तुसां कढ़के ते सोटी दस्सी, नीत देख खोटी तेरी कीती उन्हें रार सी, देख केते रार पासों कहिआ किन्हें सार बच, सुकी बासी दिंदे रोटी कीता तकरार सी, लैके सुकी रोटी रेण, कहो तोकों सचे बैण, ठहिरिआ नां चसा तहां पहुंचा तातकार सी

श्री बाबाजी ने उहो सुक्की सड़ी रोटी कढ़के दिखाउणी

कढ़के ते रोटका उह मोटका करूप जैसी, आगे मोतीराम घरी इसे पहिचानीए, झूठ जो बखानों कहो, साच जो बखानों सहो: साच प्रतगिआ मेरी हीए माहिं जानीए, रोटका पछान परा पग दरुत मोतीराम, खिमां करो मेरी खता दास निज मानीए, रेण निज जानीए, ना कोथ हीए आनीए, नां प्रीखया कसौटी निज दासन पै ठानीए

छंद

मोतीराम निज हाथ जोड़, यह अरज़ गुज़ारे। हम पापी सद भूलते, तुम बखशन हारे। कठन प्रीखया दास की, कबहुं नहीं लीजै। निज करुणां को ठान के, नही पुन भरमीजै।

१ नशा २निरादर, अपमान ३जानना ४छेती ५माफी ६इम्तहान

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (८६)

॥ दोहरा ॥

मुसकराई बाबे कहा, सुन हो मोती राम। स्वरन सुध तब होत है, सहे कुठाली घाम।। ऐसा कहि प्रसीद
भे, देख प्रेम किरपाल। नाम दान देकर तिसे, छिन मो करा निहाल ॥

असथान दी सेवा

बिजै दंडक छंद

बाबा सिंघ वसावा जी पास बैठे, बाबे ठाकुर जी हुकम सुणाइआ जे, सेवा करो असथान की नाल प्रीती,
रात घरी नां कवी हुण जाइआ जे, उत्तर विच वसावा सिंघ हथ्य जोड़े, खिमा करो मैं वाळू उलटाइआ जे,
मेरा चाहुंबा चित्त अज़ाब रैहणा, अगो जिस तरहं आप फरमाइआ जे

सेवा करन के योग नां वास है जी, डिट्टा चित्त के विच विचार बाबा, जिऊं का सुघ असथान इह आप
जी बा, तिऊं कर सुध होवे सेवादार बाबा, मेरे विच अनेक कुरीतीओं ने, जानो आप की करां इज़हार
बाबा, चित्त आपणे की हालत बस्स वित्ती, करो हुकम हुण जिवें दरकार बाबा

श्री बाबाजी दा हुकम

बाबे आखिआ असी हां खुशी तैथों, जिवें चित्त चाहे तिवें रहो भाई जिधर चित्त चाहे विचरो आप खुले,
आखे आपने चित्त दे बहो भाई चित्त चाहे तां धार के मौन रैहना, चाहे चित्त मूहों कुछ कहो भाई रेण
आपनी मौज विच नाम जपनां, लाहा आंवने दा जग लहो भाई

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (८७)

॥ दोहरा ॥

सुन बाबे दी बेनती, बाबे कहिआ सुनाइ। रैहणा तुसां अजाद ही, ऐथे गुरु निबाइ।।

॥ दोहरा ॥

कहि कर ऐसे वाक को, मौन धरी सुख भौन। राम पिआरा बोल कर, सेवा बखशी तौन ॥

पाधड़ी छंद

जां दिन ते सेवा महि लागे। राम पयारा निज घर तयागे। नारी को नहीं करा पयारी। बनगे जबते आप पुजारी ॥१॥

पावन थान जान मन पावन। सेवा करें रिदैं हरखावन। नारी भोजन लेकर आवे। भोजन करहिं पुना घर जावे ॥ २॥

पास रहिन नहि देवहि घरी। ऐसी कठन प्रतगया करी। ब्रहम चरज को ऐसे धारा। नारी तयाग न करी अवारा ॥ ३॥

रोड़ा दी कर सेज बिछाई। करै तपसया खेद बिहाई। थान तपसया अब लग खरो। निज नैनन कवि देखन करो ॥४॥

॥ दोहरा ॥

अति पवितरता के सहित, जीवन गए बिताई। अब उन के पड़ पोतरे, सुनो कथा मन लाई।

धरमी राज होवेगा

बैठे बाबाजी मौज दे नाल इक दिन, पास बैठिआं संगता आन भाई बाबा सिंध वसावा ते राम पयारा, बाबा सिंध जमीत जी जान भाई इतियाद बाबे बैठे सभ ताबे, हुकम बाबाजी मुखों सुनान भाई आतम रंग नूं माण लै घड़ी कोई, नहीं समां देहो हथी जान भाई

१ बाबा वसावा सिंध २बाबा ठाकुर जी ३ सुतंतर ४सुख दा घर, भाव श्री ठाकुरजी महाराज

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (८८)

सारे हुकम सुण के बैह गए मार आसन, अग्र नासका रख ध्यान भाई बेगमपुरे दे विच सभ झट पौहंचे, रहीं होश ना कुछ जहान भाई सुध रहीं नां तन ते बदन वाली, सवै सरूप विच लीन हो जान भाई डेढ़ पैहर इउं बैठ आनंद लीता, होए बाद ऐंदू सवाधान भाई सवाधान होके जदों सभ बैठे, महाराज इह बचन सुनान भाई बैठे विच समाध विकल्प फुरिआ, तुसां विचों है किसे नूं आन भाई जिसनूं होइ आ फुरना उठ आप दस्से, संगत विच नां करे शरमान भाई सुनके बचन वसावा सिंघ खड़ा होया, फुरना आपना करन बयान भाई

श्री बाबा वसावा सिंघ जी ने अपनां फुरना प्रगट करना

कथन करां में चित्त की कल्पना नूं, राजे ऐतु नां धरम कमान बाबा चोर छडुके साथ नूं बनह बैंके, लेके चट्टीओ आप इह खान बाबा डाकू चोर ते ठग्गीओ करन वाले, हिस्से उनहां के नाल ठेहरान बाबा लुच्चे बेके चट्टीओं औण पहिले, पिछों किन्से की नाहि है जान बाबा शराआम के विच चा कतल करवे, अदालत विच सज़ा ना पान बाबा फड़के बेगुनाह कंगाल कोई, थां ओक्सबी ते फांसी लान बाबा मौजा करन तुच्चे गुंडे राज अंबर, भले लोक सभ कुख उठान बाबा धरमी पीस के चक्कीओ जेहल अंबर, पापी हर तरां मौज उड़ान बाबा माया पाप की पापी इह करन कट्टी, पासे भले नां फेर लगान बाबा आए फकर नू वेन नां इक बुरकी, जाके कंजरां घरी लुटान बाबा उत्तो बगलिओं के वांग रंग चिट्टे, फड़ फड़ मछीओ के तांई खान बाबा

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (८९)

चोरां आके सन्नह की लावनी ऐ, पहिरेदार ही सन्नह लगान बाबा, माया खरच करदे कम्मां मंदिआं ते, साध संत नूं नहीं खुलान बाबा, माया आसरे पाप अनेक करदे, करके पाप नां फेर शरमान बाबा, माया आसरे खून हज़ार करदे, गैर नारीआं भोग भुगान बाबा, माया आसरे पीण शराब पापी, माया आसरे मास नूं खान बाबा, माया आसरे करन हंकार मूरख, माया आसरे रंक दुखान बाबा, माया आसरे सद् के वेसवा नूं, घरी आपने उन्हां नचान बाबा, माया आसरे फड़न बंदूक हथ्थी, जाके जीवां दा घात कमान बाबा, माया आसरे करन सतसंग नाही, माया आसरे जुलम करान बाबा, माया आसरे साधू नूं करन टिच्चकर, माया आसरे रब्ब भुलान बाबा, माया आसरे करन तयाग पापी, माता-पिता जो वांग भगवान बाबा, माया आसरे गुरु नूं बिदे नाहीं, करन इश्ट दा नहीं सनमान बाबा, माया आसरे भुल्ल दातार तांई, जाने आप तांई भगवान बाबा, माया आसरे धौण अकड़ा चले, करे नहीं मूरख पुन्न दान बाबा, माया आसरे बोल दा बचन कौड़े, मिट्टत रहीं ना विच जुबान बाबा, करे नहीं गरीब दी दाद' कोई, माया आसरे

सगों सतान बाबा, माया आसरे क्रितघन बनन पापी, कीता दिलों उपकार भुलान बाबा, जे कोई वंड्दा दुख उपकार करके, सगों ओक्सनूं दुख पहुंचान बाबा, जे कोई रूलदिआ नूं गले लांवदा ऐ, बुरे उसे दा बुरा तकान बाबा, जे कोई भुखिआ दे मुंहे अन्न पावे, रज्ज उसदा अन्न खुहान बाबा

१ मदद, सहाइता २तकलीफ देना ३ नाशुकरे

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (९०)

जे कोई दे निथाविआं* थाऊं अपना, घरों ऊसनूं कढ़ विखान बाबा, जे कोई नंगिआ दा नंग ढकदा ऐ, करना ऊस ताई नंगा चाहन बाबा, माया आसरे केहड़ा नां पाप करदा, माया समझ लै पाप दी खान बाबा, बिना पाप कीते माया आवंदी नां, गुरु ग्रंथ+ जी करन फरमान बाबा, आके पास इह पाप करावंदी ऐ, भुल्ल जांवदे गिआन ते ध्यान बाबा, भैण भैण कहिंदे वंदे दात पहिले, पिछों ऊसं नारि बनान बाबा, वेख किसे दी धीं या भैण चंगी, नाल ओस पिआर नूं पान बाबा, समा पा भरमाके आख बच्ची, कढ़ ऊस खिसका लें जान बाबा, नाल भैणा भणेवीआं पाप करदे, किऊं नां विच धरती गरक जान बाबा, कोई पा भगवे, कोई बन्न काली, जंटलमैन बन दस दे शान बाबा, शसतर धार के कहिन जो सूरमे हां, पूजा धान खा करन गुजरान बाबा, मथ्थे ला टिकके तेड़ बन धोती, कई दंभ विखा भरमान बाबा, धरमी आपने आपनूं कहिन वाले, वध चड़ अधरम कमान बाबा, प्रजा राज प्रभाव ते पाप करदी, कथन शासतर करन पुरान बाबा, राजा प्रजा दे पाप ने फुरे मैनुं, कट्टे ऐस ते करे वखान बाबा, रेण पा माया पापी ऐब करदे, राज मद करि अन्ने हो जान बाबा, करे मेहर मैनुं रब्ब राज देवे, दसां धरम जिउं राज कमाईदा ऐ, किवें धरम बध्धी माया आवदी ऐ, फेर उसनूं किवें वरताईदा ऐ, किवें अन्न दाणां आवे विच लंगर, किवें आइआ अभिआगत वसाईदा ऐ, किवें साधु ते संत दी सेव होवे, भोजन बैठके किवें छकाईदा ऐ

१ बहन २ बेटी

* जिंदेकोल रहन नूं जगह ना होवे + पाप बाझुह हौवे नाहीं मुईआ न जाई-आसा मः १

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (९१)

किवें नगन दे बदन नूं ढुक्क के ते, किवें दुखी नूं सुख विखाईदा ऐ, किवें माता ते पिता दी सेव होवे, किवे संता दा संग कराईदा ऐ, किवें जती रहिके ऐस जगत उत्ते, पर नारि नूं अंग ना लाईदा ऐ, किवें आपने गुरु दी सेव करके, किवें आपनां इस्ट रिझाईदा ऐ, किवें सुख मुसाफरां मिले दस्सां, किवें थां थां खूह लवाईदा ऐ, किवें मिले मुसाफरां अन्न भोजन, किवे रात अराम पहुंचाईदा ऐ, किवें दुध ते घियो दी नदी चल्ले, किवें यग ते होम कराईदा ऐ, किवें बैठके रिखी ने तप करदे, किवें उन्हां दा चित्त ठैहराईदा ऐ, किवें धरम सालां विच धरम वरते, किवें बैठ दीवान लगाईदा ऐ, किवे रागी ने बैठके राग करदे, किवें गुरु उपकार सुणाईदा ऐ, किवें माणदे बैठके रंग आतम, 'सोहं' जाप नूं किवे रटाईदा ऐ, किवें तैह कर मंजला गगन अंदर, पुज्ज राग मंझारी सुनाईदा ऐ, किवें नाल चशमां यार वेख लैणां, किवें सुन्न मसुन्न हो जाईदा ऐ, किवें सुरत ते शब्द नूं इक करके, दसम द्वार दे विच टिकाईदा ऐ, किस तरां दा जाल पसारके ते, मन पंछी नूं किवे फड़ाईदा ऐ, बेगमपुरे दी सैर नूं किवें करके, किवें मुकत तांई अंत जाईदा ऐ अंतर ऐब्स दे खूह है किवें अम्रत, किवें ऊस नूं कढ़ पिआईदा ऐ, किवें मसजदां विच निमाज होवे, किवें खड़े हो वाज़ सुनाईदा ऐ वज्जे इक तां दूसरी करी अगगे, हुकम ईसा दा किवें मनाईदा ऐ, किवें राम ते क्रिशन दी कथा हुंदी, किवें गुरु उपकार बताईदा ऐ, किवें नाम रसीए बैठ नाम जपदे, किवें बैठके धयान लगाईदा ऐ

"श्री हंस चमत्कार" हिन्दी अनुवाद (९२)

किवें पाप बदला मिलें पापीआं नूं, पुनवान नूं किवें सलाहीदा ऐ टिकचर साधु दे नाल हैं किवें हुंदी, अत्ते बनूं किवें भुलाईदा ऐ

सच्चे साधु दी रखिआ किवें हुंदी, किवें दंभी दा दंभ उड़ाईदा ऐ

किवें गला गरीब दा कट्ट के ते, किवें मास शराब नूं खाईदा ऐ

किवें किसे थी दगा कमां के ते, किवे किसे दा चित्त दुखाईदा ऐ

किवे किसे नूं भेण बणां पहिले, किवें ओव्स नं नारि बणाईदा ऐ

किवें पावन असथानां ते पाप करके, किवें दंड कोलों बच जाईदा ऐ

बणके सूरमां धार के शसतव्यं नूं, धान पूजा दे नूं किवें खाईदा ऐ

वेख किसेदी धी या भैण चंगी, किवें ऊसते निगाह पलटाईदा ऐ

धरमी आपने आप अखा के ते, फेर किवें अधरम कमाईदा ऐ

नाल भैणा भणेवीओं पाप करके, किवें जगत विच मूंह दिखाईदा ऐ

किवें चोर ते यार नूं सज़ा होवे, किवें धरमीआं सुख दिवाईदा ऐ

किवें नारां बिगानीआं भोगके ते, नाल सुख दे झट लंघाईदा ऐ

गैरआ करे चोरी, किवें हो हाकम चट्टी खाईदा ऐ

किवें पाप बदला मिलें पापीआं नूं, पुनवान नूं किवें सलाहीदा ऐ टिकचर साधु दे नाल हैं किवें हुंदी, अत्ते बनूं किवें भुलाईदा ऐ

सच्चे साधु दी रखिआ किवें हुंदी, किवें दंभी दा दंभ उड़ाईदा ऐ

किवें गला गरीब दा कट्ट के ते, किवें मास शराब नूं खाईदा ऐ

किवें किसे थी दगा कमां के ते, किवे किसे दा चित्त दुखाईदा ऐ

किवे किसे नूं भेण बणां पहिले, किवें ओव्स नं नारि बणाईदा ऐ

किवें पावन असथानां ते पाप करके, किवें दंड कोलों बच जाईदा ऐ

बणके सूरमां धार के शसतव्यं नूं, धान पूजा दे नूं किवें खाईदा

ऐ

वेख किसेदी धी या भैण चंगी, किवें ऊसते निगाह पलटाईदा ऐ

धरमी आपने आप अखा के ते, फेर किवें अधरम कमाईदा ऐ

नाल भैणा भणेवीओं पाप करके, किवें जगत विच मूंह दिखाईदा ऐ

किवें चोर ते यार नूं सज़ा होवे, किवें धरमीआं सुख दिवाईदा ऐ

किवें नारां बिगानीआं भोगके ते, नाल सुख दे झट लंघाईदा ऐ

गैरआ करे चोरी, किवें हो हाकम चट्टी खाईदा ऐ